अक्टूबर जंक्शन

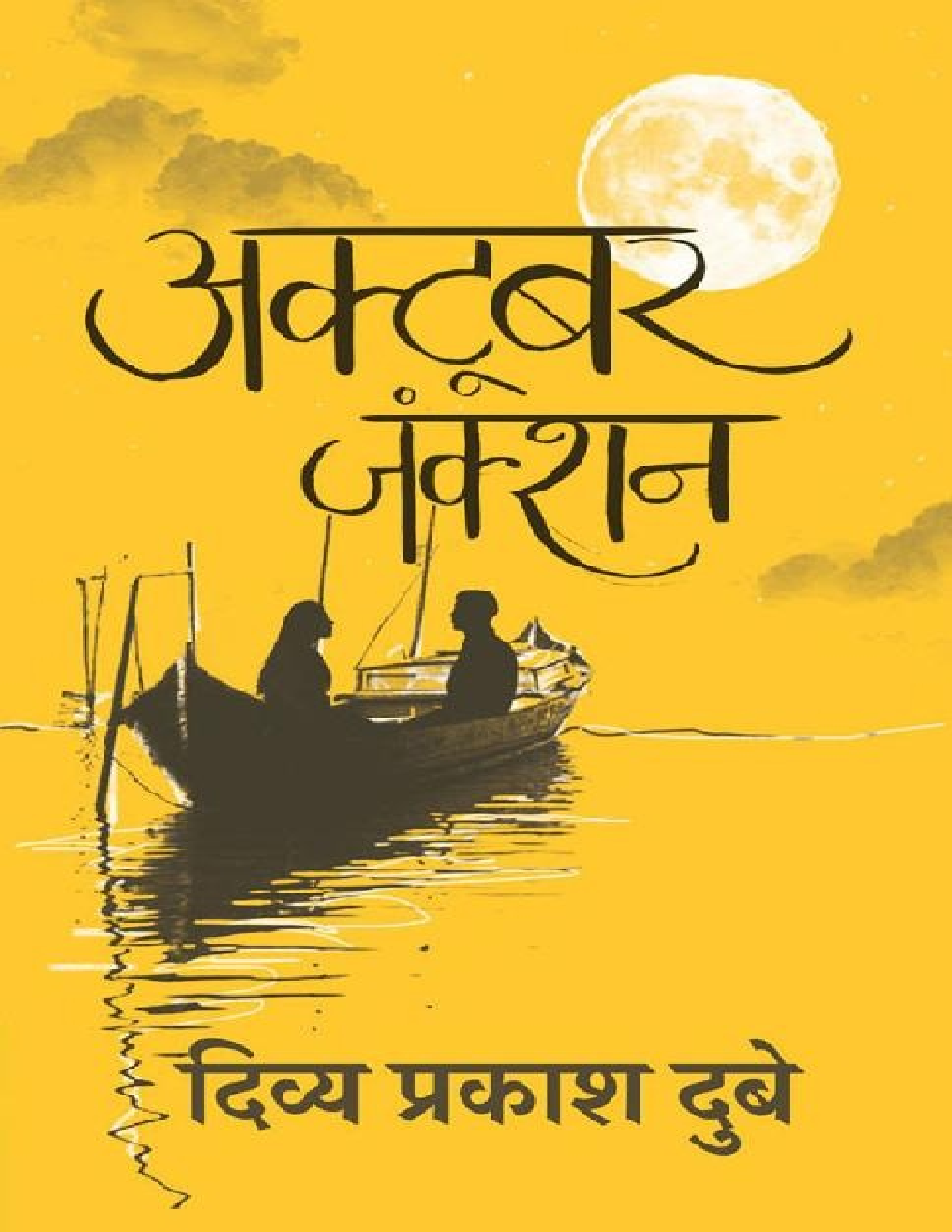

दिव्य प्रकाश दुबे

VISIT…

अक्टूबर जंक्शन

(उपन्यास)

अक्टूबर जंक्शन

दिव्य प्रकाश दुबे

ISBN : 978-93-87464-40-7

प्रकाशक :
हिन्दु-युग्म
201 बी, पॉकेट ए, मयूर विहार फ़ेस-2, दिल्ली-110091
मो.- 9873734046, 9968755908

आवरण डिजाइन : गरिमा शुक्ला
लेखक की तस्वीर : दिव्यांशु

पहला संस्करण : जनवरी 2019

© दिव्य प्रकाश दुबे

October Junction
A novel by Divya Prakash Dubey

Published By
Hind Yugm
201 B, Pocket A, Mayur Vihar Phase 2, Delhi-110091
Mob : 9873734046, 9968755908
Email : sampadak@hindyugm.com
Website : www.hindyugm.com

First Edition : Jan 2019

व्योम के लिए

मुझे उम्मीद है कि जब तुम बड़े
होकर किताब पर अपना नाम पढ़ोगे
तो तुम्हें उतनी ही खुशी होगी जितनी
खुशी मुझे तुम्हारा नाम लिखते हुए

हुई।

हमारी दो जिंदगियाँ होती हैं
एक जो हम हर दिन जीते हैं
दूसरी जो हम हर दिन जीना चाहते हैं

उस दूसरी जिंदगी के नाम।

प्रस्तावना-1

हमारे पास हर कहानी के दो वर्जन होते हैं। एक, दूसरे को सुनाने के लिए और दूसरा, अपने-आपको समझाने के लिए। जिस दिन हमारी कहानी के दोनों वर्जन एक हो जाते हैं उस दिन लेखक अपनी किताब के पहले पन्ने पर लिख देता है, "इस कहानी के सभी पात्र काल्पनिक हैं। इनका किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति से लेना-देना नहीं है।" यह एक अदना-सा झूठ पूरी कहानी को सच्चा बना देता है। अगर आप इस बात को ध्यान में रखकर इस कहानी में उतरेंगे तो आपके लिए आसानी होगी।

सारी दुनिया दिन-रात इस इंतजाम में है कि लोगों को कम-से-कम अपने अंदर झाँकने की फुर्सत मिले। इस दौर में किताब पढ़ना अपने आप में बड़ा काम है। किताब का काम वही है जो पानी का एक छोटे से पौधे के लिए होता है। खुशबू और खूबसूरती पानी में नहीं होती लेकिन हर पौधे को पानी में अपनी खुशबू ढूँढ़नी पड़ती है।

इस किताब को न लिखने की इतनी वजहें इकट्ठा हो गई थीं कि इस किताब को लिखना पड़ा। हर बार जब किताब शुरू करता हूँ तो ऐसा लगता है कि किताब पूरी ही नहीं हो पाएगी। कभी मैं खुद से नाराज हो जाता हूँ तो कभी किताब के किरदार नाराज हो जाते हैं। महीनों कोई बात ही नहीं होती फिर अचानक एक दिन सारे गिले-शिकवे भूलकर हम एक हो जाते हैं। जैसे कभी कुछ हुआ ही न हो।

वैसे तो मैं इस कहानी और आपके बीच नहीं आना चाहता था लेकिन कुछ कहानियाँ ऐसी होती हैं कि जिनका सिरा सही से पकड़ने के लिए लेखक को बीच में आना ही पड़ता है। कहानी में घुसने से पहले बस आप कुछ बातें जान लें तो बेहतर होगा। अक्टूबर जंक्शन का ख्याल मेरे पास मुसाफिर कैफे लिखने से पहले से था लेकिन यह कहानी कुछ साल नाराज रही।

मैं कुछ और कहानियाँ ढूँढ़ता रहा, कुछ-कुछ लिखता रहा और बहुत कुछ मिटाता रहा। अक्टूबर जंक्शन का ख्याल बार-बार आता लेकिन हर बार बात अधूरी छूट जाती। मुझे नहीं मालूम इतना साफ-साफ लेखक को किताब के पहले पन्ने पर लिखना भी चाहिए या नहीं लेकिन कुछ बातें लिख और बोल देना बोझ उतार देने जैसा ही होता है।

मैं बहुत दिनों से ऐसी कहानी ढूँढ़ रहा था। ऐसी कहानी से मेरा क्या मतलब है मुझे खुद भी सही से नहीं पता। कहानियाँ लिखना ऐसे ही कुछ-न-कुछ ढूँढ़ते रहना है। जहाँ आपको बस एक धुँधला-सा विश्वास होता है कि ढूँढ़ने पर शायद कुछ मिल जाए।

आखिर में मुझे बस इतना समझ आया कि कुछ कहानियों को पढ़ने और लिखने का बस एक तरीका होता है कि हम उन कहानियों को जी लें। आप इस कहानी को जी पाएँ तो ठीक, नहीं तो इसको एक बुरा सपना मानकर भूल जाइएगा। समय एक दिन धीरे से अच्छी और बुरी दोनों कहानियों को मिटा देता है। बचते हैं तो कुछ लोग जो सुनी हुई कहानी को अपने हिसाब से बदलकर कहानियाँ आगे बढ़ाते रहते हैं।

हर बार किताब पढ़ने के बाद लोग मुझसे पूछते हैं कि क्या वो सच्ची कहानी थी? मैं हमेशा जवाब घुमा-फिराकर देता हूँ या टाल जाता हूँ। बस एक चीज बता सकता हूँ कि इस कहानी के किरदार सच और सपने के बीच की छोटी-सी खाली जगह में मिले थे।

बंद मुट्ठी से खुली मुट्ठी भर ही हम जिंदगी को छू पाते हैं। बस इतना ही लेखक उस कहानी को छू पाता है जिसको वह अपने मन से कागज पर उतारने के लिए सालों बेचैन रहता है।

मुझे उम्मीद है आप अक्टूबर जंक्शन पढ़ते हुए उन्हीं रास्तों से, उन्हीं सच्चाइयों से, उन्हीं गलतियों से वैसे ही गुजरेंगे जिनसे इस कहानी के किरदार गुजरे हैं।

दिव्य प्रकाश दुबे, मुम्बई

10 अक्टूबर 2020, प्रेस कॉन्फ्रेंस, दिल्ली

यूँ तो हिंदुस्तान में किताब का लॉन्च होना कोई इतनी बड़ी बात नहीं है लेकिन आने वाली किताब चित्रा पाठक की है, इसलिए दिल्ली में अच्छी-खासी सरगर्मी है। चित्रा की उम्र है करीब 37-38 साल। उसकी पिछली तीन किताबें कुल-मिलाकर 50 लाख से ऊपर बिकी हैं। जहाँ एक तरफ ऐसा लगता था कि किताब बेचने के मामले में चेतन भगत और अमीश त्रिपाठी को कोई पीछे नहीं छोड़ पाएगा, वहीं चित्रा उनको लगातार टक्कर देने लगी है। हिंदुस्तान का कोई ऐसा लिटरेचर फेस्ट कोई ऐसा बड़ा कॉलेज नहीं है जहाँ चित्रा को नहीं बुलाया जाता। चित्रा को क्या पसंद है क्या नहीं, यह पूरी दुनिया को पता है। शहर की कोई भी पेज-3 पार्टी बिना चित्रा के पूरी नहीं होती। हर संडे उसका आर्टिकल पेपर में आता है। वह तो आर्टिकल लिखकर भूल जाती है लेकिन उसके आर्टिकल पर सोशल मीडिया में तब तक डिस्कशन होता रहता है जब तक उसका अगला आर्टिकल नहीं आ जाता।

चित्रा हर 10 अक्टूबर को कुछ-न-कुछ बड़ा अनाउन्स करती है। चित्रा की किताब आए एक साल से ऊपर हो गया था। कुछ महीनों से उसने आर्टिकल लिखना भी बंद कर दिया था।

जिस दौरान चित्रा किताबों की दुनिया में अपनी जगह बना रही थी उसी दौरान एक और लेखिका सुरभि पराशर का नाम उभरकर आया। सुरभि पराशर हिंदुस्तान की किताबों की दुनिया का ऐसा नाम है जिसको हर कोई जानता है। सुरभि की पहली किताब तीन पार्ट की एक सीरीज है। उस किताब के दो पार्ट आ चुके हैं और तीसरे पार्ट का सबको इंतजार है। सुरभि का स्टाइल आजकल के सभी लेखकों से बिलकुल अलग है। सुरभि बच्चों के लिए किताब लिखती है जिसको बच्चे से लेकर बूढ़े तक सब पढ़ते हैं। मीडिया में यह भी माना जाता है कि सुरभि ने हिंदुस्तान का अपना हैरी पॉटर क्रिएट कर दिया है। किताब के दो पार्ट आने के बाद से बच्चों से लेकर बूढ़े तक तीसरी किताब का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। सुरभि पराशर और चित्रा पाठक की हर बात एक-दूसरे से अलग है। लिखने से लेकर लाइफ स्टाइल तक। कमाल की बात यह है कि सुरभि कहाँ रहती है, सुरभि की उम्र क्या है, उसने क्या पढ़ाई की है, वह रहने वाली कहाँ की है, ये किसी को भी नहीं पता। सुरभि की कोई फोटो उसकी किताब के पीछे नहीं आती। न ही वह कोई इंटरव्यू देती है, न ही किसी इवेंट में बोलने के लिए जाती है। जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल में कई बार बुलाए जाने के बाद भी सुरभि ने जाने के लिए कभी हामी नहीं भरी। मीडिया में अक्सर ही खबर चलती रहती है कि कोई बड़ा राइटर सुरभि पराशर के नाम से लिखता है।

सुरभि की पहली ही सीरीज की तीसरी किताब का इंतजार उसके लाखों फैन कर रहे हैं। सुरभि के पब्लिशर भी सुरभि के बारे में कोई जानकारी नहीं देते। जहाँ एक तरफ चित्रा को लिटरेचर के क्रिटिक कोई भाव नहीं देते वहीं सुरभि पराशर क्रिटिक्स की फेवरेट राइटर है। चूँकि सुरभि की किताबें भी लाखों में बिकती हैं इसलिए चित्रा पाठक को सोशल मीडिया पर ट्रोल

करने वाले हमेशा यही बोलते हैं कि अच्छा लिखकर भी लाखों लोगों तक पहुँचा जा सकता है। वैसे चाहे चित्रा पाठक, सुरभि पराशर से न चिढ़ती हो लेकिन उनके फैन आपस में हिंदुस्तान-पाकिस्तान का क्रिकेट मैच खेलते रहते हैं।

प्रेस कॉन्फ्रेंस में थोड़ी देरी हो रही थी। लोगों में सरगर्मी बढ़ती जा रही थी। चित्रा के कुछ फैन इस उम्मीद में वहाँ पहुँचे हैं कि वे अपनी किताब पर ऑटोग्राफ ले सकें।

चित्रा अपनी टीम के साथ हॉल में पहुँची। चित्रा की हर बात किसी बड़ी हीरोइन वाली थी। उसने गॉगल पहन रखें थी। शिफॉन की साड़ी उस पर बहुत सूट करती है। उसकी स्टाइल में कई औरतें साड़ी पहनने की कोशिश करती हैं। चित्रा के बाल छोटे हैं। चित्रा से जब कोई रिपोर्टर सवाल करता है तो वह ऐसे देखती है जैसे आदमी की आत्मा तक का एक्सरे कर लेगी।

एक कोट-पैंट-टाई पहना हुआ 40 साल का आदमी आगे आकर लोगों को चुप करवाना शुरू करता है। अपने स्टाइल से यह आदमी चित्रा का मैनेजर लगता है।

“आप लोग प्लीज शांत हो जाइए।”

चित्रा की टेबल पर पानी की बोतल है, माइक है और एक कप में चाय रखी है। चित्रा पानी पीकर 10 सेकेंड का पॉज लेती है और पूरे कमरे में एक कोने से दूसरे कोने तक देखकर बोलना शुरू करती है।

“इतने शॉर्ट नोटिस पर आप सभी लोगों का आने के लिए शुक्रिया।”

चित्रा ने बोलना शुरू ही किया था कि इतने में फिर से शोर-शराबा बढ़ना शुरू हो जाता है। हर किसी के पास चित्रा के लिए अलग सवाल है। अगली किताब किस बारे में है? वह अगली छुट्टी मनाने कहाँ जाने वाली हैं? उसकी किताब पर कौन फिल्म बना रहा है? वह आजकल किसको पढ़ रही हैं? चित्रा आजकल किसको डेट कर रही हैं?

इतने में पीछे से कुछ लड़के-लड़कियों का एक ग्रुप एक साथ चिल्लाता है,

“Chitra, we love you।”

चित्रा का मैनेजर बीच में आकर सबको चुप रहने के लिए कहता है। चित्रा माइक को अपने पास खींचकर कहती है, “मुझे आप लोगों से एक कन्फेशन करना है।”

चित्रा कभी कन्फेशन जैसा कमजोर शब्द बोलेगी इस बात का यकीन कर पाना मुश्किल है। चित्रा ने जो भी किया है डंके की चोट पर किया है। हॉल में बैठे लोगों की आँखों में सवाल-ही-सवाल हैं जिनके जवाब केवल चित्रा के पास हैं।

चित्रा के सामने बैठे एक बुजुर्ग की आँखों में देखती है। ये बुजुर्ग चित्रा के साथ ही हॉल में आए थे। वे बुजुर्ग चित्रा की ओर देखकर हामी में अपना सिर हिलाकर जैसे चित्रा को हिम्मत देते हैं।

चित्रा चाय का एक सिप लेकर बोलना शुरू करती है— “मैं हर 10 अक्टूबर को अपनी नयी किताब के बारे में अनाउन्स करती हूँ। आज भी मैं एक नयी किताब के बारे में आप सबको बताने वाली हूँ लेकिन... वो किताब मेरी नहीं बल्कि सुरभि पराशर की है। एक सच जो आज

पहली बार दुनिया के सामने आ रहा है वो ये कि सुरभि पराशर और चित्रा पाठक एक ही हैं।"

चित्रा के इतना बोलते ही पूरे हॉल में सन्नाटा पसर जाता है। उन बुजुर्ग ने चैन की साँस ली और अपनी पीठ कुर्सी पर पीछे टिका दी। चित्रा आगे बोलना शुरू करती है।

"लेकिन सुरभि पराशर और चित्रा पाठक केवल किताब के पार्ट-3 में एक हैं। मैंने सुरभि की किताब के पहले दो पार्ट नहीं लिखे हैं। सुरभि को कोई नहीं जानता, मैं भी नहीं जानती थी। जब मैंने यह सच बता ही दिया है तो आपलोग ये भी जान लीजिए कि मैंने केवल किताब के पार्ट-3 का आधा हिस्सा लिखा है। मैं यह भी बता देना चाहती हूँ कि सुरभि पराशर नाम का कोई व्यक्ति नहीं है बल्कि सुरभि पराशर के नाम से सुदीप यादव ने सारी किताबें लिखी हैं।"

कमरे में खुसुर-फुसुर शुरू हो जाती है, लेकिन चित्रा अपना बोलना जारी रखती है।

"सुदीप कौन है ये आप सब लोगों को पता है। आप थोड़ा-सा जोर डालेंगे तो आपको याद आएगा कि सुदीप यादव जिसने आज से दस साल पहले अपनी कंपनी बुक माइ ट्रिप डॉट कॉम से धूम मचा दी थी। सुदीप के ट्विटर पर 50 लाख फॉलोवर थे। सुदीप दुनिया के Wonder under 30 की लिस्ट यानी तीस साल से कम उम्र में जो सबसे ज्यादा प्रभावी लोग थे उस लिस्ट में अपनी जगह बना ली थी। अपनी कंपनी के अलावा वह दूसरों के बिजनेस में इन्वेस्ट भी करता था। सुदीप यादव के साथ एक मिनट लिफ्ट में जाने के लिए भी लोग बेचैन रहते थे। एक-दो बार उसने लिफ्ट में मिले हुए किसी लड़के के आइडिया में तुरंत इन्वेस्ट कर दिया था।

क्रिकेट में जो जगह सचिन की थी, वो स्टार्टअप की दुनिया में सुदीप यादव की थी। किसी भी कॉलेज का कोई लड़का अपना स्टार्टअप शुरू करने का सपना देखता था तो वह सुदीप यादव को अपना आइडल मानता था। देश की बड़ी-से-बड़ी मॉडल और हीरोइन सुदीप यादव के साथ डेट करने के लिए तैयार थी। यह वही सुदीप यादव है जो सुरभि पराशर के नाम से किताब लिख रहा था।"

चित्रा ने इतना कहकर पानी पिया।

"सुदीप ने किताब का थर्ड पार्ट खुद क्यों नहीं पूरा किया?"

"आप सुदीप को कैसे जानती हैं?"

"ये किताब के लिए पब्लिसिटी स्टंट तो नहीं है?"

"आप सुरभि पराशर से चिढ़ती हैं?"

"सुदीप यादव आज यहाँ क्यों नहीं आया?"

"सुदीप यादव कहाँ है?"

"क्या सुदीप यादव किसी सुरभि पराशर नाम की लड़की से प्यार करता था?"

"सुदीप और आपके बीच अफेयर है?"

चित्रा के इतना बोलने के बाद कमरे में सवाल कम नहीं हुए थे बल्कि सवाल और बढ़ गए थे। सब सवालों के जवाब केवल चित्रा के पास थे। आज जो चित्रा लोगों के सामने थी वह अभी तक की अपनी पब्लिक अपीयरेंस से बिलकुल अलग थी। आज बड़े से कॉन्फ्रेंस हॉल में बैठी

चित्रा और दस साल पहले की चित्रा में कोई फर्क नहीं था। वह चित्रा जो आज से ठीक दस साल पहले बनारस गई थी।

दस साल पहले

अक्टूबर 2010, बनारस

बनारस शहर सच और सपने के बीच में कहीं बसता है। बनारस में कोई समझ नहीं सकता कि सच क्या है और सपना क्या। कोई यहाँ सच ढूँढने आता है तो कोई सपना भूलने, लेकिन बनारस एक ढीठ शहर है। यह लोगों के सच को सपने में बदल देता है और सपने को सच की तरह दिखाने लगता है। बनारस के चौराहों पर जिंदगी के मायने गोल-गोल घूमते रहते हैं कोई पकड़ लेता है तो कोई खाली हाथ लौट जाता है। शहर थोड़ा मूडी है, हर किसी पर खुलता नहीं और हर किसी से खुलता नहीं। बात थोड़ी गहरी है कोई समझ जाए तो ठीक नहीं तो जय भोले नाथ!

किसी भी कहानी में कोई लड़का और कोई लड़की कहीं-न-कहीं तो मिलते हैं। दुनिया में जहाँ-जहाँ कोई लड़का-लड़की मिल सकते हैं वो सब कुछ लिखा जा चुका है। कॉलेज से लेकर ऑफिस तक, ट्रेन से लेकर हवाई जहाज तक।

चूँकि चित्रा और सुदीप को कहीं-न-कहीं तो मिलना ही था, इसलिए दोनों अस्सी घाट पर मिलते हैं। वे दोनों कभी मिले नहीं होते अगर उस समय पिज्जेरिया कैफे में बहुत ज्यादा भीड़ नहीं होती। भीड़ इतनी ज्यादा थी कि पिज्जेरिया के वेटर ने इन दोनों को एक साथ बैठा दिया। हालांकि, दोनों ही मी-टाइम चाहते थे। दोनों ही अकेले बैठना चाहते थे लेकिन इतनी भीड़ में अलग पूरा टेबल मिलना मुश्किल था। तो दोनों को साथ में बैठना पड़ा। दोनों खड़े नहीं रहना चाहते थे। यह कहानी शुरू ही न हुई होती अगर उस वेटर ने अपना बिजनेस बढ़ाने के चक्कर में इन दोनों को साथ नहीं बैठा दिया होता। इस कहानी में वेटर का काम इतना ही था। अब वह इनका ऑर्डर लेने का बाद कभी वापिस नहीं आएगा। आपने कभी सोचा है, रोज तमाम कहानियाँ ऐसे ही वे लोग शुरू करते हैं जिनको कभी पता ही नहीं चलता कि वे कहानी का कितना अहम हिस्सा हैं। सुदीप की उम्र है करीब 25 साल। उसने कैजुअल काली टी-शर्ट और नीली जींस पहनी हुई है। चित्रा की उम्र है 26-27 साल। चित्रा ने शॉर्ट कुर्ता और नीली जींस पहनी हुई है। ये दोनों कौन हैं क्या करते हैं धीरे-धीरे आपको पता चल जाएगा। अभी जानने लायक बस इतना है कि दोनों एक साथ कैफे की टेबल पर हैं। दोनों ने एक एक पिज्जा और नींबू शहद पानी ऑर्डर किया है।

“लोग बनारस क्यों आते हैं?”

“क्यों का पता नहीं लेकिन ये पता है कि कब आते हैं।”

“कब आते हैं?”

“जब आगे कोई रास्ता नहीं दिखता।”

ये सवाल-जवाब सुदीप और चित्रा भी एक-दूसरे से कर सकते थे। लेकिन ये सवाल सुदीप और चित्रा के ठीक पीछे वाली टेबल पर बैठे किन्हीं दो लोगों ने किया। उन दोनों की आवाज इन दोनों को सुनाई पड़ी। इन दो लोगों ने अगर उस दिन यह सवाल न पूछा होता तो शायद यह

कहानी शुरू ही नहीं हुई होती।

पीछे वाली टेबल पर बैठे उन दो अजनबियों की बात सुनकर चित्रा ने कहा, “हाऊ ट्रू!”

“कहाँ अटक गई हैं आप! सॉरी, शायद मुझे नहीं पूछना चाहिए।” सुदीप ने कहा।

“It’s okay, मैं अपनी किताब में एक जगह अटक गई हूँ। कहानी आगे ही नहीं बढ़ रही। यहाँ बीएचयू में एक कविता का इवेंट था। वहाँ से इन्वीटेशन आया तो सोचा शायद बनारस में मोक्ष तो सबको मिलता है शायद मुझे कहानी मिल जाए। तुम बनारस क्यों आए हो?” चित्रा ने पीछे की टेबल पर बैठे लोगों की बात सुनने की नाकाम कोशिश करते हुए पूछा।

“मेरे एक दोस्त की शादी थी और बनारस के बारे में बहुत कुछ सुन रखा था। कई सालों से यहाँ आने का मन था।”

“कैसा लगा बनारस?”

“जैसा सुना था वैसा तो नहीं लगा अभी तक।”

“कितने दिन से आए हो?”

“एक दिन हो गया। कल ही फ्रेंड की शादी थी।”

“बनारस चढ़ने में टाइम लगता है।” चित्रा ने कहा।

“सॉरी, मैं समझा नहीं।”

“दो दिन के लिए आओगे तो बनारस कभी अच्छा नहीं लगेगा। बनारस आओ तो फुर्सत से आओ। बनारस आते बहुत लोग हैं लेकिन पहुँच कम लोग पाते हैं।”

“तुम्हारी ये आखिरी लाइन मेरे ऊपर से गुजर गई, लेकिन एक बात बताओ ज्यादा दिन रुकने से बनारस बदल थोड़े जाएगा?”

“वेल, मैं बस इतना बोलूँगी, दो दिन से ज्यादा रुककर देखो तब ये सवाल नहीं पूछोगे।”

इतने में पिज्जा आ गया। दोनों ने अपना-अपना पिज्जा खाना शुरू किया। सुदीप पिज्जा खाते हुए घाट के पास बैठे कॉलेज के बच्चों को देखने लगा। वो बच्चे शायद बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी के आर्ट्स कॉलेज के थे। वे घाट पर बैठकर घाट का स्केच बना रहे थे। कुछ लोगों को पता भी नहीं था कि उनका एक हिस्सा किसी अनजान लड़के के स्केच में कैद हो गया है। हमारे कितने हिस्से दुनिया में कहाँ-कहाँ कैद हैं ये हम कभी नहीं जान पाएँगे।

दोनों आधा पिज्जा खाने तक कुछ नहीं बोले। चूँकि, भीड़ बहुत थी तो वेटर ने सुदीप और चित्रा की टेबल पर एक-दो लोगों को और फिट करने की कोशिश की। चित्रा ने वेटर से कहा कि एक-दो लोग और आ रहे हैं। वेटर को भी पता था चित्रा झूठ बोल रही है। चित्रा आराम से बैठना चाहती थी।

“देखो, पिज्जा आधा बचा है। अगर मैंने जल्दी खा लिया तो वेटर जाने के लिए बोलेगा। मुझे थोड़ी देर यहाँ बैठने का मन है। तब तक टाइम पास के लिए तुम अपने बारे में कुछ क्यों नहीं बताते?”

सुदीप चित्रा की बात सुनकर हँसा।

“कमाल है! मुझसे कोई ऐसे बात नहीं करता। वैसे टाइम पास के लिए तुम अपने बारे में कुछ क्यों नहीं बताती?”

“पूछो।”

“शहर?”

“शहर मतलब, जहाँ की मैं हूँ या जहाँ मैं रहती हूँ। मोस्टली लोगों के दो शहर होते हैं। एक जहाँ के हम होते हैं और एक जहाँ हम रहते हैं।”

“जहाँ तुम रहती हो।”

“दिल्ली। और तुम्हारा?”

“मुंबई। और तुम रहने वाली कहाँ की हो?”

“भोपाल। और तुम”

“लखनऊ।”

“वैसे ये शहर वाले सवालों से तो तुम बोरिंग-सी नौकरी करने वाले एमबीए टाइप लग रहे हो?”

“तुम जज कर रही हो मुझे?”

“हाँ, कर रही हूँ। अब कुछ अच्छा बताओ चाहे झूठ बताओ, मजा आना चाहिए बस।”

“मैंने 12^{th} के बाद पढ़ाई नहीं की।”

“What! are you serious?”

“100% सीरियस।”

“ये हुई न बात, फिर करते क्या हो?”

“मैं इतना कुछ खास नहीं करता। मैंने करने के लिए लोग रखे हुए हैं।”

“ढील क्या दी तुम तो फेंकने ही लगे। लेकिन चलो कम-से-कम ये बोरिंग तो नहीं है। अब तुम पूछो।”

“तुम किताब क्यों लिखना चाहती हो?”

“फिर से बोरिंग सवाल, किसी को नहीं पता होता कि वो किताब क्यों लिखना चाहता है।”

“फिर भी कोई तो वजह होगी?”

“मुझे नहीं पता क्यों लिखना चाहती हूँ। शायद नेम-फेम के लिए। अब मेरी बारी।”

“पूछो।”

“नाम क्या है तुम्हारा?”

“अब तुम बोरिंग सवाल पूछने लगी।”

“एक बोरिंग सवाल तो पूछ ही सकती हूँ।”

“सुदीप यादव।”

“एक मिनट, एक मिनट। सुदीप यादव तो सुना हुआ नाम है।”

“तुम्हारी कंपनी का नाम क्या है?”

“फिर बोरिंग सवाल।”

“अरे बताओ।”

“बुक माइ ट्रिप।”

“तो तुम ‘द’ सुदीप यादव हो!”

“हाँ, सुदीप यादव हूँ। नाम के पहले द लग गया है मुझे नहीं पता था। खासकर जब कोई इतना अच्छा पिज्जा खा रहा हो तब तो मेरी बात बिलकुल भी नहीं करनी चाहिए।” सुदीप ने पिज्जा का एक पीस अपनी प्लेट में रखते हुए कहा।

“मैंने पेपर में पढ़ा है तुम्हारे बारे में। लेकिन ये स्टार्टअप वगैरह मुझे ज्यादा समझ नहीं आता।”

“मैं अखबार नहीं पढ़ता। इतना टाइम ही नहीं रहता।”

“तो तुम्हें पता कैसे चलता है कि आस-पास क्या चल रहा है?” चित्रा ने अपने पिज्जा का आखिरी पीस खाते हुए पूछा।

“मेरी असिस्टेंट मुझे सब अखबारों में से मेरे काम की खबरों की एक रिपोर्ट बनाकर भेज देती है।”

“तो जिस सुदीप यादव के पास बिलकुल भी टाइम नहीं है वो यहाँ बनारस में बैठकर आराम से पिज्जा खा रहा है और मैं उससे कोई फालतू-सी बोरिंग बात कर रही हूँ।”

“बताया न, मैं एक दोस्त की शादी में आया था और फिर मैंने तीन दिन का ब्रेक भी ले लिया।”

“ब्रेक किसलिए?”

“मेरे डॉक्टर ने दवा के साथ छुट्टी भी प्रेसक्राइब की थी। बनारस का प्लान बना तो सोचा यहाँ रुककर देखते हैं।”

“हुआ क्या है तुम्हें?”

“तुम ज्यादा ही पर्सनल नहीं हो रही! राइटर कब से जर्नलिस्ट टाइप सवाल पूछने लगे!” सुदीप ने अपना पिज्जा खत्म किया। वेटर अब तक इनकी टेबल पर घात लगाए बैठा था।

“सॉरी, लेकिन सुदीप यादव ऐसे ही किसी टेबल पर टकरा जाए तो थोड़ा एक्साइटमेंट तो बनता है।”

“मैं झूठ बोल रहा था। मैं सुदीप यादव नहीं हूँ। न ही मेरी कोई कंपनी है। मैंने एमबीए किया है और मैं नार्मल-सी नौकरी करता हूँ। सुदीप यादव के बारे में आर्टिकल पढ़ा था कभी, बस आज मौका देखकर फेंक दिया।”

चित्रा को कुछ समझ नहीं आया कि सामने बैठा हुआ लड़का सच बोल रहा है या झूठ।

“आरती शुरू होने को है। अच्छा लगा आपसे मिलकर मिस राइटर।”

“चित्रा पाठक नाम है मेरा और तुम्हारा?”

“क्या फर्क पड़ता है, मान लो सुदीप यादव ही है। अपनी किताब पूरी कर लेना तो भेजना

मुझे। कंपनी की वेबसाइट पर मेरा एड्रेस है।”

सुदीप आरती देखने चला गया और वहाँ वह उन बच्चों के स्केच का हिस्सा हो गया। चित्रा ने अपना बिल अदा किया। वह भी घाट पर आरती देखने बैठ गई। उसको सुदीप दिख रहा था लेकिन वह जिस तरफ बैठी थी वहाँ से सुदीप उसको नहीं देख सकता था। आरती के बीच-बीच में चित्रा सुदीप की तरफ देख रही थी। थोड़ी देर बाद सुदीप जहाँ बैठा था वहाँ से उठकर जा चुका था। चित्रा ने एक-दो मिनट तक उसको आस-पास देखने की कोशिश की लेकिन वह दिखा नहीं।

हर अधूरी मुलाकात एक पूरी मुलाकात की उम्मीद लेकर आती है। हर पूरी मुलाकात अगली पूरी मुलाकात से पहले की अधूरी मुलाकात बनकर रह जाती है। एक अधूरी उम्मीद ही तो है जिसके सहारे हम बूढ़े होकर भी बूढ़े नहीं होते। किसी बूढ़े आशिक ने मरने से ठीक पहले कहा था कि एक छटाँक भर उम्मीद पर साली इतनी बड़ी दुनिया टिक सकती है तो मरने के बाद दूसरी दुनिया में उसकी उम्मीद बाँधकर तो मर ही सकता हूँ। बूढों की उम्मीद भरी बातें सुननी चाहिए। अच्छी लगती हैं, बस उनपर यकीन नहीं करना चाहिए। लेकिन ये सब बातें एक उम्र में समझ कहाँ आती हैं! चित्रा को उम्मीद न होती तो उसने वह सब थोड़े किया होता जो उसने किया।

थोड़ी देर बाद, चित्रा वहाँ जाकर बैठ गई जहाँ सुदीप बैठा हुआ था। उसने अपने मोबाइल पर सुदीप यादव नाम गूगल किया। यह वही सुदीप यादव था जिसके बारे में चित्रा ने थोड़ा-बहुत सुन रखा था। चित्रा ने एक बार फिर चारों और नजर दौड़ाई लेकिन वह कहीं दिखा नहीं। आरती खत्म करके वह अपने कमरे में आ गई। उसने अपना लैपटॉप खोलकर एक पन्ना लिखा। थोड़ी देर में लैपटॉप बंद किया और अपनी छोटी-सी एक नोटबुक में कुछ लिखने लगी। थोड़ी देर में वह उससे भी बोर हो गई। उसने होटल के कमरे का टीवी ऑन किया। टीवी पर इश्किया फिल्म का गाना ‘दिल तो बच्चा है जी’ चल रहा था।

लाइट ऑफ करके वह नहाने चली गई। जब वह नहाकर लौटी तब टीवी पर ‘मुन्नी बदनाम हुई’ चल रहा था। उसने टीवी बंद किया और सोने की कोशिश करने लगी।

उधर सुदीप ने ताज होटल में एंट्री करते ही रिसेप्शन पर अपने लिए अपडेट पूछा। रिसेप्शन पर खड़ी लड़की ने उसको बड़ी इज्जत से बताया कि अभिजात सर का फोन आया था। उन्होंने कहा है कि ऑफिस में सब नार्मल है। आप आराम से अपनी छुट्टी पर रहें। कुछ भी अर्जेंट होगा तो वो आपके लिए मैसेज छोड़ देंगे।

सुदीप ने रिसेप्शन वाली लड़की को सुबह 5 बजे वेक अप कॉल देने के लिए कहा। उसने डिनर लिया और कमरे में आकर दवा खाकर टीवी ऑन कर दिया। उसने ध्यान नहीं दिया टीवी का वॉल्यूम बहुत तेज था और टीवी ऑन करते ही ‘मुन्नी बदनाम हुई’ गाना बजना शुरू हुआ। उसने तुरंत टीवी बंद कर दिया। सुदीप ने सोने कोशिश करते हुए आसमान में देखा। उधर चित्रा अभी तक सो चुकी थी।

10 अक्टूबर 2010
सुबह 6 बजे, अस्सी घाट बनारस

सुदीप अस्सी घाट पर पहुँचकर अभी भी यह समझने की कोशिश कर रहा था कि क्यों बनारस को लेकर लोग इतना एक्साइटेड रहते हैं। यह सुबह बनारस की आम सुबह जैसे ही थी। अक्टूबर की सुबह में हल्की-सी नमी थी।

सुदीप ने चाय लेकर जहाँ तक नजर जा सकती थी वहाँ तक देखने की कोशिश करने लगा। वह टहलते हुए अस्सी से दशाश्वमेध घाट की तरफ बढ़ रहा था। बीच-बीच में रुककर लोगों को बातें भी सुनने की कोशिश कर रहा था। पूरी दुनिया से आए हुए लोग बनारस में बड़ी उम्मीद से अपने जवाब का इंतजार कर रहे थे। मुंशी घाट पर कोई पंडा किसी को ऐसे समझा रहा था जैसे पूरी दुनिया का सच उसको पता हो। वह अपनी भोजपुरी छोड़कर खड़ी हिंदी और अँग्रेजी में समझाने की कोशिश कर रहा था।

“देखिए सर, बनारस भूकंप प्रूफ है। पूरी दुनिया में प्रलय आ जाएगी लेकिन बनारस का कोई कुछ नहीं उखाड़ पाएगा।”

पंडा जिनको समझा रहा था उनमें कुछ फिरंगी भी थे। उनको कुछ समझ नहीं आ रहा था। लेकिन बनारस की खूबी ही यही है कि यहाँ आकर आदमी वह समझ लेता है जो उसको समझना होता है।

पंडे ने अपनी बात जारी रखी, “देखिए सर, बनारस फील करने वाला सिटी है।”

पंडे ने एक फिरंगी का हाथ लेकर अपने सीने पर रखा और बोला, “Madam this is Banaras, Banaras is here, feel it.”

फिरंगी लड़की ने अपने साथ वाले लड़के की तरफ मुस्कुराकर देखा। लड़के ने भी पंडे के सीने पर हाथ रख दिया।

पंडे ने लाल रंग का टीका निकालकर फिरंगी लड़के और लड़की के माथे पर लगा दिया और बोला, “Lord Shiva is great, now give 100 Rupee note. Lacs rupees blessing in 100 rupees only.”

सुदीप थोड़ा-सा आगे बढ़ा। उसको शीशे के सामने दाढ़ी कटवाते, बाल बनवाते लोग दिखे। बाल काटते-काटते नाई बैठे हुए आदमी को भारत की पॉलिटिक्स के बारे में कुछ समझा रहा था।

“मनमोहना, सोनिया के पपेट हौ। जे 2019 चुनावे बदे कंग्रेसिया प्रियंका के उतारी तऽ बीजेपी वाले घंटा बजावत रह जइहैं। राजनाथ के बस के ना हौ।”*

सुदीप के लिए ये सब बातें नयी थीं। वह वहीं दशाश्वमेध घाट के पास आकर बैठ गया। उसके बैठते ही उसको कुछ पंडों ने पूजा-पाठ के लिए घेर लिया। लेकिन सुदीप पर उनकी बातों

का असर नहीं हुआ।

इतने में एक लड़का उसके पास आया और पूछा, “सर माल (गाँजा) चाहिए? एकदम ए-वन माल है सर। सर पास में कमरा भी है वहीं मार लीजिएगा। एक बार माल मारेंगे सीधे भोलेनाथ से कांटेक्ट हो जाएगा।”

सुदीप ने उस लड़के से माल खरीदा। वह लड़का सुदीप को एक कमरे में ले गया। उस कमरे में पहले से दो फिरंगी पड़े हुए थे। कमरे में हल्का-सा धुआँ था। सुदीप के कमरे में घुसते ही फिरंगी बोला बम-बम भोले। जवाब में लड़के ने जवाब दिया, “जय भोलेनाथ।” सुदीप के लिए सिगरेट खोलकर उस लड़के ने गाँजा भरा। सुदीप ने एक-दो कश लगाए।

उसकी फिरंगी से बात होने लगी। पता चला कि ये दोनों गर्लफ्रेंड-बॉयफ्रेंड एक साल के लिए घूमने निकले हैं। इंडिया में ये उनका तीसरा महीना था। वे यहाँ से सीधे ऋषिकेश जाने वाले हैं।

उन्होंने यह भी बताया कि एक साल घूमने के लिए उन्होंने 2 साल तक पैसे सेव किए। अभी वे एक्स्प्लोर कर रहे हैं। इसीलिए वे सस्ती से सस्ती जगह रुकते हैं। फ्लाइट के बजाय बस या ट्रेन लेते हैं।

सुदीप को अभी तक सिगरेट (माल) ने हिट नहीं किया था। थोड़ी देर में उस पर हल्का-हल्का नशा चढ़ा। वह चुप हो गया। अब उसको साथ में बैठे फिरंगी की बातें तो सुनाई पड़ रही थीं, लेकिन समझ कुछ नहीं आ रहा था। वह उस कमरे में करीब 3 घंटे पड़ा रहा।

जब वह कमरे से निकला तो पहले से बहुत हल्का महसूस कर रहा था। बहुत दिनों बाद ऐसा हुआ था कि उसे कुछ पता ही नहीं चला। वरना वह हमेशा कुछ-न-कुछ सोचता ही रहता था।

वो कमरा इतनी गलियों से होकर जाता था कि उसको पता नहीं था कि घाट के किस हिस्से में है। लोगों से पूछकर वह किसी तरह बाहर निकला। उसको बहुत जोर से भूख लग रही थी। गली से निकलते हुए कचौरी की एक दुकान दिखी, जहाँ बहुत भीड़ लगी हुई थी। वहाँ एक बाप अपने बेटे को लेकर आया हुआ था। यह देखकर सुदीप रुका, कचौरी खाई और गली से बहार निकलते ही उसने एक पीसीओ ढूँढ़कर अपने पापा का नंबर डायल किया। हालाँकि, पीसीओ ढूँढ़ने के लिए उसको अच्छा-खासा घूमना पड़ा क्योंकि सबके पास मोबाइल होने की वजह से पीसीओ का बिजनेस बहुत बचा नहीं था।

पापा से कुल बात हुई दो रुपये की लेकिन सुदीप के पास 100 रुपये का नोट था। पीसीओ पर आंटी बैठी थीं। वह 100 रुपये का नोट देखकर नाराज हो गईं। सुदीप ने उनसे कहा कि वह छुट्टे पैसे ला रहा है तब तक आप 100 रुपये रख लीजिए। सुदीप ने छुट्टे कराने की कोशिश नहीं की। वह अपने होटल वापस लौट गया। होटल पहुँचकर उसको बहुत अच्छी नींद आई। उसकी नींद करीब पाँच बजे खुली।

10 अक्टूबर 2010
शाम 6 बजे। अस्सी घाट बनारस

सुदीप जब घाट पर पहुँचा तो चित्रा वहाँ पहले से बैठी हुई थी। सुदीप चित्रा के पड़ोस में जाकर बैठ गया और बोला, “एक बोरिंग-सा सवाल पूछूँ?”

चित्रा उसको देखकर हल्का-सा चौंकी और बोली, “ओह, द सुदीप यादव जी! सवाल बाद में ये बताओ चाय पियोगे? अभी तक कुल्हड़ वाली चाय पी पाए कि नहीं?”

“हाँ, सुबह पी थी।”

“एक और पियो। तुम भी क्या याद करोगे!”

चित्रा ने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया। दुनिया में आने के बाद दोनों ने पहली बार एक-दूसरे को छुआ था। अगर ये लव स्टोरी होती तो इस पल को यहीं फ्रीज हो जाना चाहिए था लेकिन ऐसा कुछ हुआ नहीं।

“तो कैसा लग रहा है बनारस तुम्हें?” चित्रा ने पूछा।

“कल से अच्छा लगा आज।”

“मैं पिछले 6 दिन से यहाँ हूँ। रोज इसी टाइम अस्सी घाट पर बैठती हूँ। शुरू में 3 दिन तो बहुत बोर हुई लेकिन चौथे दिन से लगने लगा कि सब कुछ रुका हुआ है यहाँ। ऐसा लगने लगा कि कई साल से यहाँ हूँ। वैसे तुम्हारा बोरिंग सवाल क्या था?” चित्रा ने कुल्हड़ से चाय की चुस्की लेते हुए पूछा।

“भूल गया।”

“कोई बात नहीं कोई और बोरिंग चीज पूछ लो।” चित्रा ने एक चुस्की बाकायदा सुड़ककर पीते हुए कहा और दुबारा बोली, “कुल्हड़ वाली चाय हो तो मजा सुड़ककर पीने में ही आता है।”

“मेरा बोरिंग सवाल ये था कि कहानी मिली तुमको?”

“अभी तो नहीं।”

अब तक दोनों सुड़क-सुड़ककर चाय पी चुके थे। घाट पर आरती की तैयारी शुरू हो चुकी थी।

“घाट पर बैठें?” सुदीप ने पूछा।

“वैसे तुमको यह तो नहीं लग रहा कि मैं चेप हो रहा हूँ। अगर तुमको अकेले में अपनी कहानी ढूँढ़ना हो तो तुम प्लीज...”

“अगर ऐसा लगेगा तो बोल दूँगी, डोंट वरी। वैसे एक बात बताओ? जिस तरह के हाई प्रोफाइल टाइप हो तुम, तुमने टेबल पर बात शुरू क्यों की? तुम चाहते तो आराम से अवॉइड कर सकते थे?”

“तुम बुरा मान जाओगी।”

“नहीं मानूँगी, अब बताओ।”

“आपके हाथ में ये जो मुराकामी की किताब है न, इसलिए।”

“तुम्हें भी ये जापानी लेखक पसंद है?”

“मैंने अभी तक इनकी बस एक किताब पढ़ी है। What We Talk About When We Talk About Running. मुझे बड़ा सही लगा था पढ़कर कि कैसे 32 साल की उम्र में इसने अपना कैफे बंद करके फुल टाइम लिखने का फैसला लिया। मुझे यह चीज बहुत सही लगती है कि कुछ साल लगाकर आप कोई चीज बनाओ और एकाएक एक उसे हमेशा के लिए छोड़ दो। वो भी किसी ऐसे रास्ते के लिए जिसकी मंजिल का कोई ठिकाना न हो।”

“तुम अपनी कंपनी छोड़कर ऐसे ही फिर शुरू से शुरू कर सकते हो?”

“पता नहीं, लेकिन एक चीज है कि मैं 35 की उम्र तक रिटायर होना चाहता हूँ।”

कायदे से चित्रा और सुदीप को घाट पर बैठकर बहुत सारी बातें करनी चाहिए थी लेकिन ऐसा कुछ हुआ नहीं। वो सवाल जो हम एक-दूसरे से पूछ रहे होते हैं वो असल में हम अपने-आप से पूछ रहे होते हैं। दोनों ने कुछ सवाल एक-दूसरे से पूछे और दोनों ने एक-दूसरे के वही जवाब सुने जो वे सुनना चाहते थे। आरती देखते हुए दोनों शांत हो गए। करीब घंटा भर दोनों चुपचाप बैठे रहे। वे आरती वाली जगह से थोड़ा-सा आगे बैठे हुए थे। उनके पैर गंगा की गीली रेत को छू रहे थे। जितना हिस्सा गीला हो रहा था उतना हिस्सा नदी होता जा रहा था।

कोई साथ बैठा हो, चुपचाप हो और चुप्पी अखर न रही हो। ऐसी शामें कभी-कभार आती हैं। जब कोई जल्दबाजी न हो कि कुछ-न-कुछ बोलते रहना है। वर्ना तो अक्सर ही दिमाग पर प्रेशर होता है कि बातों को थमने न दें। वह बड़ी अच्छी बातें करता है या वह बड़ी अच्छी करती है के बजाय कभी कोई यह क्यों नहीं बोलता कि उसके साथ बैठकर चुप रहना अच्छा लगता है। किसी के साथ बैठकर चुप हो जाना और इस दुनिया को रत्ती भर भी बदलने की कोई भी कोशिश न करना ही तो प्यार है।

करीब 9 बजे जब सुदीप ने उठकर चलने का सोचा तो देखा कि चित्रा की आँखों में आँसू हैं। सुदीप को आँसू के बारे में पूछना ठीक नहीं लगा। चित्रा को पता चल चुका था कि सुदीप ने उसके आँसू देख लिए हैं।

“मैं चला जाता हूँ अगर तुमको रोना हो तो!”

“हाँ।”

“बहुत अच्छा लगा तुमसे मिलकर। ये मेरा कार्ड है मैं परसों तक यहाँ रुक रहा हूँ। कल तो सारनाथ जाऊँगा। अगर तब तक हो तो मिलते हैं। मेरा मोबाइल बंद रहेगा इसलिए मैंने अपने होटल का नंबर लिख दिया है।”

सुदीप वहाँ से चला गया। चित्रा ने उसको पलटकर नहीं देखा। सुदीप ने पलटकर चित्रा को देखा।

अगले दिन सुदीप अपने प्रोग्राम के हिसाब से सारनाथ घूमा। वह बनारस क्यों आया था

इसकी सही वजह यह थी कि वह आजकल अपने बिजनेस को आगे बढ़ाने को लेकर बहुत पैनिक करने लगा था। वो आजकल एंटी-डिप्रेशन दवाइयाँ ले रहा था। उसको एक डॉक्टर ने सलाह दी थी कुछ दिन वह अपने-आपको इस दुनिया से एकदम काट ले।

सुदीप के बारे में कुछ बताता चलूँ कि सुदीप ने किसी आईआईटी या आईआईएस से पढ़ाई नहीं की थी बल्कि वो 12वीं क्लास तक ही पढ़ा था। ग्रेजुएट भी नहीं था। सुदीप बचपन से मैथ्स में बहुत अच्छा था। ओलंपियाड में भी बहुत अच्छा परफॉर्म किया था। उसको मैथ्स के नंबर ऐसे समझ आते थे जैसे कि नंबर न होकर लोग हों, जिनकी शक्ल वह पहचानता हो।

सुदीप को अखबार में आने वाले कंपनी के शेयर प्राइस याद हो जाते थे। वह शेयर वाले पन्ने को घंटों पढ़ता था। धीरे-धीरे उसका शेयर में इतना इंटरेस्ट बढ़ गया कि दलाल स्ट्रीट नाम की मैगजीन लखनऊ में सबसे पहले खरीदकर पढ़ लेता था। जितना भी कुछ ऑनलाइन मिलता वह सब कुछ पढ़ जाता। वह शेयर मार्केट में बिना पैसा लगाए भी इसको गेम की तरह खेलता कि अगर उसने इतने पैसे लगाए होते तो कितने हो जाते।

उसने अपने दोस्तों से पैसे उधार लेकर मार्केट में पैसे लगाना शुरू किया और धीरे-धीरे इस खेल का बड़ा खिलाड़ी हो गया। 12th के बाद दो साल तक तो वह आईआईटी-जेईई की तैयारी का बहाना बनाकर शेयर में खेलता रहा। उसने यह सब इतना चुपचाप किया कि घर पर किसी को पता नहीं चला। उन दो सालों में एक ऐसा पॉइंट आया कि उसको लगा कि किसी भी कॉलेज जाकर वह अपना टाइम बर्बाद करेगा। वह आगे पढ़ाई करके अपना टाइम वेस्ट नहीं करना चाहता था। जैसे ही यह बात उसने अपने घर पर रखी, उसके पापा ने उससे बात करना बंद कर दिया। सुदीप को शेयर का इतना चस्का था कि उसको लगा कि लखनऊ में रहकर वह आगे नहीं बढ़ पाएगा। वह घरवालों को नाराज छोड़कर मुंबई पहुँच गया।

जिस समय उसके दोस्त कुछ लाख रुपये के सालाना पैकेज की नौकरी के इंटरव्यू दे रहे थे। उस समय तक सुदीप कई कंपनियों में शेयर इन्वेस्ट करके करोड़ों रुपये कमा चुका था। उसने जो कुछ भी बनाया था उसके लिए दिन-रात कोई मेहनत नहीं की थी।

एक समय के बाद वह शेयर मार्केट से पैसे कमाने से भी बोर हो गया था। वह अपना सारा ध्यान कहीं एक जगह लगाना चाहता था। उसने अपनी सेविंग के पैसे से बुक माइ ट्रिप नाम की कंपनी शुरू कर दी।

साल 2008 में जब दुनिया भर में कई कंपनियाँ बंद हुईं, उसी दौरान शेयर मार्केट क्रैश कर जाने से सुदीप को करोड़ों रुपये का नुकसान हुआ। उसने ज्यादातर पैसा ऐसी कंपनियों में लगाया था जो क्रैश में बिलकुल बंद होने के कगार पर चली गई थीं। ले-देकर बुक माइ ट्रिप नाम की कंपनी में उसका मन लगता था इसलिए अभी बस उसी पर फोकस कर रहा था। अगर वह यह एक कंपनी को अगले 2-3 साल चला ले गया तो वह अपने नुकसान की भरपाई कर पाएगा। उसको पहले से दिखता था कि पूरी दुनिया और हिंदुस्तान में लोगों का ट्रैवल को लेकर उत्साह बढ़ने वाला है। आने वाले कल में लोग साल भर पैसे इसलिए बचाएँगे कि वे खूब घूम पाएँ।

खैर यह तो हुआ सुदीप के बारे में। अब कहानी पर लौटते हैं। अपने होटल का नंबर देने के बाद सुदीप को थोड़ी बहुत उम्मीद थी कि शायद चित्रा का कॉल आए। वह चित्रा के रोने की वजह जानना चाहता था इसलिए नहीं कि वह उसकी कुछ मदद कर पाए बल्कि इसलिए कि कम-से-कम उतनी देर उसका ध्यान कहीं और लगेगा।

हम इतनी झूठी जिंदगी जी रहे हैं कि हम दूसरे को चुप करवाते हुए अपने-आपको भी चुप करवा रहे होते हैं। चुप कराने से जब सामने वाला चुप हो जाता है तो बेचैनी और बढ़ जाती है कि हम खुद कहाँ जाकर रोएँ और हमें चुप कौन कराएगा।

खैर, चित्रा का फोन आया नहीं। सुदीप के शेड्यूल के हिसाब से बनारस में आज उसकी आखिरी शाम थी। वह जाने से पहले फिर से अस्सी घाट पर पहुँचा। पिज्जेरिया कैफे में उसने नींबू और शहद-पानी ऑर्डर किया और बैठकर घाट की तरफ होती हलचल में खोने लगा।

जब थोड़ी देर में घाट से ध्यान हटाकर उसने कैफे के अंदर देखा तो चित्रा सामने वाली टेबल पर दिखी। उसने वहीं से हाथ हिलाया। चित्रा ने उसको देखा और हाथ हिलाया। सुदीप वहाँ से उठकर चित्रा की टेबल पर पहुँचा और बैठने से पहले पूछा,

“क्या मैं यहाँ बैठ सकता हूँ?”

“जरूर, पूरा कैफे खाली है वैसे।”

यह बोलकर चित्रा हँस दी। उसकी हँसी फैलकर सामने ठहरी हुई गंगा में शाम के साथ घुल गई।

“तो कैसा रहा तुम्हारा ब्रेक?”

“ठीक-ठाक, तुम्हारा रोना पूरा हो गया?”

“हाँ, पूरा हो ही गया। मैं कल जा रही हूँ।”

“मैं भी।”

“किताब पूरी करना तो मुझे भेजना।”

“जरूर, तुम क्यों रो रहे थे उस दिन घाट पर?”

“मैं कहाँ रो रहा था!”

“बकवास मत करो, मैं किसी से नहीं बोलूँगी।”

“लंबी कहानी है।”

“कल शाम 5 बजे की फ्लाइट है मेरी, तब तक तो बहुत टाइम है। इससे ज्यादा लंबी कहानी थोड़े होगी तुम्हारी और होगी भी तो तुम्हारे लिए एक टिकिट कराना कौन-सा बड़ा काम है!” चित्रा ने अपने पिज्जा का आखिरी पीस खाते हुए कहा।

पिज्जेरिया से निकलकर दोनों थोड़ी देर घाट पर बैठे। बैठे रहने के दौरान ज्यादा कुछ बातें नहीं हुई। दोनों में से किसी को ऐसा लगा भी नहीं कि बातें खत्म हो गई हैं बस इसलिए कुछ भी बोलते चले जाएँ।

करीब एक घंटे बैठे रहने के बाद सुदीप ने चित्रा से अपने होटल के रूम पर चलने के लिए

पूछा। चित्रा चलने से पहले थोड़ा-सा, बहुत थोड़ा-सा झिझकी।

हालाँकि, सुदीप के पास टैक्सी थी लेकिन फिर भी घाट से निकलकर दोनों ने ऑटो किया। सुदीप होटल ताज में रुका हुआ था। ऑटो वाले ने ताज सुनकर बहुत ज्यादा पैसे माँगे। सुदीप पैसे देने के लिए तैयार हो गया लेकिन चित्रा ने ऑटो वाले को हड़का दिया। सुदीप ने कहा भी कि क्या फर्क पड़ता है। चित्रा बोली कि अपने आराम के लिए बाकी लोगों के लिए रेट खराब नहीं करना चाहिए। सुदीप यह सुनकर याद करने लगा कि अभी तक की जिंदगी में उसने कभी मोल-भाव किया ही नहीं है।

जब ऑटो लंका से निकल रहा था तो यूनिवर्सल बुक शॉप पर चित्रा ने ऑटो रुकवाया। दुकान में अंदर जाते ही चित्रा ने बिना एक भी मिनट गँवाये मुराकामी की किताब 'काफ्का ऑन द शोर' खरीदी। उसके पहले पन्ने पर उसने लाल रंग के पेन से लिखा, With love, luck and light. इसके नीचे अपना ऑटोग्राफ स्टाइल में नाम लिखा और तारीख डाली 10-10-10 (10 अक्टूबर 2010)।

ऑटो में बैठते ही चित्रा ने सुदीप की तरफ किताब बढ़ाई। सुदीप ने किताब को उलटा-पलटा और कहा, "मेरी लाइब्रेरी में मुराकामी की सारी किताबें हैं।"

"तुम ये वाली रख लो अपनी लाइब्रेरी वाली तुम मुझे भेज देना।" यह कहते हुए चित्रा ने किताब का पहला पन्ना खोलकर सुदीप को दिखाया।

"आज 10-10-10 है। ऐसा दुनिया के कुछ हिस्सों में माना जाता है कि आज का दिन शादी के लिए बहुत लकी होता है।" सुदीप ने कहा।

"तुम मानते हो ये सब?" चित्रा ने किताब बंद करके सुदीप के हाथों में थमाते हुए कहा।

"कभी-कभी।"

"मेरी तो शादी हो चुकी है। पहले पता होता तो आज के दिन ही शादी करती।" चित्रा ने ऑटो वाले को चलने के लिए इशारा करते हुए कहा।

सुदीप को शादी वाली बात से जितना चौंकना चाहिए था, उससे थोड़ा-सा कम चौंका। यहाँ पर चित्रा के बारे में यह बताना जरूरी हो जाता है कि चित्रा ने आधी बात ही बताई सुदीप को कि उसकी शादी हो चुकी है। चित्रा का शादी के बाद डिवोर्स हो चुका था, वो भी दो साल पहले। वह बनारस किसी कविता के इवेंट के लिए नहीं आई थी, बल्कि अपनी मैरेज एनिवर्सरी के दिन वो उस शहर में नहीं रह पाती थी। पति सही में कोई बुरा नहीं था उसका। बस कुछ लोगों के साथ नहीं मामला सेट हो पाता तो नहीं हुआ। चित्रा और उसका पति दोनों कॉलेज में साथ थे, उनकी लव मैरेज हुई थी। चित्रा ने एक नॉर्मल सॉफ्टवेयर कंपनी में 2 साल नौकरी भी की थी। अब वैसे भी दुनिया में डिवोर्स होना कोई ऐसी बड़ी बात नहीं है, डिवोर्स न होना ज्यादा बड़ी बात है। चित्रा बचपन से भी कुछ-न-कुछ लिखने की शौकीन थी। चित्रा का कोई भी ऐसा दोस्त नहीं था जिसके साथ उसके संबंध अच्छे रहे हों। वह कभी-न-कभी किसी-न-किसी बात पर लड़ लेती थी। थोड़ी मुँहफट थी तो यह बात सबको अच्छी नहीं लगती थी। चित्रा को सबकुछ चाहिए था—नाम और

पैसा। जिसके लिए वह बहुत ज्यादा मेहनत नहीं करना चाहती थी। उसका पति चूँकि इकलौता बेटा था इसलिए डिवोर्स के बाद चित्रा को ठीक-ठाक पैसा मिल गया था। लेकिन पैसा इतना नहीं था कि चित्रा अपनी पूरी जिंदगी काट सके। वह सोचती थी कि किताब लिखकर वह अमीर भी बन जाएगी और पैसे भी कमा लेगी। दो साल से अपनी किताब पूरी न कर पाने की वजह से वह जिंदगी में ठीक-ठाक फ्रस्ट्रेटेड थी।

खैर, चित्रा के बारे में जान लेने के बाद हम ऑटो में लौटते हैं। जहाँ चित्रा और सुदीप होटल की तरफ जा रहे हैं। वे ताज में रूम में जाएँगे या रेस्टोरेंट में—देखते हैं, लेकिन उससे पहले ऑटो वाले ने मनोज तिवारी का गाना बदलकर 'लग जा गले कि फिर ये हँसी रात हो न हो' चला दिया। गाना बदलते ही ऑटो के अंदर का माहौल भी बदल गया था।

चित्रा को पता था कि होटल-रूम में जा रही है। चित्रा ने सुदीप से पूछा, "क्या पीते हो तुम?"

"मैंने पीना बंद किया हुआ है। एलर्जी होती है। तुम क्या पीती हो?"

"व्हिस्की, लेकिन कभी-कभार। जब बहुत खुश होती हूँ या बहुत दुखी। ऐसे केवल पीने के लिए नहीं पीती।"

ऑटो ताज के बाहर रुका। चित्रा ने फटाफट अपने पर्स से निकालकर पैसे दिए। सुदीप ने पैसे देने के लिए अपनी जेब टटोली लेकिन तब तक चित्रा ने पैसे दे दिए थे। उसको जेब टटोलते देख चित्रा ने बोला कि वह बाद में कभी कहीं कॉफी पिला दे, हिसाब बराबर हो जाएगा। दोनों होटल के अंदर घुसे। गेट पर खड़ी सिक्यूरिटी ने दोनों को थोड़ी अजीब नजर से देखा। सुदीप ने पूछा भी कि हम लोग रेस्टोरेंट में भी बैठ सकते हैं। चित्रा ने ही कहा कि आराम से रूम में बैठते हैं।

सुदीप को थोड़ा-सा अजीब लग रहा था। अजीब नहीं लगता अगर उसको पता न होता कि चित्रा की शादी हो चुकी है। ऐसे तो लड़कियों के साथ रुकना सुदीप के लिए कुछ नया नहीं था। वैसे भी बहुत-सी लड़कियाँ उसको मिलती थीं। वे उससे ज्यादा उसके पैसे में इंटरेस्टेड थीं। यह बात सुदीप को भी अच्छे से पता थी। सुदीप के लिए लड़कियों के साथ सोना या रुकना ऐसा कोई लाइफ का बड़ा सवाल नहीं था जिसके बारे में उसे एक सेकंड भी सोचना पड़े।

कमरे में जाते ही चित्रा ने टीवी ऑन कर दिया। सुदीप वाशरूम में मुँह-हाथ धोने चला गया। शीशे के सामने उसने आपने-आपको थोड़ी देर तक देखा। वह कुछ नहीं सोच पा रहा था। जब वह वाशरूम से लौटा तो चित्रा आराम से बिस्तर पर टेक लगाकर पसर चुकी थी।

सुदीप ने पूछा, "क्या-क्या ऑर्डर करना है?"

"बस कुछ खाने का कर दो। दारू है मेरे पास।" यह कहते हुए चित्रा ने अपने बैग की तरफ इशारा किया।

"क्या बात है दारू बैग में लेकर चलती हो!"

"अरे नहीं, आज बहुत अच्छा दिन है इसलिए सोचा था कि आज पी जाएगी।"

“ऐसा क्या है आज?”

“कहानी का एंड मिल गया। वैसे भी अकेले पीती बैठकर इससे अच्छा है कंपनी मिल गई।”

“लेकिन मैं तो पीऊँगा नहीं। मुझे एलर्जी होती है।”

“ऐसा है, एलर्जी की दवा भी है मेरे पास, दारू पी लो फिर खा लेना। एक दिन में ऐसा कुछ नहीं हो जाएगा।”

चित्रा ने इतना कहने के बाद सुदीप पर थोड़ा-सा भी जोर नहीं डाला। जोर डाला होता तो वह शायद नहीं पीता लेकिन चित्रा ने इस स्टाइल में पूछा कि सुदीप के मना करने का सवाल ही नहीं उठता था।

अगले 5 मिनट में दोनों पहला चीयर्स कर चुके थे।

“चीयर्स टू योर बुक।” सुदीप बोला।

“तो अब बताओ उस दिन तुम क्यों रो रहे थे?”

“तुम्हें गलतफहमी हुई है। मैं कहाँ रो रहा था!”

“देखो बेटा सुदीप, ऐसा है, माना तुम बड़े बिजनेसमैन होगे लेकिन मैं भी छोटी-मोटी ही सही राइटर तो हूँ। कब कौन रो रहा है, पता चल जाता है। नाटक मत करो और बताओ।”

इसके बाद सुदीप यादव ने अपनी पूरी राम कहानी सुनाई। सुदीप की कहानी में कोई हीरोइन नहीं थी। उसके पास टाइम नहीं था इन सब के लिए। उसके बहुत कम दोस्त थे। जो थे भी वे उसके पैसे की वजह से दूर हो गए थे। हालाँकि, कुछ दोस्त ऐसे थे जो हमेशा उसको जमीन पर रखते थे। जब भी उसको लगने लगता था कि उसने जिंदगी में बहुत नाम और पैसा कमा लिया है तो वह अपने सबसे करीबी दोस्त के पास जाता और उसको बोलता था कि वह उसे गाली दे। सुदीप को पता था कि आसमान में है लेकिन वह एक पाँव जमीन पर रखना चाहता था। इसीलिए वह बड़ी-बड़ी पार्टी में बोर होता था क्योंकि 99% लोग जो उससे मिलते थे उसको अपना आइडिया बेचना चाहते थे। वह अब तक एक भी बिजनेस पर टिका नहीं था इसलिए 2008 के शेयर मार्केट क्रैश के बाद वह बस अपनी वेबसाइट बुक माइ ट्रिप को दुनिया की सबसे बड़ी वेबसाइट बनाना चाहता था। वह एक जगह फोकस करना चाहता था। उसको लगता था कि हर कंपनी बस उसने खरीदी-बेची है, खुद कभी लगकर कोई ऐसी कंपनी खड़ी नहीं की जो भारत की सबसे बड़ी कंपनियों में से एक हो जाए। सुदीप अपने-आप को ये प्रूव करना चाहता था। 2008 में अमेरिका में बड़े बैंक बंद हो रहे थे। इस चक्कर में पूरी दुनिया की हर इकॉनॉमी पर उसका असर पड़ा था। लोगों ने ट्रैवल कम कर दिया था। अभी ऑनलाइन पेमेंट करने में लोगों को उतना भरोसा नहीं था। इसलिए भी सुदीप की वेबसाइट का ट्रैफिक नहीं बढ़ रहा था। उसकी कंपनी की वैल्यू करोड़ों में थी। उसको कुछ लोग पैसे देकर उसकी कंपनी में शेयर लेना चाहते थे। लेकिन सुदीप को लगता था कि अगर बाहर से पैसा लगा तो उसको बाहर वालों की बात को भी सुनना पड़ेगा। दिक्कत यह थी कि अभी सुदीप का बिजनेस जिस स्टेज में

था वहाँ बिना और पैसा डाले बिजनेस आगे बढ़ नहीं सकता था।

"मैं बनारस इसलिए ही आया था कि शांति से बैठकर सोच पाऊँ कि मुझे अपने शेयर बेचने हैं कि नहीं।" सुदीप ने शाम को तीसरा पेग खत्म करते हुए बताया।

"क्या सोचा है तुमने?"

"मन तो नहीं है लेकिन आगे बिजनेस एक्सपैंड करने के लिए बहुत पैसे चाहिए। वो बिना शेयर बेचे आएँगे नहीं।"

इतनी बातचीत में बात चार पेग तक आ चुकी थी। सुदीप ने उठकर सामने शीशे से पर्दा हटा दिया। होटल के कमरे से अक्सर शहर झिलमिलाते हुए सुंदर दिखता है। सुदीप पाँच मिनट तक कमरे की खिड़की से बाहर सड़क पर और आसमान में देखता रहा। सुदीप जब पर्दा हटाकर घूमा तो न केवल उसकी आँखों में बल्कि गालों पर भी आँसू थे। चित्रा ने बढ़कर उसको गले लगाने का सोचा लेकिन लगाया नहीं।

हालाँकि, यह वो मोमेंट था, जब चित्रा सुदीप के पास आ सकती थी। उसको कुछ पूछ सकती थी, बता सकती थी। वह गले लगा सकती थी। उसको समझा सकती थी कि कोई बात नहीं सब एक दिन ठीक हो जाएगा। सब कुछ एक दिन ठीक हो जाएगा—इस उम्मीद पर एक नहीं, न जाने कितनी दुनिया चल रही होंगी। चित्रा वहीं बेड के पास पड़े टॉवल को उठाकर सुदीप को दे सकती थी लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। चित्रा ने एक बार फिर सुदीप को गले लगाने का सोचा और तौलिया उठाकर आगे कर दिया। सुदीप ने तौलिये से अपना चेहरा ढक लिया। सुदीप ने अगर अपने चेहरे को ढका नहीं होता तो चित्रा कभी उसे गले लगाने की हिम्मत नहीं कर पाती। चित्रा ने सुदीप को गले लगा लिया। सुदीप और चित्रा एक-दूसरे को गले लगाए वैसे ही कुछ देर खड़े रहे।

हम कुछ काम क्यों नहीं करते और एकदम वही काम क्यों कर लेते हैं—इसकी कोई ठोस वजह कभी किसी को पता नहीं चलती। एकदम हमारे अंदर वह कौन है जो बोल देता है कि रुको मत आगे बढ़ो कुछ नहीं होगा। हमारे अंदर वह कौन है जिसको हम बिलकुल भी नहीं जानते। इसलिए शायद कहा जाता है कि हमारे हाथ में कुछ भी नहीं है। हम सब लोग पहले से प्रोग्राम किए हुए विडियो गेम का हिस्सा हैं जो चाहे गेम जीते या हारे, एक दिन बोर होकर कोई हमारी पावर सप्लाई बंद कर देगा।

इसके बाद बहुत देर तक सुदीप चुप नहीं हुआ। वह फफक-फफककर बच्चों जैसे रोता रहा। आस-पास देखकर पता ही नहीं चलता कौन कितने आँसू लेकर भटक रहा है। हमें सामने वाले का सब कुछ पता होता है बस आँसुओं का हिसाब-किताब कोई करता ही नहीं। दुनिया आँसुओं का हिसाब-किताब कर लेती तो जीना थोड़ा आसान हो जाता। चित्रा ने सुदीप को चुप करवाने की बिलकुल भी कोशिश नहीं की। चित्रा की आँखों में भी आँसू थे लेकिन वह जोर से रोना नहीं चाहती थी।

सुदीप के रोने की वजह से चित्रा का गला भी भीग चुका था। रोते हुए सुदीप की नाक वैसे

ही बह रही थी जैसे सबकी बहती है। सुदीप को रोने के कुछ देर बाद एहसास हुआ कि वह ऐसे रो क्यों रहा है।

कहानी में हीरो के रोने से कहानी कमजोर पड़ती है, नहीं तो हीरो...। मैंने पहले ही बता दिया था कि इस कहानी के हीरो में वो सारी कमियाँ हैं जो सबमें होती हैं। वह अपनी जिंदगी में सब कुछ ठीक होने के बाद भी परेशान है। सुदीप अगर यहाँ नहीं रोता तो यह चित्रा उसे गले न लगाती। चित्रा अगर उसे गले न लगाती तो उसके गले से लेकर उसका टॉप तक नहीं भीगता। अगर यह सब नहीं होता तो चित्रा और सुदीप एकदम से इतने पास नहीं आए होते।

सुदीप को चार पेग भर रोने के बाद समझ आया कि वह बहुत हल्का महसूस कर रहा है। अब उसको चित्रा के पास से उठ जाना चाहिए। उठने से पहले उसने कहा, "तुम ये सब किसी कहानी में तो नहीं लिखने वाली?"

चित्रा ने बड़ी ईमानदारी से कहा, "पता नहीं, लेकिन सीन अच्छा है।" फिर दोनों हँसे पड़े।

सुदीप के जाने से पहले चित्रा वाशरूम गई। उसने अपना मुँह धोया और ठीक उतनी देर अपने चेहरे को शीशे में देखा जितनी देर सुदीप ने देखा था। वाशरूम के शीशे ने वो शक्ल देखी जो चित्रा छुपा रही थी।

सुदीप अब तक बिलकुल नॉर्मल हो चुका था। उसने टीवी अनम्यूट किया, वहाँ 'अनजाना अनजानी' फिल्म का गाना 'तुझे भुला दिया' चल रहा था।

"तुम किसलिए रो रही थी उस दिन?"

"बस यार ऐसे ही। मेरी लाइफ में इतने बड़े टेंशन नहीं है तुम्हारे जैसे।"

"फिर भी, पति कैसा है तुम्हारा?"

"बहुत अच्छा था।"

"था मतलब?"

"दो साल पहले डिवोर्स हो चुका है।"

"डिवोर्स हो चुका है, फिर रो क्यों रही थी?" सुदीप ने हल्का-सा मजाकिया अंदाज में पूछा।

"पति के लिए थोड़े कोई रोता है यार! अच्छा पति नहीं मिला तो छोड़ दो आगे बढ़ो उसमें क्या है!"

"लड़कियों के लिए इतना आसान होता है क्या! फिर रो क्यों रही थी?"

"मुझे ऐसे ही रोना आ जाता है। बिना किसी वजह के।"

"पक्का?"

"हाँ पक्का, कुछ खाने का ऑर्डर कर दो।"

"खाना खाने के बाद बताना क्यों रो रही थी।"

चित्रा मना कर सकती थी कि उसे नहीं बताना कि वह रो क्यों रही थी लेकिन फिर पता नहीं क्या सोचकर उसने कहा, "कल सुबह-सुबह घाट पर नाव में बताऊँगी। बोलो चलेगा तुम्हें?

एक दिन में एक का ही रोना काफी नहीं है!”

सुदीप तुरंत तैयार हो गया। सुदीप के मन में आया कि वह पूछे कि रात के 1 बज चुके हैं, वह इतनी रात अपने कमरे पर जाएगी। सुबह वह उसको कहाँ से लेगा। चित्रा इतना कुछ नहीं सोच रही थी।

“सुबह यहीं से चलेंगे कि तुम्हें होटल से लेना है?” सुदीप ने पूछा।

“1 बज ही रहा है। 5.30 पर निकल लेंगे यहीं से। तुम्हें सोना है?”

“नहीं, मुझे नहीं सोना।”

“तो ये बताओ, तुमने 35 की उम्र में रिटायर होने का सोच रखा है। करोगे क्या रिटायर होकर?”

“तुम मजाक उड़ाओगी।”

“अरे बता दो यादव जी।”

“यार, रिटायर मतलब रिटायर, कुछ करना ही क्यों है। कुछ करना ही न पड़े इसलिए रिटायर होना है चित्रा पाठक जी।”

“फिर भी टाइम-पास कैसे करोगे, बोर नहीं हो जाओगे?”

“नहीं, दिन भर बैठकर चिल्ल करूँगा। अपने बच्चों के साथ खेलूँगा। घर के खेत में फूल-पत्तों को पानी दूँगा। मुराकामी की बची हुई किताब पढ़ूँगा। तब तक तुम्हारी किताब आ गई तो वो भी पढ़ूँगा।”

“इतने बोरिंग तुम दिखते तो नहीं हो यादव जी!”

“इसमें बोरिंग वाली क्या बात है, पाठक जी?”

“रिटायर होने का आइडिया ही इतना बोरिंग है।”

“आप पागल हैं क्या पाठक जी! सोचो 35 की उम्र में आदमी एकदम आजाद। नॉर्मल आदमी उस समय अपने बच्चे के एडमिशन से लेकर अपने कैरियर तक सबसे ज्यादा मेहनत कर रहा होगा। ये वही उम्र है जब माँ-बाप बूढ़े हो रहे होते हैं। सबको पता है कि माँ-बाप बूढ़े हो रहे हैं फिर भी आदमी उनको टाइम नहीं दे पाता। इन शॉर्ट, आदमी अपने पास्ट और फ्यूचर दोनों के बीच में पिस रहा होता है।”

“चलो मान ली तुम्हारी बात। तुम्हें इतनी अटेंशन की आदत पड़ चुकी है। इतने लोग जानते हैं तुम्हें। तुम्हारे इतने सारे फैन्स हैं उनका क्या करोगे? उससे पीछा कैसा छुड़ाओगे?”

“लग रहा है मेरे बारे में सब कुछ गूगल कर लिया है तुमने।”

“और क्या, लेकिन एक बात है।”

“क्या?”

“तुम अपने ट्विटर और फेसबुक प्रोफाइल से कितने अलग हो।”

“हर आदमी अपने फेसबुक प्रोफाइल से बहुत अलग होता है।”

“खैर, तुम्हारे रिटायरमेंट की बात हो रही थी। इतने पॉपुलर हो तुम, उसका क्या करोगे?”

“तुम्हें सुनकर अजीब लगेगा लेकिन मैं चाहता हूँ कि मैं मरूँ तो किसी को पता न चले। कोई शोर न मचे। कोई न रोए। सोशल मीडिया पर मेरी तारीफ में लंबे-लंबे पोस्ट न लिखे जाएँ। न ही कोई मेरी फोटो शेयर करके मेरे बारे में कोई कहानी सुनाए।”

“मरने की इतनी सारी बात कर रहे हो। मरने से पहले कोई आखिरी इच्छा हो तो वो भी बता दो। मैं न कभी बूढ़ी होने वाली हूँ, न ही कभी मरने वाली हूँ।” चित्रा ने यह कहते हुए सुदीप के कंधे पर सर रख लिया और दोबारा बोली,

“मुझे मरने की बात से डर लगता है। आई होप, मेरे सिर रखने से तुम्हें कोई दिक्कत नहीं है!”

सुदीप ने हाँ या न कुछ भी जवाब नहीं दिया।

“सुबह 5 बजे का अलार्म लगा दो।”

“अलार्म के लिए मोबाइल खोलना पड़ेगा। रिसेप्शन पर बोल देता हूँ।”

इन सब बातों में करीब पौने तीन बज चुके थे। चित्रा की आँखों में नींद नहीं थी। सुदीप की आँखों में नींद-ही-नींद थी।

“कल जब मैं बहुत बड़ी राइटर हो जाऊँगी तो तुमसे किताब लॉन्च करवाऊँगी। तुम्हारे सोशल मीडिया पर इतने फालोवर हैं कि उसके 5% भी किताब खरीद लेंगे तो मेरी किताब बेस्टसेलर बन जाएगी। किताब प्रोमोट करने में नाटक तो नहीं करोगे?”

चित्रा को यह एहसास ही नहीं था कि सुदीप सो चुका है। उसने अपना मोबाइल खोला। अपनी और सुदीप की एक फोटो खींची। फोटो को एक-दो बार देखा। फोटो डिलीट की और सोने की कोशिश करने लगी।

फोटो खींचकर उसको पाँच सेकंड बाद डिलीट कर देने के पीछे क्या वजह होती होगी, यह कहना मुश्किल है। कम-से-कम यह बात कहानी लिखते हुए मुझे समझ नहीं आई कि चित्रा ने क्यों ऐसा किया होगा। चित्रा अपनी जिंदगी में जितना सुलझी हुई थी, उस हिसाब से तो उसे फोटो ही नहीं खींचनी चाहिए थी। वह कोई कॉलेज की लड़की तो थी नहीं जिसके मन में दुनिया को लेकर कोई कड़ुवाहट न हो। खैर, कुछ बातें जो मुझे समझ नहीं आईं मैं उसको वैसे ही इसलिए लिख दे रहा हूँ कि शायद पढ़ने वाले अपने हिसाब से कहानी बढ़ा-घटा लेंगे। मुझे बस इतना पता है कि हर कहानी को खत्म करने के कई मौके आते हैं लेकिन कभी किरदार तो कभी लेखक की जिद के आगे वे मौके फ्रीज नहीं हो पाते। किसी पल को फ्रीज कर लेने की नाकाम कोशिश होती रहनी चाहिए क्योंकि हमें क्या बचाना था और क्या गँवाना था, यह बात आखिर से पहले समझ ही नहीं आती।

वह फोटो डिलीट कर देने के बाद भी फोल्डर में थी। चित्रा ने उस फोटो को डिलीट वाले फोल्डर से दुबारा डिलीट करके उस फ्रीज मोमेंट को आजाद कर दिया।

11 अक्टूबर 2010
सुबह 6 बजे, अस्सी घाट बनारस

सुदीप और चित्रा को घाट पहुँचने में थोड़ी-सी देर हो गई। इसकी वजह चित्रा नहीं थी। वह तो तुरंत ही तैयार हो गई थी लेकिन सुदीप ने ही वाशरूम में कुछ ज्यादा टाइम लगा दिया।

खैर, होटल से निकलते हुए सुदीप ने रिसेप्शन पर कार के लिए कहा तो चित्रा ही बोली कि पागल हो क्या, ऑटो से चलते हैं। दौड़ते-भागते दोनों घाट पर पहुँचे। चित्रा ने पहले से ही एक नाव वाले को फिक्स कर रखा था। जैसे ही दोनों नाव में बैठे एक बाबा आकर नाव में बैठ गए।

हालाँकि, दोनों ने पूरी नाव बुक की हुई थी लेकिन बाबा ने हिलने का नाम नहीं लिया। नाव वाले ने बाबा को दो-चार बनारसी गालियाँ भी दीं लेकिन सुदीप ने नाव वाले को इशारा किया कि बाबा को साथ में चलने दिया जाए।

“सर आप जानते नहीं है बाबा को! ये आदमी हैंडपंप है कितना अंदर है पता नहीं। कुछ उल्टा-सीधा बोल देगा। पहले भी कई कस्टमर खराब कर चुका है।”

बाबा ने तुरंत, ‘जय भोलेनाथ’ बोलकर आसमान की ओर देखा।

नाव वाला बाबा से अच्छा-खासा गुस्सा था। वह दुबारा बोला, “साब! जितनी देर भाँग पीता है बस उतनी देर होश में रहता है ये बाबा।”

जैसे ही नाव चलकर घाट से थोड़ी दूर आई, तो नाव वाला बोला, “नौकरी-चाकरी, बेटी-बेटा जो माँगना है गंगा जी से माँग लीजिए।”

चित्रा बोली, “रिटायरमेंट माँग लो।”

यह सुनकर नाव वाला बोला, “अभी तो भइया की नौकरी नयी होगी। दीदी आप अभी से रिटायरमेंट माँगने लगीं?”

यह सुनकर सुदीप ने नाव में पड़ा एक कंकड़ गंगा में फेंकते हुए कहा, “अच्छी नौकरी ही माँग लेता हूँ।”

यह बोलकर सुदीप ने आँखें बंद कर लीं। नाव वाला देख रहा था कि चित्रा ने आँखें बंद नहीं की हैं। वह बोला, “दीदी, आप भी सच्चे मन से कुछ भी माँग लीजिए। गंगा मइया सदियों से सब दे रही हैं।”

उधर बाबा यह सब कुछ देखकर चुप थे। सुदीप ने आँखें खोलकर कहा, “बाबा कुछ सुना दीजिए।”

बाबा के हाथ में मंजीरा था। बाबा ने कोई जवाब नहीं दिया। वह सुदीप की ओर से चेहरा हटाकर आसमान की तरफ देखने लगे और दो मिनट बाद सुनाना शुरू किया।

“सब ठाठ पड़ा रह जावेगा, जब लाद चलेगा बंजारा
ये धूम-धड़क्का साथ लिए, क्यों फिरता है जंगल-जंगल

इक तिनका साथ न जावेगा, मौकूफ हुआ जब अन्न और जल
घर-बार अटारी, चौपारी, क्या खासा, तनसुख है मसलन
क्या चिलमन, पर्दे, फर्श नये, क्या लाल पलंग और रंगमहल
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा, जब लाद चलेगा बंजारा।"

बाबा सुनाते हुए बिलकुल ऐसे मगन हो गए थे जैसे भोले बाबा से सीधा कांटेक्ट हो गया हो। बाबा सुनाने के बाद जब चुप हुए तब चित्रा ने पूछा, "बाबा आप जो सुना रहे थे, वो कबीरदास का है न?"

बाबा गुस्सा होते हुए बोले, "नजीर अकबराबादी नाम का बड़ा शायर हुआ था बेटी, वो भी कबीर था। तुझमें-मुझमें इस लड़के में सबके अंदर कबीर है।"

इसके बाद बाबा बहुत देर तक कुछ-न-कुछ गाते रहे लेकिन सुदीप को 'सब ठाठ पड़ा रह जावेगा, जब लाद चलेगा बंजारा' वाली लाइन चिपक गई। बाबा को नदी के पार रामनगर महल की तरफ जाना था। बाबा नदी की दूसरी तरफ उतर गए। बाबा जब नाव से उतरकर जा रहे थे तो सुदीप ने उनको वापिस बुलाया। उसकी जेब में करीब 7 हजार रुपये कैश था। उसने सब उठाकर बाबा के हाथ में रख दिए। बाबा ने मजीरा बजाया और सुदीप के कान के पास आकर धीरे से बोले, "जय भोलेनाथ, परेशान मत हो। जितना लुटाएगा उतना ही आनंद आएगा। तू कबीर है कबीर!"

सुदीप ने और भी कुछ सवाल पूछना चाहा लेकिन बाबा ने कोई जवाब नहीं दिया। बस नदी के पास से मुट्ठी भर रेत उठाकर हवा में छोड़ दी। रेत कुछ देर तक उड़ती हुई नीचे रेत में जाकर मिल गई। नीचे पड़ी हुई रेत को देखकर यह पहचानना मुश्किल था कि हवा से उड़कर कौन-सी रेत गिरी थी। बाबा धीरे-धीरे चलते हुए नजरों से ओझल हो गए। हवा में रेत के मिलने और फिर से रेत में मिल जाने के हजारों मतलब हो सकते हैं। जैसेकि हर आदमी एक दिन रेत ही बन जाएगा। रेत जिसमें बैठकर लोग जिंदगी के बारे में बातें करेंगे। सुदीप को अपना मतलब तब भी नहीं मिला था।

नाव वाला बोला, "क्या सर, ये बाबा कुछ भी बोलता है। आपको इतने पैसे नहीं देने चाहिए थे।"

सुदीप कुछ नहीं बोला। चित्रा ने भी यही बात कही, "तुम पागल हो क्या, कोई पैसे ऐसे उड़ाता है! इससे अच्छा तो किसी अनाथालय में पैसे दे देते।"

"चित्रा यार, प्लीज!"

सुदीप ने चित्रा को चुप रहने का इशारा किया। इसके बाद चित्रा ने कुछ भी बोलना ठीक नहीं समझा।

सुदीप अभी तक नदी के किनारे वाली रेत को देख रहा था। सूरज अब तक ठीक से उग चुका था। सुदीप कभी घड़ी नहीं पहनता था, इसलिए उसने नाव वाले से टाइम पूछा। नाव वाले ने बताया कि करीब 7.30 बज चुके हैं।

“थोड़ी देर हो गई।” सुदीप बोला।

“बनारस में किसी बात के लिए कभी देर नहीं होती।” चित्रा ने स्टाइल मारते हुए कहा।

“देर नहीं हुई तो ये बताओ कि तुम्हें लाइफ से चाहिए क्या”?

“छोड़ो यार! तुम भी कहाँ इतना बड़ा सवाल लेकर बैठ गए, नहीं बताना।”

“अरे बताओ”?

“बोला तो नहीं बताना”!

“ऐसे कैसे नहीं बताना! बताओ”?

सुदीप के बार-बार पूछने पर चित्रा ने आखिर बता ही दिया।

“मैं चाहती हूँ कि मुझे हर कोई पहचाने, मेरे अपने कमाए हुए खूब पैसे हों, मेरी किताबें लाखों में बिकें। हर जगह मुझे बोलने के लिए बुलाया जाए। न्यूज पेपर में फोटो आए मेरी। न्यूज रूम में मुझे बुलाया जाए। इन शॉर्ट चित्रा पाठक को कोई अवॉइड नहीं कर पाए।”

“तो चित्रा मैडम रिच ऐंड फेमस पेज-3 सेलिब्रिटी होना चाहती हैं!”

“हाँ, ऐसा ही समझ लो।”

“तो, इसमें रोने की क्या बात है?”

“मुझे लगता है कि ये सब कुछ नहीं हो पाएगा। मैं पिछले तीन साल से एक किताब पूरी नहीं कर पाई।”

“जाओ बच्चा, वरदान देते हैं तुम्हें, तुम एक दिन हिंदुस्तान की सबसे बड़ी लेखिका बनोगी। बड़ी राइटर हो जाओगी तो भूल तो नहीं जाओगी न?” सुदीप ने कहा।

“वेल, बाद में मैं तुम्हें पहचानूँगी या नहीं। अभी से इस बारे में कुछ कह नहीं सकती।”

चित्रा और सुदीप ठहठहाकर हँस पड़े। नाव थोड़ी देर तक घाटों के पास होते हुए वहीं लौट आई जहाँ से शुरू हुई थी। घाट आ चुका था।

“चलो कुल्हड़ वाली चाय पिलवाओ, एक भी पैसा नहीं है जेब में।”

चित्रा ने दो कुल्हड़ चाय ली और वहीं सुदीप के पड़ोस में बैठ गई। चित्रा अपनी कहानी का अंत ढूँढ़ चुकी थी और सुदीप अपनी कहानी की शुरुआत।

चित्रा ने कुल्हड़ की चाय को खत्म करते हुए कहा,

“कुल्हड़ वाली चाय जल्दी खत्म हो जाती है।”

“हाँ, छुट्टियाँ भी।”

“तुम्हारा अपडेट तो मुझे अखबारों से मिलता रहेगा।”

“हाँ पक्का, तुम भी अपनी किताब खत्म करना तो बताना।”

“पक्का बताऊँगी।”

“कब मुलाकात होगी अब?” सुदीप ने पूछा।

सुदीप ने यह सवाल क्यों पूछा होगा इसकी एक ही वजह समझ में आती है। सुदीप अगर रात में चित्रा के सामने रोया नहीं होता तो शायद वह यह सवाल नहीं पूछता। कुछ भी हो अगर

कोई लड़का किसी के सामने रो देता है तो वह सामने वाले के करीब अपने-आप आ जाता है। लड़कियों के साथ भी शायद ऐसा होता हो। साथ रोना साथ हँसने से ज्यादा बड़ी चीज है।

चित्रा ने कहा, "तुम्हारे पास इतना टाइम कहाँ होगा?"

"मैं तुम्हें कॉल कर सकता हूँ?"

"नहीं, मत करना।" चित्रा ने दूसरी कुल्हड़ वाली चाय लेते हुए कहा लेकिन फिर उसके बाद जोड़ा,

"हाँ, अगर किसी दिन बहुत उदास होना तो कॉल करना।"

"तुम उदास होगी तो क्या करोगी?"

"मुझे मालूम है तुम बिजी हो। तुम्हें परेशान नहीं करूँगी।"

यह वो पल था जब सुदीप को पहली बार अपनी जिंदगी से नफरत हुई। क्यों था वह इतना बिजी! क्यों उसके पास किसी भी चीज के लिए बहुत कम टाइम था! क्यों उसको अपने 35 साल का होने की जल्दी थी। हम लाइफ में इतना बिजी होकर क्या ही उखाड़ ले रहे हैं! लाइफ में अगर कुछ उखाड़ लेने लायक है तो वो है फुरसत। यह वो पल था जिसमें सुदीप को कोई बड़ा फैसला लेना था।

"तुम्हारा जिस दिन रोने का मन करे उस दिन कॉल कर लेना। मैं आने की कोशिश करूँगा।"

"देखो करोड़पति इंसान, एक कुल्हड़ वाली चाय का इतना एहसान मत मानो। वैसे भी मेरी लाइफ तो हैपनिंग होने वाली है। तुम्हारा कभी रोने का मन करे तो तुम कॉल कर लेना। ठीक है?"

यह घटिया-सी तसल्ली कि 'जब भी तुम्हें अकेला लगे तो मैं हूँ' शायद इस दुनिया की सबसे बड़ी तसल्ली है। दुनिया में इतना कुछ है करने को फिर भी आदमी अकेला हो जाता है। प्यार की कहानियाँ इसीलिए प्यार करने वालों के मरने के बाद भी जिंदा रहती हैं क्योंकि उनके अंत में उम्मीद हो न हो लेकिन उनकी शुरुआत एक सुई की नोक जितनी उम्मीद से होती है।

"चलें?" चित्रा और सुदीप ने एक साथ कहा।

"थोड़ी देर में।" दोनों ने साथ-साथ सुना।

सुदीप ने अपनी सबसे छोटी उँगली से चित्रा की सबसे छोटी उँगली को गले लगाया। दोनों उँगलियाँ मिलकर खुश हुईं, थोड़ा-सा रोईं।

चित्रा की उँगली ने सुदीप की उँगली से पूछा, "अब कब मिलना होगा?"

सुदीप की उँगली ने कहा, "पता नहीं।"

चित्रा की उँगली ने सुदीप की उँगली को ऊपर से नीचे तक छूकर कहा, "पता करके बताओ?"

कोई किसी को छोटी उँगली जितना भर भी सही से छू ले तो सब कुछ कितना आसान हो जाए। छूना जब केवल छूने के लिए हो कहीं पहुँचने के लिए नहीं। जब शरीर एक-दूसरे पर चढ़ाई

करने के लिए नहीं बल्कि एक-दूसरे की धूल साफ करने के लिए हाथ बढ़ाएँ। तन की धूल साफ करने के लिए दुनिया में कितना कुछ है! मन की धूल की दुनिया में कोई औकात ही नहीं।

“क्या हम ऐसा कर सकते हैं कि साल में कम-से-कम एक बार मिलें?” सुदीप ने पूछा।

“बहुत ही खराब आइडिया है।” चित्रा ने कहा।

“दो साल में एक बार?”

“उससे भी खराब प्लान है।” चित्रा ने कहा।

छोटी उँगलियाँ एक-दूसरे में उलझी हुई उदास थीं। गंगा बनारस तक आते-आते ठहर जाती है ताकि उसके पड़ोस में बैठे लोग भी ठहर सकें।

“हम तब मिलेंगे जब या तो बहुत खुश हों या फिर बहुत उदास हों।” चित्रा ने कहा।

“ऐसे तो शायद कभी मिलना ही न हो।”

“प्लान नहीं करते हैं सुदीप, मिलना होगा तो मिल लेंगे।”

“चलो, ये भी ठीक है। फ्लाइट कितने बजे की है तुम्हारी?”

“5.30 और तुम्हारी?”

“6 बजे, चलो एक काम करता हूँ एयरपोर्ट साथ चलते हैं। मैं तुम्हें होटल से ले लूँगा।”

“तुम मुंबई जा रहे हो?”

“हाँ, तुम बोलो तो दिल्ली से होते हुए चला जाऊँ।”

“फ्लर्ट तुम पर बिलकुल भी सूट नहीं करता।” चित्रा घाट से उठ गई।

दोनों वहाँ से चल दिए। पास पड़ा कुल्हड़ कूड़ेदान में छलांग लगाकर टूट गया और टूटकर दोनों कुल्हड़ एक हो गए। गंगा जी ने दोनों को अस्सी से जाते हुए देखा। पिज्जेरिया के वेटर ने दोनों को एक साथ देखकर हवा में आँख मारी।

11 अक्टूबर 2010
शाम 4.30, बनारस एयरपोर्ट

सुदीप के हाथों में मुराकामी की वही किताब थी जो चित्रा ने उसे एक दिन पहले दी थी। चित्रा वहीं सुदीप के साथ बैठी हुई थी। उनकी अभी तक की बातें बहुत ही बोरिंग टाइप की हुई थीं। जैसेकि अगर तुम मुंबई आना तो मिलना। अगर तुम दिल्ली आना तो बताना। तुम अगर किताब खत्म करना तो बताना। तुम अगर अपने शेयर बेचना तो बताना।

सुबह 9 बजे से शाम 4.30 बजे में ही दोनों के बीच कुछ दूरी आ गई थी। चित्रा और सुदीप दोनों के लिए ऐसे किसी अजनबी से मिलना नया था। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या बोलें और क्या नहीं। बस एक बात तय थी कि उन्हें कुछ-न-कुछ बोलना था। चित्रा के हाथ की छोटी

वाली उँगली बेचैन थी। सुदीप के हाथ की छोटी उँगली ठीक उतना ही बेचैन थी।

बातें होते-होते रुक जा रही थीं, कहीं पहुँच नहीं रही थीं। उँगलियाँ अगली बार मिलने का कोई वादा चाहती थीं। चित्रा की फ्लाइट का अनाउंसमेंट शुरू हो चुका था। उसकी फ्लाइट के सभी लोग लाइन में लग गए। वह वहीं कुर्सी पर सुदीप के पास बैठी रही। धीरे-धीरे लाइन छोटी होती जा रही। उस फ्लाइट में हर चढ़ने वाले को ट्रेन के जनरल डिब्बे में चढ़ने जितनी जल्दी थी। लाइन में जब बस दो-तीन लोग बचे तो सुदीप ने कहा, "फ्लाइट छोड़ ही रही हो तो मुंबई चलो साथ में।"

"मुंबई आकर क्या करूँगी?"

"थोड़ा रो लेना।"

"फिर कभी आऊँगी।" चित्रा ने सुदीप की शर्ट के धागे को हटाते हुए कहा।

"फिर कभी नहीं आता।" सुदीप ने एकदम सीरियस होकर चित्रा की आँखों में देखते हुए कहा।

फ्लाइट का अनाउंसमेंट शुरू हो चुका है। चित्रा ने अपनी आँखों के समंदर को अपने रूमाल में कैद कर लिया। वह सुदीप को गले लगाकर उसके कान में फुसफुसाई, "फिर कभी जल्द ही आएगा।"

जाने से पहले चित्रा ने सुदीप की किताब को उसके हाथ से छीना और जहाँ उसने 10 अक्टूबर 2010 की तारीख डाली थी वहाँ पर उसने लिखा, '10 अक्टूबर 2011, बस एक साल बाद मिलते हैं।'

इसके नीचे चित्रा ने अपना नम्बर लिखा। फ्लाइट अटेंडेंट ने चिल्लाना शुरू कर दिया था।

"Last call for the guests flying to Delhi."

चित्रा ने चलना शुरू किया। सुदीप ने चित्रा के लिखे हुए को छूकर देखा। सुदीप की छोटी उँगली अब खुश थी। उसने पूरे हाथ को खींचकर हवा में उठाया ताकि वह चित्रा को हाथ हिलाकर बाय बोल सके। चित्रा बिना पीछे मुड़े फ्लाइट में घुस गई। उसने फ्लाइट में घुसने के बाद पीछे मुड़कर देखा।

खुश होना कितना आसान है अगर उसको एक तारीख से जोड़ दिया जाए। दुनिया को 10 अक्टूबर 2011 का इंतजार था।

---

* मनमोहन सिंह सोनिया गाँधी के इशारों पर नाचने वाली कठपुतली हैं। अगर कांग्रेस प्रियंका गाँधी को ले आती है तो बीजेपी वाले कभी सरकार नहीं बना पाएँगे। बीजेपी के पास प्रधानमंत्री का कैंडीडेट भी नहीं है सर।

एक साल बाद

होटल ललित, दिल्ली, कांफ्रेंस हॉल

पिछले एक साल में सुदीप और चित्रा ने एक भी बार एक-दूसरे को किसी भी तरह से कांटैक्ट करने की कोशिश नहीं की थी। तारीख अगर तय हो तो वो एक बार नहीं आती। वो आने से कई दिनों पहले से आना शुरू हो जाती है।

सुदीप और अभिजात, होटल ललित के कांफ्रेंस हॉल में बैठे थे। सुदीप इस हॉल के एक कोने से दूसरे कोने में बेचैनी से टहल रहा था। सुदीप टहलते हुए बार-बार कमरे के बाहर देख रहा था। सुदीप और अभिजात दोनों ने ब्लैक सूट पहना हुआ था। सुदीप पिछले 20 मिनट में तीन कप कॉफी पी चुका था।

“मुझको सोचने के लिए एक घंटे का टाइम और चाहिए।” सुदीप ने पानी की बोतल का ढक्कन खोलकर पानी पीते हुए कहा।

“एक घंटे में क्या हो जाएगा?” अभिजात ने कुर्सी पर बैठे अपने लैपटॉप को बंद किया।

“यार, मुझे कुछ गड़बड़ लग रहा है।”

अभिजात अपनी सीट से उठा और सुदीप के कंधे पर हाथ रखकर बोला, “यार, हम तो यही चाहते हैं न कि बुक माइ ट्रिप इंडिया की सबसे बड़ी ट्रेवल कंपनी बने और उसको बड़ा बनाने के लिए पैसा चाहिए। पैसा बिना अपना शेयर बेचे आएगा नहीं।”

सुदीप अभी भी सोच रहा है। अभिजात ने टेबल के दूसरे कोने पर रखे कागज को उठाकर सुदीप के सामने रख दिया। सुदीप ने अपनी जेब से मॉन्ट ब्लांक पेन निकालकर कागज पर साइन कर दिए। साइन करने के बाद अभिजात ने हाथ में लिया और बोला, “डेट भी डाल दो।”

सुदीप ने डेट कन्फर्म करने के लिए अपने जेब में मोबाइल निकालने के लिए हाथ डाला।

इतने में अभिजात ने कहा, “9-10-11 (9 अक्टूबर 2011)”

डेट लिखते हुए सुदीप को याद आया कि चित्रा से मिले हुए उसे एक साल हो गया। इधर अभिजात ने किसी को कॉल किया और बोला, “डील डन।”

दो मिनट के भीतर ही 2-3 सूट पहने हुए लोग कमरे में घुसे और दोनों को बधाई देने लगे। इसके बाद उनमें से एक आदमी ने प्रेजेंटेशन चला दी। जिसमें बुक माइ ट्रिप के बिजनेस को बढ़ाने के लिए कुछ सजेशन थे। अभिजात सब कुछ बहुत ही ध्यान से सुन रहा था और सवाल-जवाब भी कर रहा था। उधर सुदीप बिलकुल चुपचाप बैठा था। हालाँकि, ऐसा होता नहीं था। सुदीप चुप था। उदास था। दो घंटे में प्रेजेंटेशन खत्म हुई। अभिजात ने बताया कि शाम को इन्वेस्टर्स के साथ डिनर पार्टी रखी है। सुदीप का डिनर के लिए जाने में कोई इंटरेस्ट नहीं था।

प्रेजेंटेशन के बाद एक फोटोग्राफर कमरे में आया। उसने सुदीप की इन्वेस्टर से हाथ मिलाते हुए फोटो खींची। यही तस्वीर अगले दिन के इकॉनमिक टाइम्स की तस्वीर बनी। जिसकी हेडलाइन थी कि सुदीप यादव ने अपने 15% शेयर, 200 करोड़ में बेचे। तस्वीर में सुदीप जैसे

खुश था उसको देखकर अंदाजा लगाना मुश्किल था कि तस्वीर के पीछे का सुदीप अंदर से कितना उदास था। उसको यह विश्वास था कि वह एक दिन अपनी कंपनी के शेयर दुबारा खरीद लेगा। फिलहाल कंपनी चलाने के लिए यही सबसे जरूरी था।

सुदीप के ट्विटर और फेसबुक प्रोफाइल से भी एक ऑफिशियल स्टेटमेंट आया जिसका कुल इतना मतलब था कि बुक माइ ट्रिप के साथ इन्वेस्टर आने से कंपनी अपना मिशन जल्द ही पूरा करेगी। बुक माइ ट्रिप अगले कुछ सालों में इंडिया की नंबर एक ट्रेवल कंपनी बन जाएगी।

सुदीप शाम को डिनर पर मिलने का बोलकर ललित होटल से निकल गया। फ्री होते-होते शाम के करीब 4 बज चुके थे। उसने कार में बैठते ही चित्रा को फोन किया। चित्रा को फोन का इंतजार था।

"सामान पैक कर लो, चलते हैं।"

"ऐसे कोई फोन करता है! न हाय न हैलो, साल भर से कोई हाल भी नहीं लिया!" चित्रा ने टोंट मारते हुए कहा।

"ये सब बातें मिलकर करना, 8 बजे कनॉट प्लेस पर मिलो।"

"मैं दिल्ली में नहीं हूँ। तुम्हें आने से पहले बता तो देना था।"

"वो जो किताब में लिखा था कि 10 अक्टूबर को मिलो वो ऐसे ही लिखा था। खैर, तुम हो कहाँ मैं आ जाता हूँ?" सुदीप ने पूछा।

"आज कोई 10 तारीख थोड़े है। बात 10 तारीख को मिलने की हुई थी। मैं कल आ रही हूँ कल मिलते हैं। मैं कैंची धाम आई हूँ, उत्तराखंड में।"

"एक काम करो, तुम वहीं रुको मैं वहीं आता हूँ। कल मिलते हैं।"

दोनों में से किसी ने फालतू के सवाल नहीं पूछे जो अक्सर लड़के और लड़कियाँ दोनों ही पूछ लेते हैं। जैसेकि क्यों मिलना है? हमें ऐसे नहीं मिलना चाहिए? मिलकर क्या होगा? इत्यादि।

कोई लड़की या लड़का अगर पूछे कि क्यों मिलना है और सामने वाला अगर उसका बिलकुल ठीक-ठीक जवाब दे दे तो उससे कभी नहीं मिलना चाहिए। अगर कोई बोले कि 'मिलकर देखते हैं', उससे जरूर मिलना चाहिए। मिलकर देखने में एक उम्मीद है कुछ ढूँढ़ने की, थोड़ा रस्ता भटकने की, थोड़ा सुस्ताने की। उम्मीद इस बात की भी कि नाउम्मीदी मिले लेकिन इतना सोच-समझकर चले भी तो क्या खाक चले!

चित्रा और सुदीप दोनों ही कॉलेज के लड़का-लड़की तो थे नहीं, जिनको जिंदगी में पहली बार प्यार हुआ हो। चित्रा और सुदीप कोई प्यार होने की वजह से मिल भी नहीं रहे थे। एक वक्त के बाद प्यार में गुदगुदी होना बंद हो जाता है लेकिन गुदगुदी में थोड़ा बहुत प्यार हमेशा बचा रहता है। चित्रा और सुदीप दोनों ही अपना रास्ता भले न जानते हों अपना गलत-सही जानते थे।

सुदीप डिनर में बस शक्ल दिखाने के लिए आया और निकल गया। उसे रात भर में कैंची धाम पहुँचना था। दिल्ली से कैंची धाम की दूरी करीब 8 घंटे की थी।

10 अक्टूबर 2011
कैंची धाम, उत्तराखंड, सुबह 6 बजे

सुदीप नीम करौली बाबा के आश्रम के मेन गेट के बाहर खड़ा था। आस-पास की दुकानें अभी खुली नहीं थीं। चित्रा सामने से आ रही थी। सुदीप को मुंबई के मौसम की आदत हो चुकी थी। इसलिए उसको वहाँ की हल्की-हल्की ठंड बहुत अच्छी लग रही थी।

चित्रा ने सुदीप को गले लगाया। 2010 के 10 अक्टूबर ने 2011 के 10 अक्टूबर को गले लगाया। चित्रा की छोटी उँगली ने सुदीप की छोटी उँगली से उसका हाल पूछा।

सुदीप ने आश्रम देखा। वहाँ मुँह-हाथ धोया। नीम करौली बाबा के बारे में जितनी ही कम जानकारी है उतनी ही ज्यादा उनके बारे में कहानियाँ हैं। कुछ लोग उनको हनुमान जी का भक्त मानते हैं, कुछ कहते हैं कि वह खुद हनुमान थे। ऐसी मान्यता थी कि हिप्पी मूवमेंट के समय में नीम करौली बाबा विदेशियों में सबसे ज्यादा पॉपुलर थे। स्टीव जॉब्स अपनी भारत यात्रा के दौरान उनके आश्रम आया था। हालाँकि, स्टीव जॉब्स का बाबा से मिलना नहीं हो पाया था। बाबा ने सन् 1973 में अपना शरीर छोड़ दिया था।

सुदीप के आश्रम से लौटने तक पास में एक दुकान खुल चुकी थी। दुकान पर एक 18-19 साल की लड़की थी। सुदीप का चाय पीने का बहुत मन हुआ। उसने उस लड़की से चाय देने के लिए कहा और पूछा, “बाबा ऐसा क्या करते थे कि अमरीका से इतने लोग आते हैं? बाबा कोई चमत्कार भी करते थे क्या?”

लड़की बोली, “बाबा अब भी आते रहते हैं।”

लड़की ने यह इतने सीरियस तरीके से कहा कि जैसे उसने खुद बाबा को देखा हो। कायदे से सुदीप को इस बात पर हँसना चाहिए था लेकिन वह हँसा नहीं। लड़की ने चाय देते हुए कहा, “फेसबुक को जिसने बनाया था कुछ मार्क करके नाम है।”

“मार्क जकरबर्ग।”

“हाँ वही, वो भी 2-3 साल पहले यहाँ आया था।”

चित्रा और सुदीप अभी तक करीब-करीब चुप ही थे। एक साल की दूरी के बाद बात शुरू होने में कुछ समय तो लगता है। चाय पीकर सुदीप ने पूछा, “तो क्या प्लान है फिर?”

“तुम्हारे पास टाइम कितना है उस पर डिपेंड करता है। वैसे नैनीताल गए हो कभी, यहाँ से बस 17-18 किलोमीटर दूर है?” चित्रा ने पूछा।

“चलो, सामान ले लो। टाइम का बाद में देखते हैं। आज का दिन तो है।”

चित्रा सुदीप को बताकर गई कि जितनी देर में वह सामान लेकर आ रही है उतनी देर में वह नीम करौली बाबा के मंदिर में हो ले। सुदीप ने जल्दी-जल्दी में आश्रम का चक्कर लगाया और आश्रम के अंदर से कोसी नदी को बहते हुए देखने लगा। नदी को बहते हुए देखना ऐसे कोई

बड़ी बात नहीं लेकिन नदी को बहते ही बहुत ध्यान से देखने पर एक मोमेंट आता है जब नदी रुक जाती है और बाकी सब कुछ पीछे छूटने लगता है। इसको साइन्स की नजर से देखें तो यह बहुत छोटी-सी बात है लेकिन अगर एक मिनट को साइंस भूल जाएँ तो नदी का बहना बहुत बड़ी बात है। नदी और जिंदगी दोनों बहती हैं और दोनों ही धीरे-धीरे सूखती रहती हैं।

सुदीप कार से आया हुआ था। उसने ड्राईवर को वहीं छोड़ दिया। वैसे भी नैनीताल जाने के लिए थोड़े एक्सपेर्ट ड्राईवर लगते हैं। सुदीप के लिए ये सब दिक्कतें कुछ थीं ही नहीं।

सुदीप ने जैसे ही पहाड़ के लिए अलग ड्राईवर लिया, चित्रा ने कहा, "ड्राईवर की जरूरत नहीं है। मैं चला लूँगी।"

सुदीप को थोड़ा ताज्जुब हुआ।

"पक्का, मार तो नहीं डालोगी?" सुदीप ने पूछा

"मैंने पहाड़ों में बहुत कार चलाई है। चिंता मत करो। और मर भी जाओगे तो क्या! तुम्हारे मरने की तो न्यूज बनेगी हमारा क्या है! किसी को पता भी नहीं चलेगा कि चित्रा पाठक स्वर्ग सिधार गईं।"

सुदीप कार में बैठकर अपनी बेल्ट लगाते हुए बोला, "मैंने नैनीताल के सबसे अच्छे होटल में दो कमरे बुक कराने के लिए अपनी टीम को बोल दिया है।"

"नैनीताल जा कौन रहा है?"

"तुमने बोला तो कि हम नैनीताल जा रहे हैं।"

"हाँ बोला था लेकिन नैनीताल में इतनी भीड़ होती है कि मजा नहीं आएगा।"

चित्रा ने कार चलाना शुरू करते हुए एक-दो झटके दे दिए थे। "चिंता मत करो खो नहीं जाओगे। कहीं तो ले ही जाऊँगी तुम्हें।"

सुदीप अभी चित्रा के नए प्लान के साथ एडजस्ट कर ही रहा था कि चित्रा ने पूछा, "तो मिस्टर मिलियनेयर! ये बताओ कि पूरे एक साल में दो सबसे बड़ी चीजें क्या हुईं तुम्हारे साथ?"

"पहली चीज, एक गर्लफ्रेंड बन गई।"

"क्या नाम है। करती क्या है?"

"सुनयना, ऑफिस में ही बिजनेस हेड है।"

"गुड, दूसरी चीज?"

"दूसरी चीज, मैंने अपने 15% शेयर कल बेच दिए।"

"शेयर बेच दिए तुमने?"

"कोई और ऑप्शन नहीं था। खैर, ये सब छोड़ो अब तुम बताओ।"

"मेरी लाइफ में कुछ नया नहीं यार, पिछले हफ्ते जाकर नॉवेल का पहला ड्राफ्ट पूरा हुआ है। लेकिन मुझे मजा नहीं आ रहा।"

"अच्छा ये तो बता दो, हम जा कहाँ रहे हैं?" सुदीप ने चित्रा को कोहनी मारते हुए पूछा।

"सोनापानी गाँव, मुक्तेश्वर के पास।"

“कितनी दूर का रास्ता है? वहाँ जाने की कोई खास वजह?” सुदीप अपने मोबाइल पर गूगल मैप्स से वहाँ तक की दूरी देखने की कोशिश करता है लेकिन मोबाइल में सिग्नल आने बंद हो चुके थे।

“हाँ, वहाँ मोबाइल के सिग्नल नहीं आते और वहाँ से हिमालय एकदम साफ दिखता है। एक बात और है, मेरी किताब में हीरो-हीरोइन वहीं पहली बार मिलते हैं।” ये बताते हुए चित्रा ने कार जोर से मोड़ी और सुदीप को पहली बार शक हुआ कि चित्रा को कार चलाना उतना अच्छे से नहीं आता।

सुदीप अच्छा-खासा थका हुआ था, लेकिन चित्रा से मिलकर उसको अच्छा लग रहा था। पहाड़ों की हवा हल्के-हल्के दोनों के चेहरों पर पड़ रही थी। पहाड़ की हवा थकान मिटा देती है।

एक मोड़ पर छोटी-सी दुकान पर रुककर उन्होंने चाय पी, पकौड़ियाँ खाईं। सुदीप ने वहाँ पर मिनरल वाटर के लिए पूछा तो चित्रा बोली— “एक दिन मिनरल वाटर नहीं पियोगे तो मर नहीं जाओगे।”

इसके बाद चित्रा एक छोटे से कॉटेज में सुदीप को ले गई। कॉटेज में जाकर उसने बाकायदा रूम के लिए मोलभाव किया। उसने स्टाइल मारते हुए कहा भी कि पिछली बार तो आपने इतना ही लिया था! अब इतना महँगा कर दिया! खैर, कॉटेज की खिड़की से बाहर पहाड़ कम आसमान ज्यादा दिख रहा था।

सुदीप ने कमरे में अपना सामान रखा और जूते खोलकर बेड पर पैर रखकर बैठ गया। चित्रा ने अदरक वाली चाय बनाने के लिए होटल वाले को बोला।

कमरे में एक अजीब-सी हिचकिचाहट थी। प्यार में सब कुछ आसान होता है, सब पता होता है कि अब क्या करना है लेकिन सुदीप चित्रा से और चित्रा सुदीप से कोई प्यार तो करते नहीं थे। इसलिए उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि बातें खत्म होने के बाद, बात क्या करनी होती है।

असल में प्यार को हमने जिंदगी में जरूरत से ज्यादा जगह दे रखी है। हमें प्यार से जगह बचाकर कभी-कभार ऐसे ही शहर से दूर चले जाना चाहिए, जहाँ रिश्ते में प्यार तो हो लेकिन प्यार का नाम न हो।

थोड़ी देर में ही चाय आ गई। सुदीप ने चाय के कप को पूरी हथेली से पकड़ते हुए कप की गर्मी को छुआ। मौसम ठीक-ठाक ठंडा था। चाय पीने के बाद चित्रा उठी और सामने खिड़की पर जाकर खड़ी हो गई। कमरे की बातें बार-बार चुप हो जा रही थीं।

सुदीप ने पूछा, “तो तुम्हारी किताब में पहली बार हीरो, हीरोइन से किस बात से बात शुरू करता है?”

चित्रा ने वहीं खिड़की से हँसते हुए कहा, “वो पहली बार कुछ बोलते ही नहीं। बस एक-दूसरे को देखते हैं।”

“कभी तो बात शुरू करते होंगे! जब करते हैं तब क्या करते हैं?” सुदीप ने अपना कप

पास में पड़ी टेबल पर रखते हुए पूछा।

“हीरोइन हीरो के कमरे का दरवाजा रात के 1 बजे खटखटाकर पूछती है कि क्या वो उसके कमरे में आकर सो सकती है? उसको अकले डर लग रहा है।”

“हे भगवान! कैसी किताब लिख रही हो तुम, चीप टाइप!” सुदीप हँसते हुए कहता है।

“इसमें क्या बुरी बात है, किसी को भी डर लग सकता है!”

“खैर, ये बताओ। तुम्हारे हीरो-हीरोइन जिंदगी में कुछ करते भी हैं या बस फिल्मों के जैसे गाना गाते हैं और पहाड़ों पर घूमते हैं?”

“मैं कुछ नहीं बता रही, तुम मजाक उड़ाओगे।” चित्रा ने थोड़ा-सा नखरा दिखाते हुए कहा।

“अच्छा ठीक है नहीं पूछूँगा, इतना तो बता दो कि कहानी के एंड में वो मिलते हैं।”

“मैं कुछ भी नहीं बताऊँगी तुमको। हर चीज का मजाक उड़ाते हो तुम।”

इसके बाद चित्रा ने अपने बैग से किताब की मैनुस्क्रिप्ट निकाली और सुदीप की ओर बढ़ाते हुए कहा कि अगर मन करे तो पढ़ लेना।

“किताब की लेखिका सामने बैठी है फिर भी कहानी पढ़नी पड़ेगी! इतना काम कराओगी तुम?” सुदीप ने मैनुस्क्रिप्ट पलटते हुआ कहा।

“मन करे तो पढ़ना नहीं तो कोई जबरदस्ती नहीं है।” चित्रा ने कहा।

“अच्छा ये बताओ, कितना थके हो? अगर कम थके हो तो पास में कहीं आवारागर्दी करने चलें?” चित्रा ने बाहर देखते हुए पूछा।

“थोड़ी देर में चलें, रात में सही से नींद नहीं आई? एक दो-घंटे सो लूँ?” सुदीप ने अपना मोजा उतारकर बेड पर लेटते हुए कहा।

चित्रा यह कहकर कमरे से निकल गई कि वह कुछ देर बाहर घूमकर आ जाएगी। उतनी देर वह सो जाए। तय यह हुआ कि दोनों दिन में आवारागर्दी करने जाएँगे।

जितनी देर के लिए सुदीप सोया उतनी देर में चित्रा ने बाहर निकलकर आस-पास वालों से दोस्ती करके होटल वाले से उसकी बाइक ले ली थी।

चित्रा करीब 1.30 बजे कमरे में घुसी और सुदीप को उठाना शुरू किया। सुदीप बहुत गहरी नींद में था। उसने कई बार सुदीप के कान में फुसफुसाकर उसको उठाने की कोशिश की लेकिन सुदीप पर कोई असर नहीं हुआ।

उसको सोता देखकर कायदे से चित्रा को सुदीप का सिर सहला देना चाहिए था लेकिन वे कोई प्यार में थोड़े थे। चित्रा ने सुदीप का कंबल हटाया और अपने मोबाइल पर तेज आवाज में गाने बजा दिए। चित्रा की इतनी मेहनत के बाद कहीं जाकर सुदीप पर हल्का-फुल्का असर हुआ। वह थोड़ा डिस्टर्ब हुआ और अपना कंबल वापस खींच लिया।

इस बात पर अब चित्रा को गुस्सा आ गया। उसने सुदीप को जोर से हिला दिया। फिर चित्रा को लगा कि रात भर ट्रैवल करके आया है, इसको अभी उठाने का फायदा नहीं है। सुदीप को

आधे घंटे और सोने दिया जाए। उतनी देर में वह नहा-वहा लेगी।

चित्रा ने नहाने के दौरान अपने आप को शीशे में ध्यान से देखा। उसको अपने माथे से दाईं तरफ एक सफेद बाल दिखाई दिया। आधे घंटे बाद जब चित्रा नहाकर निकली तब जाकर सुदीप की नींद खुली। आँख खुलते ही उसने पूछा कि कितने बजे हैं।

“आज का पूरा दिन निकल गया।”

सुदीप ने उठकर सबसे पहले अपना मोबाइल चेक किया। अब भी मोबाइल में एक भी सिग्नल नहीं था।

“अब जल्दी से नहा लो। 2 बजने वाले हैं। मैंने बाइक का इंतजाम कर लिया है।”

सुदीप आराम से उठकर नहाया। उसको जब बाथरूम में 15 मिनट हो गए तो चित्रा बाहर से चिल्लाई, “लड़कियाँ भी बाथरूम में इतनी देर तक नहीं नहातीं।”

सुदीप अंदर से चिल्लाया, “ये क्या बात हुई! लड़के भी देर तक नहाते हैं!”

बाथरूम चूँकि छोटा था और पूरा गीला हो चुका था, इसलिए सुदीप अब कपड़े अंदर नहीं पहन सकता था और ठंड भी बहुत लग रही थी उसे। वह अंदर से ही चिल्लाया कि चित्रा बाहर चली जाए। वह कपड़े कमरे में आकर पहनेगा।

चित्रा बहुत जोर से हँसी और दरवाजे के पास आकर चिल्लाई “कितने फट्टू हो तुम! मैंने खिड़की की तरफ मुँह कर लिया है। आ जाओ।”

सुदीप बाथरूम का दरवाजा खोलते ही देखता है कि चित्रा सामने बेड पर बैठे कोई किताब पढ़ रही है। सुदीप ने कमरे में आकर कपड़े पहने और अपने बाल बनाने लगा। बाल बनाते हुए जब उसको 2 मिनट से ज्यादा हो गए तब चित्रा बोली, “ज्यादा बाल बनाने से सुंदर नहीं दिखने लगोगे।”

सुदीप ने यह सुनकर बीच में ही बाल बनाना बंद कर दिया और चित्रा की तरफ जोर से घूरा। दोनों ने कमरे से निकलकर पहले तो लंच किया। फिर बाइक पर बैठकर पहाड़ों में निकल गए। यह बताने की बात नहीं है कि बाइक चित्रा ही चला रही थी।

वे थोड़ी देर में एक सुनसान सड़क पर थे, जहाँ पर सब कुछ सुनाई पड़ रहा था, हवा, जानवर, खामोशी सब कुछ। सामने सूरज डूबने में अभी कुछ देर थी। दोनों वहीं सीमेंट के चबूतरे पर बैठ गए।

“ये जहाँ तुम बैठ रहे हो, यहीं पर मेरी किताब में हीरोइन पहली बार हीरो का हाथ पकड़ती है।”

“ऐसा क्या खास है इस कोने में और तुम ये कैसी किताब लिख रही हीरो-हीरोइन वाली? कुछ अच्छा क्यों नहीं लिखती? हीरो-हीरोइन वाली कहानी सुनते ही बोरिंग लगती है।”

“खास बात ये है कि यहाँ उसने पहली बार हीरो को छुआ था। पहली बार छूने की वजह से ये जगह इंपोर्टेंट है। मैं कैसी कहानियाँ लिखती हूँ, एक बार बुक आ जाये न तब तुम देखना।” चित्रा ने आराम से अपने-आप को चबूतरे पर एडजस्ट करते हुए कहा।

“तुम्हारी किताब के हीरो-हीरोइन प्यार करने के अलावा कुछ नहीं करते न?” सुदीप ने थोड़ा-सा टोंट कसते हुए कहा।

“बहुत कुछ करते हैं। वो प्यार तो करते हैं लेकिन दोनों मानना नहीं चाहते।”

“कोई नहीं पढ़ेगा किताब।”

“अच्छा, अभी चुप हो जाओ।”

“क्यों?”

“सामने देखो, सूरज डूब रहा है। सूरज को डिस्टर्ब मत करो।”

उनके पास से बहती हुई हवा, सूरज को धीरे-धीरे बुझा रही थी। बुझते-बुझते सूरज उदास था क्योंकि उसको शायद पता था कि शहर के जिस कोने में दोनों आज शाम बैठे हैं वहाँ कल नहीं होंगे। सूरज से मुलाकातें होती रहेंगी लेकिन उनका अपना कोना खो जाएगा। चित्रा और सुदीप साथ-साथ रहें-न-रहें उनके बीच का कुछ-न-कुछ हमेशा खोता रहेगा। दूर कहीं कोई बूढ़ी औरत एक पहाड़ी गाना गा रहा थी जिसका मतलब दोनों को ही नहीं पता था। सूरज को भी उस गाने का मतलब नहीं पता था लेकिन वो इतनी बार यह गाना सुन चुका था कि उसे वो गाना याद हो गया था ठीक वैसे जैसे बच्चे को लोरी याद पहले होती और समझ बहुत बाद में आती है। सूरज के लिए दुनिया एक दिन और पुरानी हो गई थी। चित्रा और सुदीप के लिए दुनिया में होने का मतलब बस शाम को डूबते सूरज को देखकर चिपककर टहलना भर था।

चित्रा और सुदीप दो दिन वहाँ रुके और दोनों दिन वे शाम इसी जगह पर आकर बैठे। दो दिनों के दौरान वे कुछ देर बातें करते, कुछ देर चुप हो जाते। जितनी देर चुप होते उनको ऐसा ऑकवर्ड नहीं लगता।

मुक्तेश्वर, जहाँ सुदीप और चित्रा रुके थे, वहाँ पर एक म्यूजिकल बैंड रुका हुआ था। अपने-अचने घरों को काफी पीछे छोड़ आए लड़के-लड़कियाँ। ये लोग शाम को आग जलाकर चारों ओर बैठ जाते। कोई कहानी सुनाता तो कोई कविता तो कोई गाना। किसी के पास दुनिया घूमने के किस्से थे तो किसी के पास हिमाचल के किसी छोटे से गाँव में रहने वाली दुनिया की सबसे खूबसूरत बच्ची की कहानी। अगर कोई उन लड़के-लड़कियों से दुनिया का सबसे घिसा हुआ सवाल पूछता कि और बताओ तो हर किसी के पास बताने को बहुत कुछ था। उनकी कहानियों, कविताओं और गानों में रिसॉर्ट के सभी लोग खो जाते। जिसका जितना मन होता वह एक झोले में पैसे डाल देता। सुदीप ने सबसे नजर बचाकर उनके झोले में 1 लाख रुपये का चेक रख दिया था। जिंदगी का एंड ऐसा ही होना चाहिए, जब गाना बजाना चल रहा हो और जब अगले दिन की सुबह का इंतजार न हो।

चलने से पहले सुदीप ने अगले साल का कोई वादा नहीं लिया। चित्रा ने अगली बार मिलने की कोई बात नहीं की। सुदीप को मुंबई लौटना था। चित्रा को दिल्ली रुकना था।

दिल्ली एयरपोर्ट के बाहर चित्रा सुदीप को छोड़ने आई। सुदीप ने जाने से पहले अपने बैग से वही मुराकामी की किताब निकाली। इससे पहले वह चित्रा की ओर किताब बढ़ाता, चित्रा ने

अपने-आप किताब लेकर उसके आखिरी पन्ने पर 10 अक्टूबर 2012 की तारीख लिख दी और पूछा, “ये किताब क्यों लाए हो? अभी तक पूरी नहीं पढ़ पाए?”

“नहीं।”

सुदीप ने किताब हाथ में ली, तारीख देखी और बोला, “मुझे मालूम है अगले एक साल में तुम बहुत बड़ी राइटर चुकी होगी। एक साल में भूल मत जाना।”

चित्रा ने इसके जवाब में कुछ नहीं कहा। आगे बढ़कर सुदीप को गले लगा लिया। सुदीप ने एयरपोर्ट में अंदर घुसते हुए अपनी सेक्रेटरी को कॉल किया और उसको 10 अक्टूबर का अपॉइंटमेंट फिक्स करने के लिए इंस्ट्रक्शन दिए। सेक्रेटरी चौंकी क्योंकि 10 अक्टूबर तो बीत चुका था। तब सुदीप को अपनी गलती का एहसास हुआ। उसने अपनी असिस्टेंट को समझाया कि अगले साल के 10 अक्टूबर को शाम 6 बजे चित्रा के नाम पर ब्लॉक कर दी जाए।

एयरपोर्ट में बैठकर सुदीप ने अपना मोबाइल का डाटा ऑन किया। इतने ज्यादा नोटिफिकेशन थे कि फोन थोड़ी देर के लिए हैंग हो गया।

इधर चित्रा एयरपोर्ट के पास से बस लेकर अपने घर में पहुँची। घर के बाहर 9-10 दिन के पेपर इकट्ठा थे। उसने सरसरी निगाह पेपर पर डाली। एक पन्ने पर सुदीप के शेयर बेचने वाली खबर की फोटो भी थी।

चित्रा का घर बहुत छोटा-सा था। एक छोटा-सा हॉल था जिसमें धूप आ रही थी। एक छोटी-सी किताब की अलमारी साथ में पढ़ने-लिखने वाला टेबल था। रंग-बिरंगे कई तरह के पेन, स्केच, कई तरह की नोटबुक। दो-तीन अधूरी पड़ी हुई मैनुस्क्रिप्ट। चित्रा कई दिन बाद घर लौटी थी। घर अच्छा-खासा गंदा था। उसने पहले घर की सफाई की। फ्रिज खोलकर देखा तो उसमें कुछ था नहीं। वह मैगी और ब्लैक कॉफी लेकर बैठी और अपनी डायरी में 10 अक्टूबर 2012 की तारीख के आगे ‘मिटिंग विथ सुदीप’ लिख दिया। वह अपने छोटे से घर की सफाई तब तक करती रही जब तक थक नहीं गई। अकेले रहना आसान बनाने में बड़ी मुश्किलें आती हैं। बहुत छोटी-छोटी मुश्किलें जैसे जिस दिन दरवाजा खोलने का मन नहीं करता उस दिन सबसे ज्यादा घंटी बजती है। कभी-कभी जिंदगी से बस इतना ही चाहिए होता है कि कोई दरवाजा खोलने वाला हो। चित्रा को पता था तो कि उसे चाहिए क्या लेकिन पता होने के बाद भी रास्ता चल पाना इतना आसान होता तो चित्रा की किताब अब तक आ चुकी होती।

एक साल बाद

10 अक्टूबर 2012
दिल्ली, इंडियन बुक हाउस पब्लिशर ऑफिस

एक 40 साल की महिला जिसके बाल घुँघराले लेकिन छोटे थे। नाक में बड़ी-सी बाली। फीचर एकदम शार्प। साँवली। कॉफी मशीन से अपने हिसाब से कॉफी बनाकर केबिन में घुसी जहाँ चित्रा बैठी हुई थी। चित्रा ने अपने बाल छोटे करा लिए थे। गले में एक बैगनी दुपट्टा पहना था। एक साल में वह थोड़ी-सी मोटी हुई थी। आँखों पर एक चश्मा आ गया था जो उसको और भी सुंदर बना रहा था।

चित्रा उस महिला के आने पर कुर्सी से उठी, "हाय रुचिका!"

"हाय चित्रा। कॉफी?"

"नो। थैंक्स।"

रुचिका ने चित्रा को बैठने का इशारा किया।

चित्रा ने पिछले एक साल में जिस भी पब्लिशर को अपनी किताब भेजी उतनी जगह से रिजेक्शन आ चुका था। वह अपनी किताब छपने की उम्मीद करीब-करीब खो चुकी थी। उधर चेतन भगत की किताब What Young India Wants भी आ चुकी थी। उधर आमिश त्रिपाठी की तीन पार्ट सीरीज की आखिरी किताब The Oath of the Vayuputras फरवरी 2013 में आने वाली थी। जिसके बारे में यह खबर थी कि पब्लिशर ने करीब 5 करोड़ रुपये की एडवांस रॉयल्टी दी थी। उधर एक नये राइटर रविंदर सिंह की किताब I Too Had A Love Story को पैंग्विन पब्लिशर ने दुबारा छापा था। रविंदर की किताब मार्केट में आने के बाद से लगातार बिक रही थी।

चित्रा लिखने में कैसी थी, कैसी नहीं थी यह तो वैसे भी समय बताने वाला था लेकिन उसके मन में कहीं-न-कहीं यह बात बैठती जा रही थी कि शायद वह यह सब कर ही नहीं पाएगी। उसको लगने लगा था कि वह पीछे छूट गई है।

लाइफ इतनी भी आसान नहीं थी। उसकी सेविंग के पैसे धीरे-धीरे कम हो रहे थे। उसने एक-दो न्यूजपेपर के लिए लिखना शुरू किया था लेकिन उसमें उसका मन नहीं लगता था।

रुचिका ने बिना एक भी सेकंड गवाएँ कहा, "चित्रा, एक गुड न्यूज है और एक बैड न्यूज।"

चित्रा ने अपना सिर थोड़ा-सा झुकाया और मुस्कुराने की कोशिश की। रुचिका ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "मुझे तुम्हारी राइटिंग पसंद है। तुम्हारी राइटिंग में एक फ्लो है।"

चित्रा ने पूछा कि यह गुड न्यूज है या बैड न्यूज। रुचिका ने एक सिप कॉफी लेते हुए कहा, "हम तुम्हारी किताब इस साल नहीं छाप रहे लेकिन एक राइटर हैं जिसका नाम मैं अभी नहीं बता सकती। अगर तुम उनकी किताब के लिए घोस्ट राइटिंग* करो तो बहुत पैसे मिल सकते हैं। तुम आराम से सोच लो और मुझे बता दो।"

चित्रा को पैसों की जरूरत थी। चित्रा ने भारी मन से हाँ कर दिया। रुचिका ने चित्रा के सामने एक 2 पेज का MOU (Memorandum of Understanding) साइन करने के लिए बढ़ाया। जिसका कुल मतलब इतना था कि अगर चित्रा ने कभी उस राइटर का नाम डिसक्लोज किया तो उस पर भारी पेनाल्टी लग जाएगी।

चित्रा को एक बहुत बड़ी पॉपुलर लेखिका के लिए लिखना था। चित्रा को यकीन नहीं हुआ कि वो घोस्ट राइटिंग करवाती है।

चलने से पहले रुचिरा ने बताया कि अगले हफ्ते में वह उसकी मीटिंग करवा देगी और उसकी कमाई का 10% रुचिरा का होगा। रुचिरा अपनी खुद की एक कंपनी खोलना चाहती थी। उसको लगता था कि लिटरेरी एजेंट बनकर वह ज़्यादा पैसे कमा सकती है। इसीलिए वह चित्रा जैसे लेखकों की तलाश में रहती थी, जिनसे घोस्ट राइटिंग करवा पाए।

उधर पिछले एक साल में सुदीप ने अपने शेयर बेचने के बाद दिन-रात एक कर दिया था कि वह अपनी कंपनी खड़ी कर पाए। उसने अपने आप इतना काम ले रखा था कि उसको किसी भी चीज की फुर्सत नहीं थी। उसने अपने ईगो पर ले लिया था कि वह भी कंपनी चला सकता है। क्योंकि इससे पहले जितनी भी कंपनियों में उसने पैसा लगाया था उनमें से बहुत-सी कंपनियाँ अच्छा कर चुकी थीं।

सुदीप के मुंबई ऑफिस में सुबह 10 बजे बहुत ही इंपोर्टेंट मीटिंग थी। मीटिंग में जाने से पहले उसकी सेक्रेटरी ने दिन भर का शैड्यूल बताना शुरू किया। सेक्रेटरी ने पूछा,

“सर, शाम को 6 बजे मीटिंग विथ चित्रा लिखा है। इनकी कोई और डीटेल मेरे पास नहीं है।”

सुदीप को अब जाकर ध्यान आया कि आज 10 अक्टूबर है। उसने तुरंत ही चित्रा को फोन मिलाया। चित्रा का फोन उठा नहीं या यूँ कह लीजिए कि चित्रा ने फोन उठाया नहीं। वह घोस्ट राइटिंग के लिए हाँ बोलकर बहुत परेशान थी लेकिन पैसे की जरूरत ऐसी थी कि उसके पास कोई और ऑप्शन नहीं था। चित्रा अपने घर लौटकर चाय बनाकर अपनी लिखी हुई मैनुस्क्रिप्ट उलट-पलट रही थी। उसके सामने फोन दो बार पूरा-पूरा बजा। वह यही सोचकर फोन नहीं उठाई क्योंकि पिछले एक साल में वह कुछ नहीं कर पाई। उसको बार-बार सुदीप की बात याद आ रही थी।

“एक साल में तुम बहुत बड़ी राइटर बन चुकी होगी। एक साल में भूल मत जाना।”

चित्रा को रोना आ गया। इसी बीच उसके मकान मालिक का फोन आया कि दो महीने से उसने किराया नहीं दिया है, वह जल्द से जल्द किराया दे। चित्रा ने गुस्से में सामने रखा चाय का ग्लास उठाकर फेंक दिया। फेंकने के बाद याद आया कि घर में कोई बाई तो आती नहीं है, उसे ही साफ करना है। वह उठकर धीरे-धीरे ग्लास का एक एक टुकड़ा इकट्ठा करके रखने लगी। जिंदगी जब हद से ज्यादा उलझ जाए तो ऐसे ही टुकड़े-टुकड़े करके ही संभलती है।

उधर सुदीप का भी मीटिंग में मन नहीं लग रहा था। उसके एक इन्वेस्टर की टीम के कुछ

लोग सुदीप को समझा रहे थे कि कैसे उसको कंपनी को आगे ले जाना चाहिए। सुदीप उनकी बहुत-सी बातों पर अग्री नहीं कर रहा था।

चित्रा ने दिन के करीब एक बजे सुदीप को कॉल किया। सुदीप ने चित्रा का फोन देखकर अपना बोलना एक मिनट के लिए रोका और कॉल लेने के लिए मीटिंग रूम से बाहर निकल गया। वह निकल ही रहा था कि इतने में अभिजात ने इशारे में पूछा, "बहुत अर्जेंट है?"

सुदीप ने इशारे में जवाब दिया कि हाँ बहुत ही अर्जेंट है। उसके इस जवाब से अभिजात थोड़ा-सा खीजा लेकिन अपने चेहरे पर मुस्कराहट बनाए रखते हुए वह इन्वेस्टर का ध्यान इधर-उधर करने की कोशिश करने लगा।

चित्रा के कॉल से सुदीप ने मीटिंग रूम से बाहर निकलकर फोन लिया।

"तुम कहाँ हो, ठीक तो हो?"

चित्रा कुछ देर चुप रहने के बाद बोली, "क्या हम मिल सकते हैं?"

सुदीप को चित्रा के जवाब देने की टोन से समझ आ गया कि वह परेशान है। उसने कहा कि वह अपनी सेक्रेटरी का नंबर भेज रहा है, वह सब कुछ अरैंज कर देगी।

सुदीप ने अपनी सेक्रेटरी को मैसेज करके बोला कि चित्रा से बात करके शाम की फ्लाइट टिकट भेज दे और उसकी बुकिंग ताज में कर दे।

सुदीप अभी मीटिंग में ही था कि दिन के 2 बजे चित्रा का मैसेज आया, "See you in evening."

सुदीप ने जवाब टाइप किया, "Welcome to Mumbai."

सुदीप के ऐसे बीच में मीटिंग में उठ के जाने की वजह से कंपनी के बोर्ड ऑफ डाइरेक्टर और इन्वेस्टर को बुरा लगा लेकिन उन्होंने उस समय उसके सामने यह जताया नहीं। शाम को उन्हीं इन्वेस्टर के साथ पार्टी थी लेकिन सुदीप का पार्टी में जाने का कोई मूड नहीं था। सुदीप के करीबी दोस्त और कंपनी में पार्टनर अभिजात ने उसको समझाया भी कि ऐसा क्या इंपोर्टेंट है, थोड़ी देर आकर वह चला जाए। लेकिन सुदीप ने पार्टी में आने के लिए मना कर दिया। सुदीप को वैसे भी उसके काम में होने वाली दखलंदाजी ज्यादा पसंद नहीं थी। उसको कभी-कभी यह लगता था कि वह अपनी ही कंपनी में नौकरी कर रहा है। खैर, अभिजात की बात मानकर वह थोड़ी देर पार्टी में रहा लेकिन 9 बजते-बजते, ताज के लिए निकल लिया।

जाने से पहले सुदीप की गर्लफ्रेंड और कंपनी की बिजनेस हेड सुनयना ने भी सुदीप को समझाने की कोशिश की लेकिन सुदीप को कुछ समझना ही नहीं था। सुदीप के जाने के बाद अभिजात और सुनयना दोनों ही गुस्सा थे लेकिन वे सुदीप के मूड के आगे कुछ कर नहीं सकते थे।

जब से सुदीप ने शेयर बेचे थे तब से उसकी ऐसी हरकतें ज्यादा ही बढ़ गई थीं। सुनयना सुदीप की गर्लफ्रेंड है, यह बात बहुत ही कम लोगों को पता थी। सुदीप के कार में बैठते ही सुनयना ने उसको कॉल किया।

“यार सुदीप, तुम्हें क्या हो जाता है! इन्वेस्टर से बिना मिले तुम्हारा जाना हमारे लिए कितना ऑकवर्ड है!”

सुदीप ने सुनयना की बात दो-तीन मिनट तक सुनी फिर बोला, “मुझे इस बारे में कोई बात नहीं करनी।”

सुनयना ने गुस्से में फोन काट दिया। जब उसने फोन काटा, अभिजात उसके पास में ही खड़ा था। अभिजात ने सुनयना के कंधे पर हाथ रखा। दोनों मुड़कर इन्वेस्टर और बाकी इम्पोर्टेंट लोगों से ऐसे घुल-मिलकर, मुस्कुराकर बात करने लगे जैसेकि कुछ हुआ ही नहीं था। कोई सुदीप के बारे में कुछ पूछता तो सुनयना बता देती कि उसकी तबियत अचानक बहुत खराब हो गई थी।

हालाँकि, उसका ऐसे जल्दी निकल जाना बहुत लोगों को सही नहीं लगा। सुदीप ने इन सब पर कुछ ध्यान नहीं दिया। उसको अपने काम पर भरोसा था। यह भी भरोसा था कि एक दिन जो शेयर उसने बेच दिए हैं, वह उनको वापिस खरीद लेगा।

10 अक्टूबर 2012
ताज लैंड्स एंड, मुंबई

मुंबई में ताज की खिड़की से दिखते हुए सी-लिंक से ठीक पहले मोटर साइकिल पर टेक लगाए जोड़े दिखते हैं। उनके ठीक पीछे समंदर और समंदर के दूसरी तरफ साउथ मुंबई दिखता है। वो जोड़े एक-दूसरे को तमाम तरह से छूकर देख रहे होते हैं जैसे बच्चा गिर जाए तो माँ टटोलकर देखती है कि कहीं ज़्यादा तो नहीं लगी। मुंबई की सबसे अच्छी बात समंदर नहीं ये जोड़े हैं। कभी-न-कभी मुंबई में रहने वाला हर शक्स मुम्बई का बेचैन समंदर होना चाहता है जिसके पास बस इतनी जगह हो कि दो लोग आकर जी भर सुस्ता सकें।

होटल पहुँचते-पहुँचते सुदीप को रात के करीब 10 बज गए। चित्रा शाम 7 बजे से होटल रूम में थी। वह टहलकर शाहरुख खान के घर ‘मन्नत’ के बाहर तक चक्कर लगा आई। सुदीप ने मुंबई में घर नहीं लिया था। उसको घर लेकर रहने में अजीब-सी बेचैनी होती थी। उसके नाम से एक कमरा हमेशा ताज में बुक रहता था। सुदीप के कमरे में घुसते ही चित्रा ने उसको गले लगा लिया।

चित्रा ने ध्यान नहीं दिया लेकिन वह रो रही थी। सुदीप ने उसको सामने बैठाया और एक भी बार चुप होने के लिए नहीं कहा।

“यार, कुछ भी सही नहीं हो रहा। मेरी किताब कभी नहीं आ पाएगी। कभी-कभी मुझे रिगरेट होता है कि मैंने अपने पति को छोड़ा ही क्यों! आइ एम अ फेल्योर सुदीप।”

सुदीप चाहता तो बहुत कुछ समझा सकता था लेकिन उसने चित्रा को कुछ नहीं समझाया।

चित्रा थोड़ी देर बाद चुप हो गई।

उस शाम चित्रा को बस कोई ऐसा चाहिए थे जो बिना कुछ कहे, बिना कुछ सोचे बस उसको सुन पाए। सुन पाना इस दुनिया का सबसे मुश्किल काम है। लोग बीच में समझाने लगते हैं। उससे ही सब बात खराब हो जाती है।

कुछ देर बार सुदीप ने वहीं सामने फ्रिज से शराब की छोटी बोतल निकाली। एक-एक पेग बनाया। पेग पीने के बाद उसने चित्रा से बाहर टहलने चलने के लिए पूछा।

दोनों बैंड-स्टैंड पर आकर टहलने लगे। अक्टूबर के हिसाब से मौसम सही था। चित्रा अब कुछ हल्का महसूस कर रही थी।

"तुम बताओ काम कैसा चल रहा है? सुनयना से शादी कब कर रहे हो?"

सुदीप अपने काम के बारे में कोई बात नहीं करना चाहता था।

"शादी का तो अभी कोई प्लान नहीं है?"

"सुनयना कैसी है। उसको पता है कि तुम यहाँ हो?" चित्रा ने पूछा।

चित्रा अभी यह बोल ही रही थी, इतने में सुनयना का फोन आया। सुदीप का फोन पिक करने का मन नहीं था। चित्रा के बोलने पर उसने फोन उठाया। सुनयना का सुदीप से लड़ने का मूड था। वह पार्टी से निकलकर मिलने आने वाली थी। सुदीप ने उसको समझाया कि उसका अभी किसी से मिलने का मूड नहीं है। सुनयना फोन नहीं रखना चाहती थी लेकिन सुदीप को बात करनी ही नहीं थी। सुनयना के बार-बार बात करने की कोशिश के बावजूद भी सुदीप ने बस यही कहा कि कल सुबह बात करते हैं।

"सही से बात क्यों नहीं की तुमने?" चित्रा ने पूछा।

"ऐसे ही मन नहीं था।"

"उसको पता है कि तुम मेरे साथ हो?"

"नहीं, क्यों?"

"उसको बताना था। क्या पता वो गलत समझे।"

इस बात का सुदीप ने कोई जवाब नहीं दिया। बल्कि अब जाकर उसका ध्यान उसके नए लुक पर गया। उसने चित्रा के बाल छूकर उसके सिर को सहला दिया और बोला, "अच्छे तो थे, कटवा क्यों दिए?"

"बाल ट्रिम करवाकर बहुत हल्का लगा। ऐसा लगा कि सिर से कोई बोझ उतर गया, आजादी मिल गई।"

"तुम और तुम्हारे फंडे!" सुदीप ने जेब से सिगरेट निकाली और पीने लगा।

वे दोनों वहीं टहलकर थोड़ी दूर जाकर बैठ गए। लोग शाहरुख खान के घर के बाहर फोटो खिंचवा रहे थे। वहाँ शायद कोई पार्टी थी।

"कभी शाहरुख खान से मिले हो?" चित्रा ने पूछा।

"हाँ, बुक माइ ट्रिप का ब्रांड एम्बैसडर बनाने के लिए एक दो-बार मिले हैं। एक दो बार

पार्टी में मुलाकात हुई है। अगले महीने उसकी फिल्म आने वाली है 'जब तक है जान।' उसके प्रीमियर का इन्विटेशन आया हुआ है लेकिन मैं नहीं जाऊँगा।" सुदीप ने ऐसे जवाब दिया कि यह सब उसके लिए कितनी छोटी बातें हैं।

"कौन-कौन-सी हीरोइन से मिले हो?"

"बहुतों से, लेकिन मैं किसी भी हीरोइन से ज्यादा बात नहीं करता।"

"क्यों?"

"यार, एक-दो लड़कियाँ चेप हो चुकी हैं। बात क्या कर लो फिल्म में इन्वेस्ट करने के लिए बोलने लगती हैं। मुझे फिल्म में इन्वेस्ट करना नहीं है। अफेयर चलाने का टाइम नहीं है।" सुदीप ने दूसरी सिगरेट निकालते हुए कहा।

"अबे, चेप होती हैं तो हो जाने दो, तुम्हें क्या है?"

"हाँ मुझे क्या है। कल कोई मीडिया में गा देगी। एक के साथ सिंगापुर गया था। वहाँ शॉपिंग करते हुए साथ में फोटो डालने लगी। शॉपिंग करो, घुमो-फिरो, मौज-मस्ती करो लेकिन मेरी फोटो साथ में मत डालो यार। कोई नया फालतू का टेंशन नहीं चाहिए लाइफ में। केयरफुल रहना पड़ता है यार। बुक माइ ट्रिप पर मेरी वजह से कोई दिक्कत नहीं आनी चाहिए न! अब मेरा छोड़ो, तुम बताओ।"

चित्रा ने कुछ खास बताया नहीं। वह बस एक दिन के लिए अपनी लाइफ के बारे में भूलना चाहती थी। चित्रा और सुदीप जहाँ बैठे थे, वहीं पास में एक बच्चा खेल रहा था। वह बार-बार चित्रा के पास आ-जा रहा था।

वह मुंबई की आजादी को गले लगाकर देखती रही और सुदीप उसे ऐसे देख रहा था जैसे कोई सपना देखता है। ठीक ऐसे ही एक फुटकर से मोमेंट में उसने सुदीप को देखा, बस दो सेकेंड, बस। उस दो सेकंड को लिखने की फालतू-सी एक कोशश में लोग किताब लिख मारते हैं।

"कुछ न कुछ बोलते रहो, बात बंद हो भी जाए तो लगना यही चाहिए कि सब चल रहा है।"

सुदीप ने भी कुछ न कुछ बोलने के प्रेशर में पूछ लिया, "कैसी हो तुम"?

"इनसे खराब सवाल नहीं पूछ सकते थे तुम"?

वह उदास बातें करके सारी उदासी मिटा देती थी।

वैसे तो सुदीप और चित्रा अभी तक एक-दूसरे को सही से जानते नहीं थे। मसलन कि वो कौन-सा शैम्पू लगाती है, सुदीप को कौन-सा डियो पसंद है। उनको तो यह भी नहीं पता था कि वे वेज हैं या नॉन-वेज। दोनों ने एक-दूसरे को इम्प्रेस करने की कोई कोशिश कभी नहीं की थी।

रात के करीब 12 बजे सुदीप और चित्रा होटल लौटे। दोनों चित्रा के कमरे में थे। सुदीप अपने कमरे में जाने लगा। चित्रा ने सामने रखी कॉफी मशीन देखकर पूछा, "कॉफी?"

सुदीप ने कॉफी के लिए हामी भर दी। चित्रा उठकर बाथरूम में गई, उसने अपना मुँह

धोया। उसको अपना मुँह धोने के बाद और भी रोना आया। लौटकर टेबल पर कॉफी रखते हुए उसने पूछा,

"तो तुम्हारे रिटायरमेंट वाले प्लान का क्या चल रहा है?"

सुदीप को अपनी लाइफ की कोई भी बात करने का मन नहीं था। चित्रा ने सुदीप को बताया कि पिछले एक साल में उसने अपनी दो किताबें पूरी कर ली हैं।

सुदीप कॉफी पीकर अपने कमरे में जाने से पहले चित्रा से पूछा कि उसको रुपये-पैसों की कोई भी जरूरत तो नहीं है? चित्रा ने किसी भी मदद के लिए मना कर दिया। उसने कहा भी कि अगर कभी उसे ऐसा लगेगा कि मदद चाहिए तो वह बोल देगी। सुदीप को पता था कि चित्रा कभी मदद के लिए नहीं बोलेगी।

सुदीप दरवाजे के पास पहुँचकर चित्रा को बोलने ही वाला था कि उसे कल सुबह ही कलकत्ता जाना पड़ रहा है। वह यहाँ जितने दिन भी रुकना चाहती है, रुक सकती है। चित्रा ने उस शाम की आखिरी बात बोली, "तुम यहीं रुक जाओ।"

सुदीप 10 मिनट बाद अपने कमरे में जाकर चेंज करके आया। उसके हाथ में वही मुराकामी की किताब थी। उसने चित्रा की ओर किताब बढ़ाते हुए कहा कि डेट लिख दो।

चित्रा ने 10 October 2013 की तारीख लिख दी। सुदीप ने कहा हमेशा 10 अक्टूबर की तारीख डालती हो। तारीख बदलकर देखो, क्या पता किस्मत भी बदल जाए।

चित्रा ने तारीख के आगे लिखा, "With love, luck & light" और एक साइन कर दिया।

"देखना जब किताब आएगी तो मैं किताब पर यही वाला ऑटोग्राफ दिया करूँगी।"

सुदीप ने किताब को हाथ में लिया और उसके पास में 'आमीन' लिख दिया। किताब को पड़ोस में रखकर दोनों एक-दूसरे से चिपककर लेट गए। सुदीप ने बत्ती बंद कर दी। चित्रा ने कमरे के पर्दे हटा रखे थे। बाहर की रौशनी कमरे में जगह बनाने लगी। सुदीप और चित्रा दोनों को उस दिन बहुत अच्छी नींद आई।

सुबह चलने से पहले बहुत देर तक कुर्सी पर बैठकर चित्रा को ध्यान से देखता रहा। उसके चेहरे पर बहुत रौशनी पड़ रही थी, इसलिए उसने कमरे के पर्दे लगा दिए ताकि वह आराम से सो सके।

चित्रा के उठने से पहले तक सुदीप जा चुका था। उसने एक सिरहाने के पास शॉर्ट नोट छोड़ा हुआ था। जिसमें लिखा था—

"तुम्हारी पीठ पर मैं उँगली से किसी ऐसे शहर का नाम लिखना चाहता हूँ जहाँ हम दोनों न गए हों। मुझे नहीं मालूम कि हम तुम्हारी पीठ पर लिखे शहर कभी जा पाएँगे या नहीं। इसको पढ़कर जवाब में कुछ भी मत लिखना। बस जल्दी से अपनी किताब पूरी कर लो। जो शामें खो जाती हैं, वो बस अधूरी किताबों में मिलती हैं। थैंक्स फॉर कमिंग।

लव सुदीप।"

सुदीप ने नोट में लव लिखकर काटा हुआ था। चित्रा ने उस कटे हुए लव को दो-तीन बार छूकर टटोला।

---

* घोस्ट राइटिंग की स्थिति में जो लेखक किताब लिखता है उसका नाम नहीं आता बल्कि वह किसी और के लिए किताब लिखता है। जिसके एवज में बहुत पैसे मिलते हैं। हिंदुस्तानी टीवी की दुनिया में ऐसा बहुत प्रचलन में है।

एक साल बाद

10 अक्टूबर 2013, टोक्यो, जापान

सुदीप के बिजनेस में उसके इंडियन इन्वेस्टर की दखलंदाजी बहुत ज्यादा बढ़ गई थी। यहाँ तक कि उस पर यह दबाव डाला जा रहा था कि वह कंपनी के सीईओ के पद से रिजाइन कर दे। सुदीप यह लड़ाई किसी भी कीमत पर हारना नहीं चाहता था। इसलिए उसने जापान की कंपनी एस बैंक को फंडिंग के लिए एप्रोच किया था।

सुदीप, अभिजात और सुनयना अपनी इन्वेस्टमेंट फर्म 'एस बैंक' के हेड ऑफिस में बैठे थे। सुदीप को अपना बिजनेस बढ़ाने के लिए और रुपयों की जरूरत थी। थोड़ी देर में ही मीटिंग शुरू होने वाली थी। अभिजात और सुनयना अपने लैपटॉप में प्रेजेंटेशन फाइनल कर रहे थे। कमरे में 'एस बैंक' की तरफ से एक अमरीकन और एक हिंदुस्तानी आदमी बैठा था। सभी लोग 'एस बैंक' के चेयरमैन मियाजाकी सान का इंतजार कर रहे थे। आज बड़ा फैसला होना होना था क्योंकि अगर आज सुदीप को आगे बिजनेस बढ़ाने के लिए रुपये मिलते तो उनका प्रॉमिस था कि वो लोग अगले दो साल में इंडिया की नंबर 1 ट्रेवल कंपनी बन सकते थे।

मीटिंग शुरू होते ही अभिजात ने बोलना शुरू किया। उसने बताया कि कंपनी ने कुछ अच्छा किया है। उनका ट्रैफिक बढ़ भी रहा है। उसको प्रेजेंटेशन को बीच में रोककर मियाजाकी सान ने उनको बोला कि आपने तो इससे बहुत ज्यादा प्रॉमिस किया था। इसके जवाब में सुनयना और अभिजात ने समझाने की कोशिश की लेकिन उनकी बात से जापानी आदमी कन्विंस नहीं हुआ।

सुदीप उनकी बातचीत में अभी तक चुप था। मियाजाकी ने पूछा कि आप अपना ट्रेवल का बिजनेस कैसे बढ़ाएँगे?

इससे पहले कि अभिजात इसका जवाब देता। सुदीप अपनी सीट से खड़ा हुआ और मियाजाकी की तरफ देखकर समझाना शुरू किया।

"सर, मैं आपको यह समझाना चाहता हूँ कि हम लोग ट्रेवल बिजनेस हैं ही नहीं।"

सुदीप की यह बात सुनते ही पूरे कमरे में सब लोग सकते में आ गए। अभिजात और सुनयना एक-दूसरे को देखने लगे। उन्हें समझ ही नहीं आया है कि यह सुदीप क्या कर रहा है। सुदीप ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा,

"सर, अगर हम केवल एक ऐसी साइट हैं जो लोगों को एक पॉइंट से दूसरे पॉइंट तक ले जाती है। मतलब कि अगर हम केवल टिकट बेचने के बिजनेस में हैं, तो हमारा बिजनेस कभी ग्रो नहीं करेगा। हम लोग असल में एक्सपीरियंस बेचने के बिजनेस में हैं। कोई अगर दिल्ली से लद्दाख जाता है तो हमारा काम केवल उसको एक कार और ड्राईवर या एक बाइकर देने का नहीं है। हमारा काम है कि उस ट्रैवलर के पूरे ट्रिप के एक-एक मिनट का एक्सपीरियंस ऐसा रहे कि वो जिंदगी भर न भूल पाए और लौटकर अपने पूरे सर्किल में सबको बताए।"

सुदीप ने बिजनेस बढ़ाने के लिए कोई भी ऐसा वादा नहीं किया कि इतने रुपये का रिटर्न आ जाएगा। सुदीप का पॉइंट बहुत ही क्लियर था। उसने उस मीटिंग में मियाजाकी को समझाया कि दुनिया भर में ट्रेवल को लेकर रुझान बहुत बढ़ रहा है।

उसने आगे यह समझाया कि इंडिया में आज से 10 साल पहले बहुत कम लोग लद्दाख जाते थे लेकिन अब धीरे-धीरे लोगों ने जाना शुरू किया है। 90% में जो लोग पैदा हुए हैं वो सेव करके ट्रेवल करना चाहते हैं। यह सेम ट्रेंड यूरोप के देशों में पहले से था लेकिन इंडिया में यह सब पहली बार हो रहा है और आने वाले सालों में यह बहुत बढ़ने वाला है। सुदीप ने इंडिया की सारी बड़ी बाइक ट्रेवल कंपनी में स्टेक ले लिया था।

सुदीप की अपने बिजनेस को लेकर विजन और क्लैरिटी, अभिजात और सुनयना से कम-से-कम 5 साल आगे का था। मियाजाकी सुदीप की बातों से इम्प्रेस हुए। सुदीप को अपने 10% स्टेक की कीमत अदा करने की शर्त पर करीब 251 करोड़ रुपये मिले। इस बार जब मीडिया में खबर आई तब न्यूज में अमाउंट के बारे में कोई जानकारी नहीं दी गई।

हालाँकि, मीटिंग के बाद अभिजात और सुनयना बहुत खुश थे लेकिन सुदीप को अपना 10% स्टेक देने के बाद से आने वाले खतरे का अंदाजा लग गया था। उसको पता था कि जितना कम उसका स्टेक होगा। इन्वेस्टर उसके काम में उतनी ही ज्यादा टाँग अड़ाएगा।

10 अक्टूबर 2013, दिल्ली

चित्रा इंडियन बुक हाउस पब्लिशर की रुचिका से मिलने के लिए राजीव चौक के कैफे कॉफी डे में वेट कर रही थी। चित्रा ने जो किताब लिखी थी वो बेस्ट सेलर हो चुकी थी लेकिन पूरी किताब में चित्रा का नाम कहीं भी नहीं था।

रुचिका ने आते ही अपने लिए ब्लैक कॉफी ऑर्डर की और कुर्सी पर बैठते ही बोली, “दो गुड न्यूज हैं और एक बैड न्यूज।”

“तीनों ही न्यूज बैड हैं मतलब।” चित्रा ने अपनी आँखें मचकाते हुए कहा।

“इतनी भी बुरी नहीं हैं।”

“सुनाओ।”

रुचिका ने कॉफी का सिप लेते हुए कहा, “पहली गुड न्यूज ये है कि अगर तुम एक और किताब की घोस्ट राइटिंग करती हो तो पिछले बार से डबल पैसा मिलेगा। दूसरी गुड न्यूज ये है कि मेरे पास टीवी राइटिंग के लिए कुछ बहुत अच्छे ऑफर हैं। पैसा भी बहुत अच्छा है। तुम बोलोगी तो मीटिंग करा दूँगी। बैड न्यूज ये है कि तुम्हारी बुक हम इस साल भी पब्लिश नहीं कर पाएँगे।”

बैड न्यूज के आगे दोनों गुड न्यूज का कुछ मतलब था नहीं। चित्रा ने सोचने के लिए एक-दो दिन का टाइम लिया। वह किसी भी तरह से चाहती थी कि उसकी बुक आ जाए। उसने रुचिका से उसकी किताब न आने की वजह जानने की बहुत कोशिश भी की, लेकिन रुचिका ने कोई सीधा जवाब नहीं दिया। उसने टॉप मैनेजमेंट वगैरह की कोई बात बोलकर उसको टरका दिया।

चित्रा को यह उम्मीद थी कि अब तो उसकी लिखी हुई किताब बेस्ट सेलर हो चुकी है। अब तो उसको चान्स मिल ही जाएगा। पैसे की दिक्कत तो थी ही क्योंकि पिछली बार भी घोस्ट राइटिंग करके उसको इतने पैसे नहीं मिले थे कि वह आराम से एक-दो साल काट पाए।

पैसे के लिए वह आर्टिकल भी लिखने लगी थी लेकिन आर्टिकल लिखने के चक्कर में टाइम बहुत चला जाता था। जिस टाइम में वह अपनी बाकी बची हुई किताबें पूरी कर पाती।

किसी भी लेखक के लिए इससे बुरा कुछ नहीं हो सकता कि उसकी अलमारी में न छपी हुई किताबों का कोना बड़ा होता जाए। यह वैसे ही है जैसे साल भर में हमारी न ली हुई छुट्टियों का हिस्सा पता नहीं कब बढ़ जाता है। जिंदगी में न जिए हुए दिनों का कोटा बढ़ता जाता है। खुद को सीरियसली लेने के चक्कर में आदमी भूल ही जाता है कि एक दिन सब ठाठ धरा रह जाएगा। हर बीता हुआ दिन अपने न जिए जाने का हिसाब माँगता है। सब कुछ ठीक है और कुछ भी ठीक नहीं है जैसे ख्याल इसीलिए आते हैं ताकि आदमी अकेले में बैठकर जिंदगी से ऊब सके। इतना ऊबे कि जिंदगी से आँख-मिचौली करने की हिम्मत जुटा सके। ऊबे हुए लोग ही गूगल मैप का छोटे-से-छोटा रास्ता छोड़कर सड़क के किनारे की पगडंडी वाला लंबा रास्ता लेते हैं। नजारे बदलने से नजरिया भी बदल जाता है। यह बात किसी बूढ़ी औरत ने कही थी। औरतों को नजारा बदलने के लिए आदमी से ज़्यादा चलना पड़ता है। चित्रा का रास्ता लंबा भी था और अलग भी इसलिए मुश्किल ज़्यादा न भी हों लेकिन नयी थी।

10 अक्टूबर 2013 की शाम को सुदीप और चित्रा दोनों इतने उदास थे कि दोनों का एक-दूसरे को पहले कॉल करने का मन नहीं किया। दिन खत्म होने से पहले सुदीप ने जापान के रात 11.30 बजे चित्रा को कॉल किया। उस समय चित्रा की घड़ी में 8 बजे रहे थे। वह दिल्ली में अपने घर पर थी। उसके साथ में कोई लड़का था। चित्रा के लिए ऐसे लड़कों के साथ सोना कुछ नया नहीं था। अकेलापन अच्छी बीमारी है। कभी फायदा करती है तो कभी बहुत नुकसान। अपने-आप से चाहे कोई कितना भी प्यार करता हो लेकिन आदमी सबसे जल्दी और सबसे ज्यादा खुद से उकता जाता है। सुदीप अपने होटल के कमरे में सुनयना के साथ रुका हुआ था। उसको सुबह से याद था कि आज 10 तारीख है और आज के दिन वह और चित्रा मिलते हैं। चित्रा को भी यह बात अच्छे से याद थी।

चित्रा के फोन उठाने की वजह से साथ वाला लड़का थोड़ा डिस्टर्ब हुआ। इधर सुदीप का एकदम से बिस्तर से उठकर जाना और चित्रा को फोन करना, सुदीप की गर्लफ्रेंड सुनयना को कुछ अच्छा नहीं लगा।

फोन मिलने के बाद से दोनों को बस तसल्ली हुई कि दोनों को एक-दूसरे की याद है। दोनों की एक-दूसरे की जिंदगी में साल में एक दिन ही सही लेकिन पक्की जगह है।

सुदीप ने चित्रा को जताया कि आज सुबह से ही वह उसे याद कर रहा था। उसने यह भी जोड़ा कि उसे बहुत सारी बातें करनी है। चित्रा ने यह जताया कि कैसे एक साल बीत गया। सुदीप ने कहा, "मुझे ब्रेक चाहिए।"

चित्रा ने जवाब दिया, "मुझे भी।"

वे एक-दूसरे की खोमोशी सुन ही रहे थे कि चित्रा के कमरे से उस लड़के ने आवाज लगाई। सुदीप को थोड़ा अजीब लगा। सुदीप ने तुरंत ही फोन काट दिया। चित्रा ने फोन रखते ही उस लड़के को घर से जाने के लिए बोला। उस लड़के ने चित्रा को एक-दो गाली दी और कमरे से निकल गया। उधर सुनयना दूसरी तरफ मुँह करके लेट गई।

सुदीप अब भी बैठकर अपने मोबाइल में कुछ टाइप कर रहा था। उसने एक मेसेज टाइप करके चित्रा को भेजा।

"If we are not together for real reasons like kids, security or emotional support. Then we should be together for unreal reasons like happiness, good company and comfort। मेरी लाइंस नहीं है लेकिन कहीं पढ़ी थीं।"

सुदीप यह मैसेज भेजकर लेट गया। तभी उसका फोन बजा। उधर से चित्रा का मैसेज था, "रसल क्रो की एक फिल्म थी ब्रेकिंग अप, उसमें ये लाइंस थीं।"

कुछ साल हमसे नाराज होते हैं। लाख कोशिश करने पर भी वो मानते ही नहीं। यह साल सुदीप और चित्रा की जिंदगी का वही साल था। दुनियाभर में 13 को बुरा मानने की अपनी-अपनी वजहें हैं। सुदीप और चित्रा के पास 2013 को अच्छा मानने की एक भी वजह नहीं थी।

साल बुरा हो तो याद कर लेना चाहिए कि अगला साल आकर सब कुछ बदल देगा। साल 2013 में सुदीप और चित्रा अपने अक्टूबर की 10 तारीख खो आए थे।

कुछ पा लेने के बाद जब हम एक ग्लास ठंडा पानी पीकर सुस्ताते हैं तब याद आता है कि हमारा वो एक हिस्सा खो गया जो इतना कुछ पाना चाहता था। चलते-फिरते हम रोज कितना कुछ खोते जा रहे हैं कि याद ही नहीं आता है कि कब बैठकर हमने आसमान में तारे गिने थे। कब आखिरी बार अपनी एक हाथ की उँगलियों को दूसरे हाथ की उँगलियों से छुआ था। कब बिना बात के ऐसे ही अपने मोबाइल पर किसी बिसरे हुए दोस्त को बिना किसी काम कॉल किया था, दोस्त जो अब थोड़ा अजनबी हो चुका है। कब शोर के बीच हमने किसी चिड़िया की आवाज को बचाने की कोशिश की थी। कब हमने 12 महीने के बच्चे के जैसे धूप को कमरे में झाँकते हुए देखकर चौंके थे। कब डूबते सूरज के साथ दस रुपये की मूँगफली खाई थी। कब रात भर बातें की थीं। कुछ पा लेने की राह पर रोज भागते हुए भूल ही जाता है कि अपने खोए हुए हिस्से को बचा लेना ही असली पाना है। हम शाम होने तक अपने पीछे एक पूरी दुनिया खोकर घर

लौटते हैं। दिन ऐसे खाली होकर साल हो जाते हैं।

एक साल बाद

10 अक्टूबर 2014, गोवा

दिल्ली में सरकार बदल चुकी थी। सभी बिजनेस वाले मोदी सरकार को बड़ी उम्मीद से देख रहे थे कि अच्छे दिन आएँगे। अच्छे दिन का आना बहुत बड़ी उम्मीद थी। अच्छे दिन आए या नहीं यह किसी को नहीं पता था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक मीटिंग देश के सभी बड़े बिजनेस हाउस के मालिकों से की थी। इसी मीटिंग में देश के उभरते हुए बिजनेस (स्टार्टअप) के लोगों को भी बुलाया गया था। जो 30 लोग चुने गए थे उसमें से एक सुदीप भी था। इंडियन इकोनॉमी ग्रो कर रही थी। ऐसा लग रहा था कि अगले पाँच सालों में इंडिया पूरी दुनिया में अलग छाप छोड़ेगा। प्रधानमंत्री ने 2 अक्टूबर को स्वच्छ भारत कैंपेन लांच की जिसमें कई फिल्म स्टार समेत बड़े-बड़े लोग शामिल हुए थे। सुदीप को भी दिल्ली से इन्वाइट किया गया था। वह इसमें नहीं जा पाया था क्योंकि उसको बहुत सारा काम निपटाकर 10 तारीख को गोवा पहुँचना था।

सुदीप, चित्रा का गोवा के एयरपोर्ट पर इंतजार कर रहा था। चित्रा की फ्लाइट थोड़ी लेट थी। सुदीप अपनी कंपनी के काम से इतना पक चुका था कि उसने चित्रा के आते ही अपना मोबाइल बंद कर दिया। भीड़-भाड़ सुदीप को पसंद नहीं थी और उसको कुछ लोग पहचान भी लेते थे।

चित्रा के आते ही उसने चित्रा पर टोंट कसते हुए पूछा, “वो लड़का नहीं आया साथ में तुम्हारे?”

“उसको तो उसी दिन शाम को ही भूल गई थी। तुम सुनाओ क्या हाल हैं तुम्हारी गर्लफ्रेंड के? क्या नाम था उसका?”

“सुनयना नाम था। मैं सुनयना से शादी कर रहा हूँ।”

“इतने बोरिंग लगोगे तुम शादी के बाद!” चित्रा ने कहा।

“35 साल का होने पर बच्चों से खेलने के लिए बच्चे होने तो चाहिए!”

“बात तो सही है तुम्हारी, कर लो बच्चे। अपने बच्चे को मेरे पास भेजना। उनको बिलकुल बिगाड़ दूँगी।”

“बच्चा तुमको बुआ-बुआ बोलेगा कितना अच्छा लगेगा।” सुदीप ने कहा और यह सुनते हुए चित्रा ने उसको जोर से कोहनी मारी।

एयरपोर्ट के बाहर ही कार आई हुई थी। सुदीप ने कार की चाभी चित्रा को दी।

“तुम पहले आ चुकी हो गोवा?”

“हाँ, मैं हनीमून पर यहीं आई थी।”

“पहले बता देना था कहीं और चलते।”

“अब किस-किस चीज से पीछा छुड़ाऊँगी!”

“कैसी चल रही लाइफ?”

"मेरी लाइफ एकदम हैपनिंग है।"

"इसका मतलब है किताब आने वाली है!"

"किताब का तो नहीं पता, लेकिन लिखकर काम अच्छा चल रहा है।"

"कैसे?"

"सब यहीं पूछ लोगे? अभी तो हम आए हैं! आराम-आराम से बात करते हैं।" चित्रा ने एसी बंद करके गाड़ी के शीशे खोल दिए।

सुदीप और चित्रा ताज में रुके थे। हालाँकि चित्रा और सुदीप के बीच में आज तक कुछ ऐसा हुआ नहीं था। न ही कभी चित्रा ने या फिर सुदीप ने ऐसी कोई भी कोशिश की थी जिससे ऐसा लगे कि वो एक-दूसरे को छूना चाहते हैं।

सुदीप और चित्रा कोई कॉलेज में जाने वाले या नयी-नयी नौकरी वाले लड़का-लड़की तो थे नहीं। चित्रा के शरीर की अपनी जरूरतें थी। जो वह किसी-न-किसी के साथ सोकर पूरा कर लिया करती थी। सुदीप की अपनी एक स्टेबल गर्लफ्रेंड थी ही।

होटल के कमरे में जाकर चित्रा ने टीवी ऑन करके गाने चला दिए और कूदकर बिस्तर पर पसर गई। सुदीप सुबह फ्लाइट के चक्कर में नहा नहीं पाया था, वह नहाने चला गया।

चित्रा पहले से बहुत खूबसूरत लग रही थी। दोनों दो साल बाद मिल रहे थे। सुदीप और चित्रा में अब इतनी समझ थी कि वो बिना शर्ट पहने उसके सामने आराम से आ रहा था। दोनों एक-दूसरे की प्रेजेंस को लेकर कम्फर्टेबल थे।

जब तक सुदीप नहाकर निकला। चित्रा ने पूरा प्रोग्राम बना लिया था कि क्या-क्या करना है।

सुदीप ने निकलते ही कहा, "बीच पर चलते हैं।"

चित्रा ने तुरंत कहा, "नहीं, पहले चर्च।"

सुदीप ने अपने शॉर्ट्स पहने और सफेद टीशर्ट पहनकर बाल बनाते हुए बोला, "तुम्हें पता है न, तुम बहुत फिल्मी हो!"

"अब हूँ तो हूँ। कौन-सा साल भर, उम्र भर तुम्हारे साथ रहना है! एक दिन की बात है!"

चित्रा अपने कपड़े लेकर बाथरूम में गई और चेंज करके जब लौटी तो सुदीप वहीं बैठा हुआ था, जहाँ दो मिनट पहले चित्रा लेटी हुई थी। चेंज करके आई हुई चित्रा बिलकुल अलग दिख रही थी। उसने बस एक लंबी-सी शर्ट पहनी हुई थी। अपने बैग से हेयर क्रीम निकालकर चित्रा ने अपने बालों पर लगाकर हाथ से बाल सही कर लिए। वह अपने बालों में कंघी नहीं करती थी।

सुदीप ने कार की चाभी चित्रा की तरफ बढ़ाई। चित्रा ने कार की चाभी को अपने छोटे से बैग में रखा और कहा, "हम कार से नहीं जा रहे। मैंने स्कूटी मँगवा ली है। यहाँ से बस एक किलोमीटर दूर जाना है।"

रास्ते में सुदीप बार-बार पेड़ से पत्तियाँ तोड़ रहा था। चित्रा उसको बार-बार मना कर रही

थी। जैसे वे धीरे-धीरे चल रहे थे, वैसे ही उनके बीच की बातें भी धीरे-धीरे चल रही थीं। दो साल बाद मिलने की खुशी दोनों को थी।

स्कूटी चित्रा चला रही थी। पहले दोनों चर्च गए। चित्रा ने सुदीप को थोड़ी देर वहाँ चुप बैठने के लिए कहा। चित्रा ने एकदम मन लगाकर आँखें बंद कर लीं। ठीक ऐसे जैसे वो सब कुछ पूरा हो जाएगा जो कुछ उसने सोच रखा है। चित्रा को मगन देखकर सुदीप ने भी कुछ देर वहाँ अपना मन लगाया।

चर्च से निकलने के बाद सुदीप ने बड़ा ही घटिया-सा सवाल किया, "क्या माँगा?"

इस पर चित्रा ने वही घटिया-सा जवाब दिया, "मैं क्यों बताऊँ?"

सुदीप और चित्रा इसके बाद बीच पर गए। वहाँ जाने के बाद उन्होंने जल्दी-जल्दी पीना शुरू किया। जल्दी वे इसलिए पी रहे थे ताकि नॉर्मल हो जाएँ और अपना सब कुछ थोड़ी देर को भूल जाएँ।

"मैं इस लाइफटाइम में तुम्हारी किताब पढ़ पाऊँगा कि नहीं। हमें मिले हुए आज चार साल हो गए अभी तक तुम्हारी किताब नहीं आई?" सुदीप ने पूछा।

"यार, इतना आसान नहीं है। मैंने एक राइटर के लिए घोस्ट राइटिंग की थी।"

"घोस्ट राइटिंग क्या होती है?"

"यही कि किताब मैंने लिखी लेकिन किताब पर मेरा नाम नहीं आएगा।"

"ऐसा क्यों किया तुमने?"

"पैसों की जरूरत थी।"

"तुम्हें मुझे बोलना था।" सुदीप ने कहा

इसके बाद चित्रा कुछ बोली ही नहीं। थोड़ी देर बाद सुदीप को अपनी गलती का एहसास हुआ। उसने कहा, "अच्छा सॉरी, आगे बताओ।"

"तो अच्छी बात ये है कि जो किताब मैंने लिखी थी। वो लाखों में बिक गई। इसलिए उसके राइटर ने मुझे अगली किताब भी दे दी है लिखने के लिए।"

"लेकिन उसमें तुम्हारा नाम नहीं आएगा न?"

"हाँ, वो है लेकिन पैसे अच्छे हैं। एक बार पैसे सेव हो गए तो अपनी किताब भी लिख पाऊँगी। ऐसे किताब लिखने का मोटीवेशन ही नहीं आ रहा। बार-बार चिंता होती रहती है कि रेंट कैसे दूँगी, खर्चा कैसे चलेगा।" चित्रा ने बात खत्म करते हुए अपनी अगली ड्रिंक ऑर्डर की।

चित्रा ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "और टीवी में सीरियल लिखने का काम भी आ रहा है मुझे।"

"उसमें तो नाम मिलेगा न?"

"उसमें पैसा अच्छा है लेकिन नाम नहीं आएगा।"

"क्यों?"

"क्योंकि वो किसी और राइटर के नाम से आएगा। टीवी राइटर के पास इतना काम है कि

वो खुद नहीं पूरा कर सकते इसलिए बाहर आउटसोर्स कर देते हैं।"

"तुम इसलिए लिखना चाहती थी कि तुम्हें कोई भी नहीं जाने?"

"नहीं।"

"फिर ये क्यों कर रही हो?"

"बस थोड़े दिन की बात है।"

"ऐसे वो दिन कभी नहीं आएगा। देखो मुझे ज्यादा पता नहीं राइटिंग का लेकिन तुम यही करती रह जाओगी। दूसरों के लिए कोई कैसे लिख सकता है!"

"तुम नहीं समझोगे।"

"मुझे समझना भी नहीं। मुझे बस ये पता है कि मैं किताब पर चित्रा पाठक का नाम देखना चाहता हूँ।" यह बोलकर सुदीप उठकर चित्रा के पास गया। उसको कुर्सी से उठाकर जोर से गले लगा लिया और उसके माथे पर चूम लिया। चित्रा ने सुदीप को जोर से पकड़ लिया और कान में धीमे से कहा, "थैंक यू फॉर कमिंग।"

सुदीप और चित्रा वहाँ से उठकर सामने ही समंदर के किनारे बहुत देर तक टहले। टहलते-टहलते चित्रा ने सुदीप से पूछा, "तुम्हारा काम कैसा चल रहा है?"

"मैं जहाँ बुक माइ ट्रिप को देखना चाहता हूँ, वहाँ तक ले जाने में मुझे दो साल और लगेंगे। पता नहीं मेरे पास उतना टाइम है कि नहीं। शायद मुझे हटा दें।"

"हटा कैसे सकते हैं! तुम्हारी ही कंपनी है न?"

"हाँ मेरी ही कंपनी है लेकिन मैं अपने कुछ और शेयर भी बेच चुका हूँ। अगर बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स बैठकर फैसला लें तो मुझे हटा सकते हैं। लेकिन अभी मुझे इस बारे में कोई बात नहीं करनी।"

सुदीप ने समंदर के किनारे टहलते हुए चित्रा के कंधे पर हाथ रख दिया। चित्रा ने सुदीप के शॉर्ट्स की पीछे वाली जेब में हाथ डाल दिया। पानी उनके पैर से छूकर लौट रहा था। इस बीच एकाएक पानी जोर से आया। इससे पहले कि वे बचने की कोशिश करते, दोनों पूरी तरह भीग चुके थे।

दो लोग जब तक एक-दूसरे को यह नहीं बताते हैं कि वे रोते किस बात पर हैं तब तक करीब नहीं आते। चित्रा और सुदीप के रिश्ते की सबसे अच्छी बात शायद यही थी कि उन दोनों में से किसी एक को भी प्यार जैसा नहीं लगा था एक-दूसरे के साथ। वे बस एक-दूसरे के लिए छुट्टी की तरह से थे। जिसका इंतजार वे साल भर करते। पुराना सब कुछ भूलकर नया शुरू करने की हिम्मत एक-दूसरे को देते।

ऐसा रिश्ता हर किसी की जरूरत है, बस दिक्कत यह है कि जब कोई इतना अच्छा हमें मिलता है तो हम उसको रोकने की कोशिश करते हैं। रोकने की कोशिश में सब कुछ बह जाता है। छुट्टियाँ तभी तक अच्छी हैं जब तक वो मुश्किल से मिलती हैं।

इस बार, पहली बार सुदीप और चित्रा के बीच वो सब कुछ हुआ जो किसी भी लड़के और

लड़की के बीच हो सकता है। सुदीप और चित्रा जब सुबह सोकर उठे तो एक-दूसरे में ऐसे फिट थे जैसे दोनों के शरीर को सालों से एक-दूसरे की आदत हो।

दो लोग जब एक-दूसरे को पूरी तरह से समझ लेते हैं तो बीच की खाली जगह खोकर एक दुनिया हो जाते हैं। सुदीप, चित्रा की दुनिया नहीं थी बल्कि उसकी दुनिया से दूसरी दुनिया के बीच की खाली जगह थी। जिसको भरने की कोशिश करते ही वो पूरा एक दिन खो जाता। जिस साल सुदीप चित्रा से मिलता था उस साल के दिन 364 गिन लेता था। यूँ एक दिन का गुमशुदा होना कैलेंडर को भी अच्छा लगता है। बढ़िया ही हुआ कि दोनों को अभी तक प्यार नहीं हुआ वर्ना वे एक-दूसरे के पते अभी तक भूल चुके होते।

सुदीप ने ऐसे ही गोवा की एक शाम को डूबते हुए सूरज की ओर देखते हुआ चित्रा से कहा था, “हमें शायद कभी मिलना ही नहीं चाहिए था।”

“ऐसी उदास बातों पर मेरा कॉपीराइट है” चित्रा ने यह बोलकर डूबते हुए सूरज को एक सेकंड के किए रुकने के लिए बोल दिया। पूरी दुनिया एक सेकंड के लिए उस रुके हुए सूरज में डूब गई।

सुदीप ने अपने बैग से अपनी वही किताब निकाली और चित्रा की तरफ बढ़ा दी। चित्रा ने उस पर 10 October 2015 की तारीख डाल दी।

लौटने पर सुदीप को सुनयना के सवालों का सामना करना पड़ा। आखिर वह फोन बंद करके गायब कहाँ था। सुदीप ने एक सस्ता-सा झूठ बोल दिया कि वो घर पर कुछ इमरजेंसी थी। वह लखनऊ गया था। लखनऊ गए सुदीप को सालों हो चुके थे। अपने घर लौटने की उसकी सारी वजहें खो चुकी थीं।

एक साल बाद

10 अक्टूबर 2015 मुंबई
बुक माइ ट्रिप ऑफिस, सुबह 9 बजे

सुदीप यादव जब रोज की तरह अपने ऑफिस पहुँचा तब उसको रिसेप्शन पर ही रोक दिया गया। अभिजात और सुनयना उसको एक केबिन में लेकर गए। सुदीप की तरफ एक लैटर बढ़ाया गया। लैटर में कुछ ऐसा लिखा था जिसका मतलब था कि बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स और इन्वेस्टर ने मिलकर यह फैसला लिया है कि सुदीप अब इस कंपनी का सीईओ नहीं रहेगा। सुदीप की जगह अभिजात को सीईओ बनाया जा रहा है। यह मीटिंग रात के एक बजे हुई थी। सुदीप ने लैटर को वहीं के वहीं फाड़ दिया और अभिजात की आँखों में आँखें डालकर देखने लगा। अभिजात ने बोलना शुरू किया कि रात में देर हो गई थी, इसलिए उसे रात में जगाना ठीक नहीं समझा। सुदीप के होंठ फड़फड़ा रहे थे लेकिन वह इतना गुस्सा था कि कुछ बोल नहीं रहा था।

सुदीप केबिन से उठकर अपने केबिन में जाने लगा। इतने में उसके हाथ से उसका लैपटॉप ले लिया गया। उसका केबिन लॉक किया जा चुका था। उसको अपना समान अपने कैबिन से हटाने का टाइम भी नहीं दिया गया। सुदीप के केबिन में उसकी माँ की फोटो लगी थी। सुदीप जिद पर अड़ गया कि उसको अपनी माँ की फोटो चाहिए। सुनयना के कहने पर केबिन खोला गया। सुदीप पूरे केबिन को एक बार ध्यान से देखा, अपनी माँ की फोटो उठाई। उसके कमरे के बोर्ड पर लिखा हुआ था कि बुक माइ ट्रिप अगले दो साल में इंडिया की नंबर कंपनी होगी। उस केबिन की एक-एक चीज को उसने इत्मिनान से देखा।

जैसे छोटे बच्चे बहुत नाराज हो जाते हैं तो अपने सबसे प्यारा खिलौना तोड़ देते हैं वैसे ही सुदीप नाराज था। वो कंपनी जिसको सुदीप ने बनाया था अब उस कम्पनी को सुदीप की जरूरत नहीं।

सुनयना ने सुदीप को समझाने की कोशिश की थी लेकिन सुदीप ने सुनयना की कोई बात नहीं सुनी। वह ऑफिस से निकल गया।

ऑफिस से निकलने के 5 मिनट के भीतर ही सुदीप ने एक ईमेल लिखी जो कि जान-बूझकर उसने मीडिया में लीक कर दी।

डिअर बोर्ड मेंबर एंड इन्वेस्टर,

मैं बहुत पहले ही समझ चुका था कि आप लोगों से कुछ भी बात करना ही बेकार है। मैंने बहुत पहले ही हिसाब लगा लिया था कि मेरे पास इस लाइफ में करीब पौने तीन लाख घंटे हैं (एक एवरेज आदमी करीब 60 साल जीता है उसमें से सोने का समय मैंने घटा दिया है)। मैं अपनी लाइफ का बचा हुआ समय आप लोगों की पॉलिटिक्स पर खराब नहीं करना चाहता। हालाँकि, अच्छा यह रहता कि आप मुझे हटाने से पहले बता देते लेकिन आपने वो सब इतने चुपचाप किया है, जैसे कोई रात में चुपचाप चोरी करता है।

ऑल द बेस्ट, बुक माइ ट्रिप इस देश की सबसे बड़ी कंपनी हो सकती थी लेकिन...

लेकिन का जवाब आपके पास खुद है। कायदे से आगे कभी भी कंपनी को मेरी जरूरत होगी तो मुझे आपकी कोई मदद नहीं करनी चाहिए, लेकिन मैं आप लोगों जैसे नहीं हूँ। बुक माइ ट्रिप को इस देश की नंबर एक कंपनी बनाने में कभी भी मेरी जरूरत होगी तो मैं कोई भी मदद करने के लिए तैयार हूँ।

चियर्स,

सुदीप यादव।

सुदीप के इस ईमेल डालने के एक घंटे के अंदर इस देश के हर न्यूज चैनल पर यह ईमेल था। तमाम आर्टिकल लिखे जा रहे थे। सुदीप हीरो था लेकिन सोशल मीडिया पर कोई उसको 'कल्ट हीरो' बोल रहा था तो कोई 'क्रेजी' तो कुछ लोग 'इम्मेच्योर'।

उधर चित्रा ने टीवी ऑन किया तो यही न्यूज चल रही थी। लोग तरह-तरह की बातें कर रहे थे। हर चीज के तमाम पहलू होते होंगे लेकिन न्यूज पर हर बात के दो ही पहलू होते हैं, एक बहुत सही और एक बहुत ही गलत। बीच का कुछ नहीं होता।

न्यूज चैनल पर एक पैनलिस्ट ने घोषणा कर दी कि फोर्ब्स मैगजीन की बहुत ही पॉपुलर लिस्ट 30 अंडर 30 में आने वाले सुदीप यादव का कैरियर खत्म हो चुका है। सुदीप यादव की बाइट लेने के लिए लोग खड़े थे लेकिन सुदीप यादव की तरफ से कोई भी स्टेटमेंट नहीं आया था।

सुदीप की पॉपुलेरिटी इतनी ज्यादा थी कि उसके नाम से ट्विटर पर #comebacksudeep #istandwithsudeep ट्रेंड करने लगा। चित्रा न्यूज चैनल पर यह सब देख रही थी।

चित्रा ने सुदीप को फोन मिलाया लेकिन सुदीप का फोन बंद आ रहा था। उसके पास उसकी सेक्रेटरी का नंबर था। चित्रा ने वो नंबर मिलाया लेकिन सेक्रेटरी का नंबर भी बंद आ रहा था। उधर सुदीप की कार के पीछे अभी भी रिपोर्टर्स थे। उसको समझ आ गया था कि अगर वह मुंबई में रहा तो ये लोग पीछा नहीं छोड़ेंगे। ऑफिस से निकलकर वह सीधे एअरपोर्ट गया और उसने लखनऊ की पहली फ्लाइट का टिकट बुक किया। उसने अपने ड्राईवर का मोबाइल अपने साथ रख लिया था। सिक्यूरिटी चेक के बाद उसने अपने ड्राईवर के नंबर से चित्रा को फोन किया।

चित्रा ने सुदीप से सबसे पहले पूछा, "तुम ठीक तो हो?"

"हाँ मैं एकदम ठीक हूँ। लखनऊ जा रहा हूँ।"

"मैंने कभी पूछा नहीं कौन-कौन है घर पर तुम्हारे।"

"बस पापा हैं। पापा प्रिंसिपल थे, जब मैं 12^{th} के बाद पढ़ाई बंद कर दी थी। इस बात से उन्होंने कई साल तक मुझसे बात नहीं की थी।"

"मम्मी?"

“मम्मी बहुत पहले ही चली गई थीं। मेरे पढ़ाई छोड़ने के बाद से पापा उनको रोज-रोज सुनाते थे। मम्मी बहुत रोती थीं। एक दिन मम्मी सोई और उठी ही नहीं। मुझ पर भी पता नहीं किस बात की जिद थी! थोड़ा-बहुत पढ़ लेता तो क्या ही फर्क पड़ता!”

“सॉरी।”

“तुम्हें पता है, मैंने इसलिए कभी अपना घर नहीं खरीदा। मैं इसीलिए होटल में रहता हूँ क्योंकि मुझे डर लगता है घर से। मुझे लाइफ में बस एक ही मलाल है कि मम्मी जाने से पहले देख नहीं पाईं कि मैं कुछ कर भी सकता हूँ। इधर कुछ दिनों से मम्मी की बहुत याद आ रही है।”

कमाल की बात है वे लोग कभी घर बनाने में अपना एक भी मिनट खराब नहीं करते जो कभी भी घर बना सकते हैं। यह जानते हुए कि यहाँ हमेशा नहीं रहना ऐसे में अपना घर बनाना और घर होना इस दुनिया का सबसे बड़ा धोखा है। यह भ्रम ऐसा ही है जैसे ट्रेन की सीट को आदमी हमेशा के लिए अपना समझ ले। एक दिन स्टेशन आएगा और हम उतरने के बाद पीछे मुड़कर भी नहीं देखेंगे।

चित्रा ने खामोशी तोड़ते हुए पूछा, “पापा तो अब खुश होंगे कि उनका बेटा इतना बड़ा आदमी है।”

“पता नहीं, हमारी कभी सही से बात ही नहीं होती। बस जब भी अखबार में मेरा नाम आता है तो वो सारी कटिंग संभालकर रखते हैं।”

सुदीप बोलते-बोलते रुक गया। चित्रा ने भी कुछ पूछने की जल्दबाजी नहीं दिखाई।

“चित्रा!”

“हाँ, बोलो।”

“तुम आ जाओ। मैं रखता हूँ।”

फोन काटने के बाद चित्रा को लखनऊ के घर का एड्रेस् का SMS मिला। चित्रा ने अगली फ्लाइट चेक करके अपना टिकट बुक कराने की कोशिश की लेकिन किसी भी फ्लाइट में कोई जगह नहीं थी। उसने स्टेशन जाकर लखनऊ मेल में टीटी को पैसे देकर सीट ले ली। चित्रा को पूरे रास्ते सुदीप की चिंता थी और 10 अक्टूबर को न मिल पाने का मलाल भी।

11 अक्टूबर 2015, लखनऊ

सुदीप के पापा को भी जर्नलिस्ट कल से फोन कर रहे थे। सुदीप के पापा ने लखनऊ के विराम खंड, गोमती नगर में अपना घर बनाया था। घर में उनका एक पुराना नौकर साथ रहता था। घर दो फ्लोर का था और ऊपर वाले हिस्से में सुदीप के पापा रहते थे। नीचे वाला फ्लोर उन्होंने किराये पर दे रखा था। नीचे वाला फ्लोर, वहीं घर के पास में TCS (Tata Consultancy

Services) में काम करने वाले कुछ लड़कों ने ले रखा था। ये लड़के अपनी नौकरी से रोज बोर होते हुए सोचते थे कि उनको सुदीप यादव जैसा बिजनेसमैन बनना है।

जब सुदीप ने पापा को बताया कि उसकी एक दोस्त भी आने वाली है तो उन्होंने एक कमरा साफ करवाकर चद्दर और तकिया बदलवाकर रख दिया था। इस कमरे में सुदीप की माँ की बहुत बड़ी तस्वीर लगी थी।

चित्रा ने घर पहुँचकर मुँह-हाथ धोया। सुदीप अब भी सो रहा था। सुदीप के पापा छत पर अखबार पढ़ते हुए चाय पी रहे थे। टेबल पर तीन अखबार थे— एक हिंदी का दैनिक जागरण और अँग्रेजी के दो अखबार टाइम्स ऑफ इंडिया और इकोनॉमिक टाइम्स।

चित्रा को उसके पापा ने छत पर आकर चाय पीने के लिए बुलाया। चित्रा के वहाँ आने के थोड़ी देर बाद सुदीप वहाँ आया।

इकोनॉमिक टाइम्स में सुदीप के ऊपर एक अच्छा-खासा लंबा आर्टिकल आया हुआ था। पापा ने पूरा आर्टिकल पढ़ने के बाद भी सुदीप से कुछ नहीं पूछा। पिछली शाम से अभी तक इन दोनों के बीच कोई बातचीत शुरू नहीं हो पाई थी। चित्रा के वहाँ पहुँचने के बाद भी कोई बातचीत आगे नहीं बढ़ रही थी। आखिरकार पापा ने ही बात शुरू की।

“दिन में क्या खाओगे तुम लोग?”

“कुछ भी।” सुदीप ने कहा।

“कुछ भी नहीं बनता हमारे यहाँ। बेटा आप क्या खाएँगी?” पापा ने चित्रा से पूछा।

चित्रा ने पलटकर पूछा कि घर में कौन-कौन-सी सब्जी है? पापा ने बताया कि जो पसंद हो वो सब्जी आ जाएगी। सब्जीमंडी पास ही है।

इसके बाद चित्रा और पापा की बात होने लगी। पापा ने बताया कि सिटी मॉन्टेसरी स्कूल के मालिक जगदीश गाँधी उनके दोस्त हैं तो वह अक्सर बच्चों की क्लास लेने जाते हैं।

चित्रा ने पूछा भी कि इतने बड़े घर में वह बोर नहीं होते? पापा ने बताया कि वह वैसे ही जिंदगी काट रहे हैं जैसे कि सुदीप की माँ जिंदा हो। वह वही सीरियल देखते हैं, वही गाने सुनते हैं जो इसकी मम्मी को पसंद थे। उन्होंने वहीं छत पर अपना पढ़ने वाला कमरा दिखाया। जहाँ हजारों किताबें रखी थीं।

अलमारी खोलकर उन्होंने एक फाइल दिखाई जहाँ पर वो सारे अखबार की कटिंग थी जिसमें सुदीप का नाम आया था। उन्होंने उस दिन के इकोनॉमिक टाइम की कटिंग भी वहीं उस फाइल में लगा दी।

“जब भी सुदीप को कॉलेज न जॉइन करने की वजह से डाँटता तो इसकी मम्मी हमेशा कहती थीं, मत डाँटा करो इसको, देखना एक दिन बहुत नाम रौशन करेगा।”

“आपकी आंटी से लव मैरेज हुई थी?” चित्रा ने किताबों की अलमारी से एक किताब निकालकर पूछा।

“हाँ, वो यादव नहीं थी। शादी के बाद भी मैंने सुदीप की मम्मी का नाम चेंज नहीं कराया।”

इस बीच पापा ने सुदीप की कुछ नोटबुक निकालकर चित्रा की तरफ बढ़ाई।

“इसकी मैथ्स तो अच्छी थी ही। बचपन में ये बच्चों की कहानियाँ लिखता था।”

चित्रा सुदीप के पुराने नोट्स पलटने लगी। सुदीप अभी भी चुपचाप बैठा हुआ था। चित्रा ने सुदीप को वहीं कमरे में बुलाया।

“तुमने बताया नहीं, तुम लिखते भी थे?”

“वो लड़का कब का मर गया जो लिखता था।”

“ऐसे मत बोलो। आगे का क्या प्लान है तुम्हारा?”

“कुछ भी नहीं पता, फिलहाल तो एक-दो वकीलों से बात हुई है। मैं केस करूँगा।”

पापा अभी तक वहीं थे। वो वहाँ से यह कहकर निकल गए कि सब्जी लेने जा रहे हैं। नौकर कभी अच्छी सब्जी लेकर नहीं आता।

“मुझे पूरे घर में छत सबसे अच्छी लगती है।”

“क्यों?”

“क्योंकि आसमान रोज बदल जाता है। जैसा वो आज है ऐसा अब कभी नहीं होगा। जब भी आसमान में देखता हूँ तो सोचता हूँ कि उस पार की दुनिया कैसी होगी। उस पार कुछ है भी नहीं। जब मम्मी की याद आती है तो आसमान देखता हूँ। बचपन में जो कहानियाँ लिखता था वो भी ऐसे ही होती थीं मेरे सारे कैरेक्टर आसमान के उस तरफ रहते थे।” सुदीप यह बोलने के बाद आकर दुबारा कुर्सी पर बैठ गया। उसने नौकर को फिर से दो कप चाय बनाने के लिए कहा।

“कितने दिन हो लखनऊ में?” चित्रा ने अखबार में कटा हुआ हिस्सा सुदीप को दिखाकर पूछा।

“अभी कुछ नहीं पता। कल बहुत दिनों बाद अच्छी नींद आई। ऐसी नींद कई सालों से नहीं आई थी।”

सुदीप उठकर किताब वाले कमरे में गया और अपनी नोटबुक उठाकर पढ़ने लगा जिसमें उसने कहानी लिख रखी थी।

“तुम तो इतना घोस्ट राइटिंग करती हो, कभी मेरी किताब भी पूरी कर दो।”

चित्रा ने उसके हाथ से नोटबुक लेकर अपने पास रख ली, “कर दूँगी, तुम भी क्या याद रखोगे! अब ये बताओ लखनऊ में कहाँ घुमा रहे हो?”

“चलो शाम को तुमको गंजिंग कराकर लाते हैं।”

“गंजिंग क्या होता है?” चित्रा ने पूछा।

“हजरतगंज में बिना काम के घूमने को गंजिंग करना कहते हैं।”

11 अक्टूबर 2015, लखनऊ, हजरतगंज

शाम को सुदीप अपने पापा की कार में चित्रा को लेकर हजरतगंज निकल पड़ा। सुदीप हजरतगंज बहुत दिनों बाद आया था। वहाँ चौराहे पर हनुमान मंदिर के पास में ही बहुत बड़ी कार की पार्किंग बन गई थी। पार्किंग में कार लगाकर सुदीप हनुमान मंदिर आया और अपने जूते उतारे बिना थोड़ी दूर से कुछ देर तक हनुमान जी की आँखों में देखता रहा।

चित्रा वहीं पड़ोस में खड़ी होकर चौराहे पर आता-जाता ट्रैफिक देख रही थी।

"इस वाले हनुमान जी की आँखें बिलकुल असली लगती हैं। मैं पहले भी जब भी आता था तो हमेशा आँखों में देखता था। थोड़ी देर तक देखो तो लगता है कि आँखों की पुतलियाँ हिल रहीं हैं। मम्मी हमेशा डाँटती थी कि मैं जूते नहीं उतारता।"

"ऐसा क्या खास है हजरतगंज में?" चित्रा ने पूछा।

"थोड़ी देर टहलो, अपने आप-समझ आ जाएगा। यहाँ सामने मोती महल पर बास्केट चाट खिलाते हैं तुम्हें।"

लखनऊ गए और बास्केट चाट नहीं खाई तो समझिए लखनऊ गए ही नहीं। चित्रा ने लाइफ में पहली बार बास्केट चाट खाई। चाट खाकर अभी वे थोड़ा आगे बढ़े ही थे कि इतने में सुदीप को एक गोलगप्पे वाला दिखा। सुदीप ने उसे बहुत देर तक ध्यान से देखा।

सुदीप ने गोलगप्पे वाले से पूछा, "भइया, कॉल्विन तालूकेदार स्कूल के बाहर आप ही ठेला लगाते थे न?"

गोलगप्पे वाले ने बताया कि हाँ, वहीं लगाता था। सुदीप ने चित्रा को बताया कि उसके स्कूल में यही भइया चाट का ठेला लगाते थे। गोलगप्पे वाले ने पूछा भी कि कौन से साल में थे भइया। सुदीप ने बताया कि आपने इतने लड़कों को चाट खिलाई है कहाँ याद रहेगा।

गोलगप्पे खाते हुए सुदीप ने बताया कि यह लव लेन है। वहाँ फुटपाथ पर टीशर्ट से लेकर मैक्सी तक बहुत कुछ मिल रहा था। थोड़ा आगे बढ़कर सुदीप को किताब की दुकान मिली जहाँ से वह किताब खरीदा करता था। चलते-चलते सुदीप चौराहे के पास आ पहुँचा।

"यहाँ पहले मेफेयर नाम का पिक्चर हाल हुआ करता था, लेकिन अब यहाँ ऑक्सफोर्ड लाइब्रेरी बन गई है।"

सुदीप हजरतगंज में आते ही क्लास 12^{th} का एक लड़का हो गया था, जो घूम-घूमकर अपनी बिसरी हुई यादें समेट रहा था। चित्रा उसके साथ टहलते-टहलते स्कूल जाने वाली एक लड़की हो गई थी जिसको बस अब से दो घंटे बाद जिंदगी का पहला प्यार होने वाला था।

चित्रा का अब तक खा-खाकर पेट भर चुका था लेकिन सुदीप ने फिर भी जबरदस्ती रामआसरे के यहाँ मिठाई खिला ही दी। पूरा हजरतगंज एक थीम पर ब्लैक एंड व्हाइट था। मायावती जब उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री थीं तो जो काम उन्होंने करवाए, उनमें से एक यह था कि कम-से-कम हजरतगंज अब बहुत सुंदर लगने लगा था।

अगर सुदीप को अभी अभिजात का फोन नहीं आया होता, तो वह करीब-करीब यह भूल ही चुका था कि ठीक एक दिन पहले वह सब कुछ खो चुका है। अभिजात ने उसको डाँटा भी कि

वह कहाँ गायब है। इन्वेस्टर बहुत नाराज हैं सुदीप से। वे उसको कुछ वन टाइम सैटलमेंट के पैसे देना चाहते थे लेकिन सुदीप का व्यवहार ऐसा है कि उसको कुछ नहीं मिल रहा है। अभिजात ने बताया कि उसका जितना भी स्टेक था वो इन्वेस्टर ले रहे हैं। वह अब कंपनी के बारे में कोई भी स्टेटमेंट नहीं दे सकता। कंपनी के जितने भी कार्ड उसके नाम से चल रहे थे वो सीज कर दिए गए हैं। कंपनी के नाम पर जो भी सुविधाएँ उसे मिल रही थीं सब कुछ ले ली गई हैं। कुल मिलाकर इसका मतलब यह था कि सुदीप के पर्सनल अकाउंट में जितने पैसे थे बस उतने ही उसके पास बचे थे। वह लखनऊ पहुँचकर वैसे ही खाली हाथ हो गया था जैसेकि कुछ साल पहले जब उसने लखनऊ से सब कुछ जीरो से शुरू किया था।

अभिजात जब यह सब फोन पर बता रहा था तो सुदीप गुस्से से एक दो-बार चिल्लाया भी लेकिन अब कुछ हो नहीं सकता था। चित्रा ने उसको चुप करवाने की कोशिश नहीं की। लौटते हुए सुदीप ने चित्रा से कोई बात नहीं की। घर लौटकर वह अपने-आप को कमरे में बंद कर लिया। डिनर पर चित्रा सुदीप के पापा के साथ बैठी और उसने जो कुछ भी हुआ था वो सब कुछ सुदीप के पापा को बताया।

पापा ने जान-बूझकर सुदीप से कुछ नहीं कहा। बस अपने सोने जाने से पहले सुदीप के कमरे में नीचे पर्ची सरका दी। पर्ची में बस इतना लिखा था। 'खाना फ्रिज में रखा है, अगर मन करे तो खा ले।' चित्रा दूसरे कमरे में आ गई। उसे सुदीप के कमरे में जाना सही नहीं लगा। वह सुदीप की नोटबुक खोलकर पढ़ ही रही थी कि इतने में सुदीप के पापा चित्रा के कमरे में आए और बोले, "जब तक ये थोड़ा नॉर्मल नहीं हो जाता, आप यहीं रुक जाओ बेटा। ये इतना जिद्दी है कि मुझसे कुछ बोलेगा नहीं।"

चित्रा ने इस बात का कोई जवाब नहीं दिया। थोड़ी देर चुप रहने के बाद वो बोली, "आप परेशान न हों अंकल। सब ठीक हो जाएगा।"

चित्रा अभी सुदीप की लिखी हुई कहानी खत्म ही कर रही थी, इतने में उसे किचन से कुछ आवाज आई। वह उठकर गई। सुदीप फ्रीज से निकालकर अपना खाना गर्म कर रहा था।

"तुम ठीक हो?"

सुदीप ने कोई जवाब नहीं दिया।

चित्रा ने दुबारा पूछा, "तुम ठीक हो?"

सुदीप ने अब भी कोई जवाब नहीं दिया। उसने बड़े ही आराम से खाना अपनी प्लेट में रखा और खाने लगा। चित्रा वहीं डाइनिंग टेबल के पास बैठ गई। खाना खाने के बाद सुदीप उठकर अपने कमरे में जाने से पहले चित्रा से कहा, "सॉरी, कुछ भी बोलने का मन नहीं कर रहा। सुबह बात करते हैं।"

सुदीप अपने कमरे में जाकर कुर्सी पर बैठ गया। चित्रा जानबूझकर उसके कमरे में गई और सुदीप को बहुत जोर से गले लगा लिया। चित्रा के गले लगाते ही जैसे सुदीप के अंदर का सारा गुस्सा पिघलकर आँसू हो गया। वह बहुत जोर से चिल्ला रहा था जैसे कोई मर गया हो।

दूसरे कमरे में पापा को भी नींद नहीं आ रही थी थी लेकिन वह उठकर सुदीप के पास नहीं आए।

चित्रा ने कुछ नहीं कहा बस वह सुदीप को गले लगाए बैठी रही। दोनों कब सो गए न चित्रा को याद था न ही सुदीप को। सुबह उठकर चित्रा छत पर गई। अखबार में सुदीप के बारे में वही खबर थी जो कि एक दिन पहले अभिजात ने दी थी। सुदीप ने अपना ट्विटर का अकाउंट डीएक्टिवेट कर दिया था। यह खबर भी चित्रा को अखबार से मिली।

अभी तक घर के नीचे रहने वाले लड़कों को भी खबर लग चुकी थी कि सुदीप आया हुआ है। उनमें से एक लड़का सुदीप से मिलने घर भी आया, लेकिन पापा ने उसको भगा दिया। चित्रा ने सुदीप के पापा का नंबर लिया और अपना नंबर सुदीप के पापा को दिया। सुदीप के उठने से पहले वह दिल्ली के लिए निकल गई। सुदीप के पापा ने रोकने की कोशिश भी की लेकिन चित्रा रुकी नहीं। चित्रा का चले जाना सुदीप के पापा को थोड़ा-सा खटका। सुदीप को थोड़ा समय अकेलापन चाहिए था और चित्रा उसमें कोई खलल नहीं डालना चाहती थी। चित्रा सुदीप को इतनी अच्छी तरह समझती थी कि वह और रुककर उसकी परेशानी बढ़ाना नहीं चाहती थी।

कई बार थोड़ी देर के लिए चले जाना बहुत देर के लिए लौट आने की तैयारी के लिए बहुत जरूरी होता है। चले जाने से पैदा हुई एक खाली जगह में एक नयी दुनिया बनकर लौट आने की गुंजाईश होती है। ऐसे रिश्ते जो खाली जगह को सहेजकर नहीं रख पाते वो तालाब के पानी के जैसे बासी हो जाते हैं। कुछ रिश्तों को ऐसे ही छूना चाहिए जैसे ठंड में घास पर जमी ओस की बूँद को नंगे पाँव छूते हैं। रोज सुबह बूँद नयी हो जाती है और बूँद को छूकर पाँव पुराने नहीं रहते। एक बूँद—ओस, आँसू, नदी, समंदर और बरसात में ढलती हुई एक साल हो जाती है।

एक साल बाद

10 अक्टूबर 2016, मुंबई

सुदीप अपनी ही कंपनी से अपने हिस्से के लिए केस लड़ रहा था। अभी मामला नैशनल कंपनी लॉ ट्रिबुनल (NCLT) में पेंडिंग था। उसको समझ तो आ ही गया था कि उसको हटाने में अभिजात और सुनयना का भी बहुत बड़ा हाथ है। उसको अभिजात पर गुस्सा तो खूब आया लेकिन वह अब इन सब बातों से आगे बढ़ चुका था। पिछले एक साल में उसका बहुत समय लखनऊ में पापा के पास बीता था। पापा से अब उसकी कुछ बात होना शुरू हुई थी। पापा कभी-कभार चित्रा से भी फोन पर बात कर लेते थे। हालाँकि, वह कभी समझ नहीं पाए थे कि ये दोनों साल में बस एक दिन ही बात करते हैं।

एक दिन किसी के नाम कर देना उम्रभर नाम कर देने जैसा है। वो एक दिन फैलकर पल, घंटे, दिन, साल सदियाँ कुछ भी बन जाता है। सुदीप को चित्रा के साथ बिताया हुआ हर एक 10 अक्टूबर याद था।

सुदीप को एक बहुत बड़ी कंपनी ने अपने यहाँ पार्टनरशिप ऑफर की थी। लेकिन सुदीप अब बदल चुका था। वह किसी को कुछ प्रूव नहीं करना चाहता था। नयी कंपनी अच्छा कर रही थी लेकिन सुदीप को अब मजा नहीं आ रहा था। वह बस अपनी पुरानी कंपनी में अपना हक चाहता था। वह यह चाहता था कि बस जितनी मेहनत उसने की थी वो वेस्ट न हुई हो। धीरे-धीरे सुदीप के बारे में अखबार में आना लगभग खत्म ही हो चुका था। दुनिया भी तभी तक आपके बारे में चिंता करती है जब तक आप उसको मजा दे रहे हों। सुदीप से मीडिया को मजा आना बंद हो चुका था।

मीडिया ने मजे लेने के लिए नए लोग ढूँढ़ लिए थे। मीडिया में आजकल housing.com के राहुल यादव के चर्चे थे। उसको अक्सर ही इंडियन स्टार्टअप का बैड बॉय कहा जाता था। उधर flipkart.com के सचिन और बिन्नी बंसल, पेटीएम के विजय शेखर शर्मा के नाम से करीब रोज ही अखबार भरे रहते थे। हिंदुस्तान के कॉलेज का हर लड़का अब इंजीनियर या एमबीए करके नौकरी करने के अलावा भी एक सपना देखता था कि वह अपनी कंपनी डाले और कहीं से करोड़ों रुपये की फंडिंग उठा ले। स्टार्टअप करना अब इस देश में नयी नौकरी हो चुकी थी। सुदीप यादव का नाम बड़ा होने के रास्ते में जाने से ठीक पहले एकदम से गुमनामी में चला गया था।

इधर चित्रा की जिंदगी में लिखते-लिखते ऐसा पहली बार हुआ था कि जिस लेखिका की किताब के लिए वह घोस्ट राइटिंग करती थी, उसने चित्रा के काम से खुश होकर उसने इंडियन बुक हाउस पब्लिशर के मालिक से चित्रा की किताब की बात कर ली थी। पब्लिशर को उसका काम पहले से ही पसंद भी आया था। बस रुचिका बीच में पड़कर उसको आगे नहीं निकलने दे रही थी। रुचिरा का काम था कि वह पब्लिकेशन के लिए नए लेखक ढूँढे लेकिन वह अपने

लालच के चलते नए लेखकों को आगे नहीं आने दे रही थी। इंडियन बुक हाउस के मालिक को जब ये सब पता चला तो उन्होंने रुचिरा को नौकरी से निकाल दिया।

उसने चित्रा की लिखी कोई पुरानी किताब तो नहीं ली पर उसको एक नयी किताब लिखने के लिए कुछ एडवांस रॉयल्टी दी। चित्रा को इस बात से कोई दिक्कत नहीं थी। अब फाइनली ऐसा लग रहा था कि 2017 में उसकी अपनी किताब आ जाएगी।

पिछले साल चित्रा के बिना बताए जाने की वजह से सुदीप थोड़ा-सा परेशान हुआ था लेकिन वह जिंदगी की जिस स्टेज में था वहाँ कुछ भी उसे एक हद से ज्यादा परेशान नहीं कर पाता था।

जिंदगी एक हद तक ही परेशान करती है। उसके बाद वो खुद ही हाथ थाम लेती है। जिंदगी ताश के पत्ते जैसे ही भरोसे का खेल है जिनको होता है वो परेशान भले दिखें, अंदर से परेशान होते नहीं। इसलिए खेल में पत्ते अच्छे हों या खराब जीतने वाले आखिर ब्लाइंड में भी जीत ही जाते हैं। जिंदगी पर ब्लाइंड खेलने जितना भरोसा रखना ताश के पत्ते पर बाजी लगाने जितना आसन होता नहीं, इसलिए लोग हारने से बहुत पहले ही हार चुके होते हैं।

तय यह हुआ था कि इस बार सुदीप चित्रा से हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में मिलेगी। चित्रा वहाँ पर Tibetan Institute of Performing Arts में बच्चों के लिए एक वर्कशॉप लेने गई थी। वहाँ उसको 9 दिन रहकर बच्चों को कहानियाँ लिखना सिखाना था। चित्रा को इस काम के पैसे भी मिल रहे थे। जिस लेखक के लिए वह घोस्ट राइटिंग करती थी, असल में आना उसे था लेकिन वह उस समय बाहर घूमने जा रही थी। चित्रा को बच्चे पसंद भी थे। इसलिए जब चित्रा से वर्कशॉप के लिए पूछा गया तो वह तुरंत मान गई। 9 अक्टूबर को उस वर्कशॉप का आखिरी दिन था लेकिन मौसम बहुत खराब हो जाने की वजह से वर्कशॉप एक दिन के लिए एक्सटेंड कर दी गई थी।

चित्रा बहुत दिनों से 10 अक्टूबर का इंतजार कर रही थी। सुदीप सुबह आने वाला था। बस दिक्कत यह थी कि चित्रा दिन भर धर्मशाला में भटकने का प्लान था लेकिन उसको उस दिन क्लास लेनी पड़ रही थी।

सुदीप जब वहाँ पहुँचा तब यह पता चला कि उसको पूरा दिन बच्चों के साथ स्कूल में गुजारना है। सुदीप का चेहरा पिछले एक साल में बहुत बदल चुका था। उसको चश्मा लग गया था। बाल हल्के से सफेद थे। बाल थोड़े से बिखरे हुए। वह भी बच्चों के साथ क्लास में पीछे जाकर बैठ गया। क्लास में करीब 20 बच्चे थे। बच्चों की उम्र 8 साल से 14 साल तक थी। चित्रा के क्लास लेने के तरीके से लग रहा था कि वह यही काम करने के लिए पैदा हुई है। चित्रा से सबकी बहुत अच्छी दोस्ती हो चुकी थी। चित्रा ने क्लास को आखिरी असाइनमेंट दिया कि सब लोग दो घंटे बिना रुके एक कहानी लिखेंगे। यह असाइनमेंट देने के बाद चित्रा सुदीप के पास आई तो उसने भी कॉपी और पेन माँगा। बच्चों को लिखता देख वह भी अपने बचपन में पहुँच गया था। उसको अपनी आसमान के पार की दुनिया की याद आने लगी थी। उसका भी कुछ

लिखने का मन कर गया।

हम सबके अंदर एक किताब होती है। वो बात जो चैन से सोने नहीं देती। वो बात जो जागने के बाद ऑफिस के रास्ते में बार-बार याद आती है। वो बात जो कॉलेज में बोरिंग लेक्चर के बीच में याद आती है। वो बात जो समंदर के किनारे टहलते हुए सबसे पहले आकर पैर से टकराती है। वो बात जो किसी पहाड़ी रास्ते पर किसी छुट्टी के दिन बार-बार पेड़ से झाँकती है। वही बात ही तो आपकी कहानी है। वो कहानी जो सबके दरवाजे पर कभी न कभी खटखटाती जरूर है। लेकिन उस आवाज पर ध्यान न देने की वजह से एक दिन वो आवाज चुप हो जाती है और कहानी पूरी होते हुए भी किताब अधूरी छूट जाती है।

2 घंटे होने से 15 मिनट पहले जब घंटी बजी तब सुदीप को ऐसा लगा जैसे कि वह किसी मेडिटेशन से उठा हो। उसको लगा कि वह लिख क्यों नहीं रहा था। उसके पूरे रास्ते की थकावट जैसे एक झटके में खत्म हो गई। चित्रा क्लास खत्म करके एक-एक बच्चे से गले मिलकर उनको अपनी लिखी हुई कहानी उसे ईमेल करने को बोल रही थी। सुदीप अब भी अपनी लिखी हुई उस दुनिया में था। उस दुनिया में जैसे जादू से सब कुछ ठीक हो गया हो।

जाने से पहले सब बच्चों ने चित्रा के साथ एक फोटो खिंचवाने की जिद की। यह फोटो सुदीप ने अपने मोबाइल से खींची। इतने में एक छोटी-सी बच्ची आगे आई और बोली, “अंकल आपके साथ भी फोटो खिंचवानी है।”

सुदीप ने पहले तो मना किया लेकिन बच्ची के बार-बार जिद करने पर वो टाल नहीं पाया। बच्चों ने सुदीप को चित्रा के पास खड़ा कर दिया। यह इकलौती फोटो थी जिसमें चित्रा और सुदीप साथ थे। दुनिया के किसी कागज पर उनका नाम साथ नहीं था। वे अभी तक गिनकर 20 दिन भी साथ नहीं रहे थे।

क्लास से निकलकर चित्रा सुदीप के पास आई। सुदीप अब भी अपनी कहानी में और पहाड़ों में खोया हुआ था। स्कूल से निकलकर उन्होंने धीमे-धीमे चलना शुरू किया।

“तो?”

“तो क्या?” सुदीप ने कहा।

“मेरे पास एक गुड न्यूज है।”

“दुबारा शादी कर रही हो?”

“नहीं।”

“फिर?”

“2017 में मेरी पहली किताब आ रही है। मुझे रॉयल्टी के पैसे एडवांस मिले हैं।”

“क्या बात है। आय एम सो हैप्पी फॉर यू।” सुदीप ने चित्रा को गले लगा लिया। गले लगे हुए चित्रा ने कहा, “फाइनली!”

सुदीप ने प्यार से चित्रा के सिर पर हाथ सहलाकर उसके सारे बाल खराब कर दिए।

“किताब आते ही बेस्टसेलर हो जाएगी तुम्हारी। अब कहाँ पहचानोगी तुम द चित्रा

पाठक!”

“पहचानूँगी कैसे नहीं!”

“नहीं, राइटर का कोई भरोसा नहीं करना चाहिए। तुम भूल जाओगी। कभी फोन भी करूँगा तो बोलोगी कौन सुदीप?”

“चुप करो, मैं बहुत खुश हूँ। तुम सबसे पहले इंसान हो जिसको ये बता रही हूँ।”

“एक खुशखबरी मेरे पास भी है वैसे।”

“क्या, सुनयना से शादी कर रहे हो?”

“नहीं, सुनयना और अभिजात शादी कर रहे हैं।”

“लेकिन अभिजात तो तुम्हारा दोस्त था न?” चित्रा ने थोड़ा-सा चौंकते हुए पूछा।

“हाँ दोस्त था, दोस्त है। चलता है लाइफ है।”

“तुम जा रहे शादी में?”

“नहीं, मुझे नहीं बुलाया है।”

“खैर, तुम खुशखबरी देने वाले थे?”

“हाँ वो तो मैं भूल ही गया। खुशखबरी ये है कि जो रिटायरमेंट में 35 की उम्र में लेने वाला था वो मैं अभी 32 साल में ही ले रहा हूँ। नयी कंपनी को बड़ा कर दिया है लेकिन अब वही सबकुछ बार-बार करने का मन नहीं है।” यह कहते हुए सुदीप ने हाथ चित्रा के कंधे पर रख दिया।

वे बात करते हुए थोड़ा-सा बाहर निकल आए थे। आस-पास का व्यू बहुत अच्छा था। सुदीप रुककर पहाड़ों को आसमान को अपनी आँख में भरने लगा।

“यहाँ से थोड़ा आगे मैजिक व्यू कैफे है, बहुत अच्छी चाय मिलती है वहाँ।”

“अच्छा!”

“खैर, तुम सही में रिटायर हो रहे हो?”

“हाँ, बस हो गया मेरा।”

“करोगे क्या? न तुमने शादी की न बच्चे?”

“पता नहीं क्या करूँगा।”

“तुम्हारे केस का क्या चल रहा है?”

“केस चल रहा है।”

“अगर तुम केस जीत गए तो कितने पैसे मिलेंगे?”

“कंपनी की उस समय की वैल्यू पर है लेकिन फिर भी गई से गई हालत में 240 करोड़ के ऊपर ही मिलने चाहिए।”

मैजिक व्यू कैफे आ चुका था। ओल्डेस्ट चाय सॉप सिंस 1984, मैजिक व्यू कैफे के नीचे लिखा था। यह बहुत ही छोटा-सा कैफे था। ट्रेक पर आए हुए लोग वहाँ सुस्ता रहे थे। वहाँ पहुँचने वाले किसी भी लड़के या लड़की को कोई जल्दी नहीं थी। न ही ऑर्डर देने वाले को

जल्दी थी न ही ऑर्डर लेने वाले को।

इस दुनिया की आधे से ज्यादा परेशानियों की वजह एक ही है, जल्दबाजी। चित्रा और सुदीप को न दोस्ती की जल्दी थी न ही प्यार की। यह कहानी अगर केवल दोस्ती की होती तो वे ऐसे बार-बार मिलते ही नहीं। अगर यह कहानी प्यार की होती तो यह दुनिया की सबसे बोरिंग कहानी होती।

“मैं पूरी लाइफ में अगर सारी किताबें भी बेस्ट सेलर लिख दूँ तो भी मैं कभी 240 तो क्या 24 करोड़ भी न बना पाऊँगी।” चित्रा ने चाय का ऑर्डर देते ही कहा।

सुदीप अब भी व्यू का मजा ले रहा था।

“चित्रा, अगर मान लो तुम्हें एक भी पैसा न मिले, तुम्हारी एक भी किताब न बिके तो क्या तुम लिखना छोड़ दोगी?”

“नहीं, मैं फिर भी लिखूँगी।”

“तो बस फिर पैसे का मत सोचो। मैंने अपनी कंपनी इसलिए नहीं बनाई थी कि मैं करोड़पति हो जाऊँगा।”

चाय आ चुकी थी। चाय की भाप आसमान के बादल को पिघला रही थी। चित्रा खुश थी कि 10 अक्टूबर को वह सुदीप के साथ थी।

“खैर, ये बताओ क्या करोगे इतने पैसों का?” चित्रा ने चाय के ग्लास को दोनों हाथों से पकड़कर घूँट लिया।

“तुम्हें चाहिए, तुम ले लेना। इतना तो है ही कि काम चल जाए। वैसे भी कौन-सी मेरी शादी हुई है कि बीवी के सामने नखरे करूँ और नखरे झेलूँ, इसीलिए तो रिटायर हो रहा हूँ।”

“सोच तो लो रिटायमेंट के बाद करोगे क्या?”

“क्या पता अपनी बचपन की कहानियाँ पूरी करूँ।”

धर्मशाला से चलने से पहले सुदीप ने चित्रा को मुराकामी की किताब दी।

“लिख दो डेट अगले साल तक तो तुम बड़ी राइटर हो जाओगी फिर कहाँ टाइम मिलेगा!”

चित्रा ने किताब लेकर उस पर 10 अक्टूबर 17 की तारीख डाली और कहा, “अगले साल मैं अपनी किताब पर डेट लिखूँगी।”

किताब पर डेट लिखते हुए चित्रा की नजर बुक मार्क पर गई। जिस पेज पर बुकमार्क लगा था उसमें एक लाइन अंडरलाइन थी, “But one thing is certain. When you come out of the storm you won’t be the same person who walked in. That’s what this storm’s all about.”

इस एक साल में बहुत सारा पानी और थोड़ी बहुत दुनिया बह गई थी।

एक साल बाद

10 अक्टूबर 2017

चित्रा की किताब फरवरी में आने वाली थी लेकिन किताब फाइनल होते-होते लॉन्च टल गया। किताब अब मई महीने में आ रही थी। उसी समय अमीश त्रिपाठी की नयी किताब सीता आने वाली थी। किताब आने पर उसने किताब की एक कॉपी सुदीप के पापा को भिजवाई और साथ में एक नोट भी भेजा।

"अंकल, मुझे लखनऊ किताब के टूर पर आना है, आऊँगी तो पक्का मिलूँगी।"

चूँकि चित्रा नयी राइटर थी तो हर जगह जहाँ उसका पब्लिशर टूर के लिए कोशिश कर रहा था। वहाँ पर पहले से अमीश की किताबों को प्रेफरेंस मिल रही थी। चित्रा और उसके पब्लिशर की लाख कोशिश के बावजूद भी चित्रा की किताब लोगों के दिलों में कोई खास जगह नहीं बना पाई। वैसे भी जगह तो तब बनती जब वह किताब सही से प्रमोट कर पाती। अब जाकर चित्रा को समझ आया कि किताब लिखना एक चीज है और किताब को मार्केट में बेचना, लोगों तक पहुँचाना अलग।

चित्रा जितना जोर लगा सकती थी उसने लगा लिया था। उसको पब्लिशर ने सजेस्ट भी किया कि वह किसी बड़े स्टार से किताब का लॉन्च कराए लेकिन यह सब करना चित्रा के लिए संभव नहीं था।

ऐसा नहीं था कि चित्रा की किताब खराब थी। Amazon और Goodread पर किताब के जितने भी रिव्यू थे वो पॉजिटिव थे। बात बस यह थी कि उसकी किताब बहुत कम लोगों तक पहुँची। चित्रा की लाइफ का सबसे बड़ा सपना अब चूर-चूर हो चुका था। शुरू में 2-3 महीने तो पब्लिशर का फोन भी आता था लेकिन उसके बाद पब्लिशर का फोन आना भी बंद हो गया।

असल में हिंदुस्तान में जब भी कोई किताब लिखना शुरू करने की सोचता है तो उसको यही लगता है कि जब उसकी किताब आएगी तो लोग लाइन लगाकर किताब खरीदेंगे। जहाँ वह बोलने जाएगा वहाँ ऑटोग्राफ के लिए भीड़ लग जाएगी। कमाल की बात है सोशल मीडिया और यूट्यूब, Netflix, Amazon Prime Video के डिस्ट्रैक्शन के बाद पहले तो किताब पूरी कर लेना अपने आप में एक बड़ा काम है। उस पर से किताब आ जाना ही अपने आप में इतनी बड़ी बात हो जाती है कि किताब बिकने तक आदमी के अंदर इतना झस नहीं बचता कि मेहनत कर पाए।

चित्रा किताब के न चलने की वजह से टूट गई थी। कितने साल से उसने सोचकर रखा था किताब आने के बाद से उसकी जिंदगी बदल जाएगी। किताब पता नहीं कब से उसके अंदर पल रही थी। किताब का मर जाना ऐसे ही था जैसे उसको कोई बच्चा छोड़कर चला गया हो। इस बार वह सबसे ज्यादा बेसब्री से अक्टूबर का इंतजार कर थी। उसका सुदीप से लिपटकर जोर से रोने का मन था। उसने 9 तारीख की रात में सुदीप से बात की तो पता चला कि उसका केस का

फैसला आना है, उसको कोर्ट जाना पड़ेगा।

“तुम बोलो तो आ जाऊँ मैं?”

“जैसा तुम्हारा मन करे।” सुदीप ने कहा। उसने न किताब के बारे में कुछ पूछा, न ही चित्रा का हाल लिया। चित्रा को थोड़ा बुरा लगा लेकिन जब पहली बार चित्रा और सुदीप मिले थे उसके बाद से शायद यह पहली बार था जब दोनों को एक-दूसरे की सबसे ज्यादा जरूरत थी। चित्रा ने फ्लाइट बुक की और वो सीधे ही कोर्ट पहुँची।

सुदीप, कोर्ट (नैशनल कंपनी लॉ ट्रिबुनल NCLT) * में अपने फैसले का इंतजार कर रहा था। आज ही उसकी लाइफ का सबसे बड़ा फैसला आना था। इस बड़े फैसले के मद्देनजर मीडिया की अच्छी-खासी भीड़ इकट्ठा थी। हालाँकि सुदीप अब किसी भी सोशल मीडिया के प्लेटफॉर्म पर नहीं था। एक-दो रिपोर्टरों ने उसका व्यू जानने की कोशिश की लेकिन सुदीप ने कोई भी जवाब नहीं दिया।

सुदीप कोर्ट रूम के बाहर बेंच पर बैठा इंतजार कर रहा था। सुदीप ने आज अपनी कंपनी बुक माइ ट्रिप की टी-शर्ट पहनी हुई थी। सुदीप ने बुक माइ ट्रिप की टी शर्ट पहनी है—यह खबर न्यूज में जाने लगी।

चित्रा आ चुकी थी। वह चुपचाप आकर सुदीप के पड़ोस में बैठ गई। बेंच पर बैठे-बैठे सुदीप ने चित्रा को गले लगा लिया। सुदीप के वकील ने खबर दी कि अब से 20 मिनट बाद फैसला आ जाएगा। सुदीप बिलकुल धीर-गंभीर शांत था जैसे कि फैसले से उसको कोई फर्क नहीं पड़ने वाला था। वह किसी से नजर नहीं मिला रहा था। उसकी नजरें जमीन की ओर ही टिकी थीं।

“किताब अच्छी थी तुम्हारी।” सुदीप ने कहा।

“क्या फर्क पड़ता है! किताब फ्लॉप तो हो गई!” चित्रा ने जवाब दिया।

“अगली किताब लिख रही हो कि नहीं?”

“नयी किताब का एक ड्राफ्ट पूरा हो गया है।”

“गुड, इस बार किताब छपने से पहले मुझे भेजना।”

सुदीप के वकील ने सुदीप को अंदर बुलाया। चित्रा भी साथ अंदर आई। सुदीप ने चित्रा का हाथ पकड़ लिया। बुक माइ ट्रिप के कुछ ऑफिसर के साथ अभिजात और सुनयना भी आए हुए थे। सुदीप ने अभिजात और सुनयना को गले लगाया और बोला, “Congrachulations, wish you guys an amazing married life.”

अभिजात और सुनयना दोनों ही सुदीप से आँख नहीं मिला पा रहे थे। माहौल खिंचा हुआ था। सुदीप ने अपनी जेब से एक कागज निकालकर अभिजात की तरफ बढ़ाया। सुदीप ने बुक माइ ट्रिप को आगे ले जाने के लिए बहुत सारी चीजें सोची हुई थी। उसने वो सब कुछ लिखकर अभिजात को दे दिया कि शायद ये कुछ काम आएँ।

सुदीप ने चित्रा की तरफ देखा और बोला, “बुक माइ ट्रिप दुनिया में ट्रैवल की 10 सबसे

बड़ी कंपनी में से एक हो सकती है। मुझे पूरा विश्वास है कि तुम इसको वहाँ तक लेकर जरूर जाओगे। ऑल द वेरी बेस्ट, अभिजात।"

अभिजात के पास इसके जवाब में कहने के लिए कुछ नहीं था। सुनयना चित्रा की तरफ देखकर यह पता लगाने की कोशिश कर रही थी कि यह है कौन, इसको कभी पहले नहीं देखा। सुदीप और सुनयना की आपस में कोई बात नहीं हुई।

वकील ने सबको बैठने के लिए कहा। जज साहब फैसला सुनाने वाले थे। फैसला सुनाने से पहले जज साहब ने सुदीप को बुलाया और पूछा, "कभी लॉटरी का टिकट खरीदा है आपने?"

सुदीप ने जवाब दिया, "सर लॉटरी पर कभी भरोसा ही नहीं रहा और मैं लखनऊ का रहने वाला हूँ, वहाँ लॉटरी पर बैन भी है।"

जज साहब सुदीप की बात सुनकर हँसे और फैसला पढ़ने लगे। सुदीप फैसले के दरम्यान जमीन में देख रहा था। चित्रा ने उसका हाथ पकड़ा हुआ था। जैसे-जैसे फैसला सुनाया जा रहा था, वैसे-वैसे पूरा कोर्ट रूम शांत होता जा रहा था। कोर्ट रूम में पिन ड्रॉप साइलेंस हो गया था।

फैसले के हिसाब से जिस तरह से सुदीप को उसकी कंपनी से बेदखल किया गया था वो गलत था। सुदीप अब भी कंपनी के 15% का मालिक था। जिसकी वैल्यू आज की तारीख में कंपनी की वैल्यू के हिसाब से डिसाइड होनी थी। आज की वैल्यू के हिसाब से सुदीप को लगभग 310 करोड़ रुपये मिलने वाले थे। फैसले में यह भी कहा गया कि वह चाहे तो कंपनी में काम कर सकता है। सुदीप ने तुरंत ही इसके लिए मना कर दिया। बुक माइ ट्रिप को अब वह पीछे छोड़ चुका था।

फैसला सुनते ही सुदीप के वकील उछल पड़े। चित्रा ने खुशी से सुदीप को गले लगा लिया। सुदीप ने कोई ज्यादा रिएक्शन नहीं दिया। वह उठकर अभिजात के पास गया और उससे हाथ मिलाया। अपनी जेब से प्रेस के लिए स्टेटमेंट निकालकर उसने अपने वकील को दे दिया। वह अब इतने पैसों का क्या करेगा? क्या वह कोई नयी कंपनी डालेगा? इसको कोई भी जवाब किसी के पास नहीं था। सुदीप एक बार फिर से हीरो था। बहुत दिनों बाद इतने कैमरे उसके पीछे भाग रहे थे। वह "नो कमेंट्स" बोलकर वहाँ से निकल गया।

अगले दिन सुबह न्यूज पेपर की हेडलाइन थी कि सुदीप यादव ने अपने कुल रुपयों का 80% दो हिस्सों में बाँट देने का वादा किया है। पहला 40% का हिस्सा यानी कि 121 करोड़ रुपये कंपनी के शुरुआती लोगों को मिलेंगे और दूसरा 40% का हिस्सा दान में कुछ एक NGO को मिलेगा। बचे हुए 20% उसने अपने पास रखे थे।

अपने प्रेस स्टेटमेंट की आखिरी लाइन में सुदीप ने लिखा था।

"I'm just 32, and it's too early in life to get serious about money, etc. (मेरी उम्र अभी केवल 32 साल है, रुपयों को लेकर सीरियस होने के लिए पूरी जिंदगी पड़ी है।)"

सुदीप बुक माइ ट्रिप में काम करने वाले हर एक इंसान का हीरो था। अखबार में, सोशल

मीडिया पर लोग सुदीप के बारे में केवल कयास लगा रहे थे कि वह नयी कंपनी डाल रहा है। हर न्यूज चैनल की अपनी खबरें थीं और हर अखबार के हिसाब से हर खबर सही थी।

चित्रा सुदीप के साथ ही ताज में रुकी हुई थी। सुदीप ने सुबह का अखबार भी नहीं देखा था। चित्रा ही उसे देख-देखकर सब बता रही थी। सुदीप अब हल्के मूड में था जैसे कोई बोझ उतर गया हो।

सुदीप तो कभी अपने पापा को किसी भी चीज कि खबर करता नहीं। वैसे भी सुदीप ने अपना नंबर बंद कर दिया था। चित्रा ने ही सुदीप के पापा को कॉल करके बात की थी और फोन सुदीप की तरफ बढ़ा दिया था।

पापा से बात करते हुए सुदीप अपनी कुर्सी से उठ गया था। पूरी बातचीत में बस चित्रा को हाँ हूँ ही सुनाई पड़ा था। पापा ने फोन रखने से पहले चित्रा को फोन देने को कहा।

चित्रा के फोन लेते ही पापा ने चित्रा से कहा, "बेटा, लखनऊ को अपना ही घर समझो। अच्छा लगा था तुम आई थी। जब भी मौका लगे घर आओ।" चित्रा ने भी तुरंत आने का वादा कर लिया था और मजाक-मजाक में बोली भी, "अंकल आप चिंता मत करिए। मैं स्कूल खोलूँगी तो आपको ही प्रिंसिपल बनाऊँगी।"

चाय की चुस्की लेते हुए चित्रा ने पूछा, "तुम केस हार जाते तो?"

"तो क्या, कुछ नहीं। यही तो प्वाइंट है।"

"क्या प्वाइंट?"

"यही कि केस हारने-जीतने से फर्क नहीं पड़ता।"

"लेकिन तुम केस तो इतना डेस्परेटली जीतना चाहते थे।"

"हाँ चाहता था। केवल इसलिए क्योंकि मैंने वो कंपनी खड़ी की है। मेरा हिस्सा थी मेरी कंपनी। मुझे ज्यादा खुशी होती अगर मैं अब भी उस कंपनी में काम कर पाता। लेकिन अब फर्क नहीं पड़ता।" सुदीप ने चाय की आखिरी चुस्की लेते हुए जवाब दिया।

"तो अब?"

"अब क्या?"

"अब क्या करोगे?"

"मुझे सही में नहीं पता। थोड़े दिन घर पर रहूँगा पापा के साथ।"

"एक बात बताओ?" चित्रा ने दूसरी कप चाय लेते हुए पूछा।

"हाँ पूछो।"

"हमारा कोई सीन हो सकता है क्या?"

"सीन, मतलब शादी?"

"हाँ। शादी।"

"मुझे नहीं लगता तुम्हें कभी दुबारा शादी करनी चाहिए।"

"क्यों?"

“शादी करते ही सब कुछ वही रहते हुए भी बदल जाता है। इसलिए जिससे खूब प्यार हो, उससे कभी शादी नहीं करनी चाहिए।”

“बहुत ही फालतू का फंडा है तुम्हारा।” चित्रा उठकर बाथरूम में नहाने चली गई।

चित्रा ने अपनी किताब का नया ड्राफ्ट सुदीप को सुनाया। उसने कुछ चीजें बताईं, चित्रा ने वादा किया कि वह बदल देगी। उस पूरे दिन वे बस एक-दूसरे के साथ कमरे में लेटे रहे, जैसे यह दुनिया का आखिरी दिन हो। उनकी आँखें कुछ देर के लिए कमरे में छत हो गईं, कुछ देर के लिए कमरे की खिड़की और कुछ देर के लिए बांद्रा के समंदर में डूबते हुए सूरज में पिघलती हुई शाम हो गईं। उनके हाथ की छोटी उँगलियों ने मिलकर रात के तारे गिने।

“जब सोच लेना कि क्या करने वाले हो तो बताना।” चित्रा ने अगले दिन सुबह उठकर एयरपोर्ट के लिए निकलते से पहले कहा।

“तुम्हें सबसे पहले बताऊँगा। चलो मेरा तुम्हें एयरपोर्ट छोड़ने जाने का मन है।”

“चलो, पूछना क्या है!”

“वैसे एक चीज है। अब मैं चैन से मर सकता हूँ।”

“तुम पागल हो ये सब बोरिंग बातें मत किया करो। अभी तो लाइफ शुरू हुई है तुम्हारी।”

“बस हो गया। मुझे बचपन से ऐसी कहानियाँ पसंद आती थीं जिसमें लास्ट में हीरो कुछ नहीं करता। असल में हममें से ज्यादातर लोग ऐसे ही हैं जो कभी तो चाहकर, कभी न चाहकर जिंदगी में कुछ उखाड़ नहीं पाते। मैं बचपन की कहानी के राजकुमार जैसा नहीं हूँ। मुझे मालूम है अगर मैं एक नॉर्मल लाइफ जीता, एक अच्छे कॉलेज में जाकर एक अच्छी नौकरी करके शादी करता तो भी मैं इतना ही बोर होता लाइफ से जितना कि अब हूँ।”

“लाइफ को लेकर कितना निगेटिव अप्रोच है तुम्हारा!” चित्रा ने सुदीप की कोहनी पर हाथ मारते हुए कहा और अपने पर्स से सेब निकालकर एक बाइट लेकर सुदीप की ओर बढ़ाया।

“निगेटिव नहीं है।”

“मुझे ये सब बोरिंग बातें करनी ही नहीं है तुमसे। तुम नॉर्मल होना तब बात करना ये सब। अभी कल तुम इतना बड़ा केस जीते हो और कैसी बहकी-बहकी बातें कर रहे हो!”

बचे हुए रास्ते के दौरान चित्रा ने अपना पूरा ध्यान सेब पर लगाया और पूरे टाइम वह सुदीप की हथेली पकड़कर सहलाती रही। चित्रा और सुदीप दोनों के हाथ की छोटी उँगलियाँ सुदीप और चित्रा से नाराज थीं।

एयरपोर्ट पहुँचकर चित्रा ने कहा, “इस बीच अगर दिल्ली आना तो मिलना।”

“कोशिश करूँगा। तुम जल्दी से अपनी किताब पूरी करो।”

सुदीप ने चित्रा को छोड़ने से पहले उसको गले लगाकर उसके माथे पर चूमा। रास्ते भर चित्रा सोचती रही कि ऐसा तो नहीं कि वह सुदीप के साथ हमेशा के लिए रह सकती है। वह शायद सही से सोच नहीं रही इस बारे में। फिर दूसरा खयाल आता कि नहीं-नहीं, एक बार वह शादी से बाहर आ चुकी है दुबारा वही गलती करने का मतलब नहीं है।

सुदीप एयरपोर्ट से लौटते हुए यही सोच रहा था कि चित्रा से इतनी अच्छी कैमिस्ट्री है इसीलिए वह उससे कभी शादी करने का सोचेगा भी नहीं। वह चाहता था कि चित्रा की अगली किताब हिट हो जाए।

ऐसा बहुत ही कम होता है जब हम दूसरे का केवल और केवल अच्छा सोच पाएँ। चित्रा और सुदीप के बीच ऐसा कुछ हुआ था। 2017 इतना भी बुरा साल नहीं था।

2017 के दिसम्बर तक चित्रा ने अपनी किताब पूरी कर ली थी। सुदीप 10 दिन के लिए नासिक में विपश्यना[*] ध्यान के लिए चला गया था।

---

[*] इस तरह के केसेस का फैसला इसी कोर्ट में होता है। सायरस मिस्त्री और टाटा संस के केस में भी बड़े फैसले NCLT ने ही दिए थे।

[*] यह गौतम बुद्ध द्वारा बताई गई एक बौद्ध योग साधना हैं। विपश्यना का अर्थ है – विशेष प्रकार से देखना (वि + पश्य + ना)।

एक साल बाद

10 अक्टूबर 2018, चित्रा

यह वो साल था जिसका इंतजार आज तक चित्रा ने किया था। उसकी किताब मार्च में आई और किताब के आने के साथ ही किताब किसी जादू की तरह बिकना शुरू हो गई थी। किताब आने के एक महीने के भीतर ही उसको दुनिया भर से बुलावे आने लगे। चित्रा की किताब खासकर के 15 से 25 साल वाले लड़के-लड़कियों को बहुत पसंद आ रही थी। उसकी किताब के फिल्म-राइट्स के लिए मुंबई के बड़े से बड़े प्रोड़यूसर मीटिंग कर चुके थे। उसकी किताब में ऐसा कुछ क्लासिक जैसा नहीं था। वो 15 से 25 साल के पाठक वर्ग को टार्गेट करके लिखी गई थी। पूरी दुनिया इस जुगाड़ में था कि कैसे यूथ का अट्टेंशन कैप्चर किया जाए। चित्रा की ऑनलाइन फॉलोविंग भी बहुत बढ़ गई थी। उसे अखबार से वीकली कॉलम लिखने के ऑफर आने लगे थे।

10 अक्टूबर 2018, सुदीप

10 सितम्बर को चीनी कंपनी अलीबाबा के MD जैक-मा ने अपना रिटायरमेंट अनाउंस किया। जिसकी हेड लाइन थी— Jack Ma prefers to die on the beach than at a work table in Alibaba.

उधर सुदीप के अलावा किसी को नहीं पता था कि आखिर वह कर क्या रहा था। वह कुछ दिन लखनऊ में रहता और बाकी दिन अपनी कार लेकर रोड पर ही रहता था। उसने अपनी कार के पीछे साइकिल बाँध रखी थी। उसकी कार में कई दिन के खाने-पीने के इंतजाम से लेकर टैंट, बैटरी, कॉफी मेकर, कैमरा सब कुछ था। उसकी चलती-फिरती कार एक छोटा-मोटा चलता-फिरता घर थी।

जिस भी शहर में वह जाकर रुकता वहाँ शाम को घूमने के लिए साइकिल का इस्तेमाल करता। वह एक साल में करीब 22 हजार किलोमीटर कार चला चुका था। उसने अपनी कार से पूरा मध्य प्रदेश, लद्दाख, स्पीती, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, मैंगलोर से होता हुआ 'कारवर बीच' (ऐसा कहा जाता है कि कवि रबींद्र नाथ टैगोर को इस जगह ने इंस्पायर किया था) छान मारा था।

वह अक्सर रास्ते में पड़ने वाले गाँवों में जाकर रुकता। उन गाँववालों के हाथ का बना हुआ खाना खाता। चलने से पहले वह इतना कुछ दे देता कि जिसके घर भी रुक जाता उसकी लॉटरी लग जाती। वह कभी किसी गाँव वाले को अपना सही नाम नहीं बताता। कोई कुछ पूछता कि वह क्या करता है तो बता देता कि वह एक रिपोर्टर है और किसी अखबार के लिए काम करता है। जैसे ही वह यह बोलता कि वह अखबार के लिए काम करता है लोग उसे अपनी समस्या

सुनाने लगते।

उत्तर प्रदेश के एक गाँव में वह रुका तो उसे पता चला कि यहाँ के कुछ लड़कों ने 'जन की बात' का नाम का अखबार शुरू किया है। उस अखबार का मॉडल यह था कि आप जैसे शादी का ऐड पेपर में देते हैं वैसे ही आप कुछ मामूली रुपये देकर अखबार में अपनी शिकायत दे सकते हैं। इसके लिए पैसे बहुत ही कम लिए जाते। लोग इस अखबार में बहुत छोटी-छोटी समस्याएँ लेकर आते। जैसेकि किसी गाँव में मास्टर साहब बच्चों को पढ़ाने नहीं आए। किसी ब्लॉक में पानी नहीं आ रहा। कहीं पर सड़क टूट गई। इस अखबार का असर बहुत तेजी से हो रहा था। इस अखबार में केवल गाँव की शिकायतें ली जातीं। यह अखबार हर जिले के सारे अधिकारियों तक जाता। इस अखबार की वजह से बहुत से परिवर्तन आ रहे थे। उसने बिना अपनी पहचान बताए, इस अखबार को 50 लाख रुपये दे दिए।

सुदीप पहली बार इंडिया से निकलकर भारत को समझ रहा था। रास्ते में न जाने कितने लोगों को उसने लिफ्ट दी थी। न जाने कितने ट्रक वाले उसके दोस्त हो गए थे। यह जिंदगी जो वह जी रहा था, वो एक सपना जैसे थी। वह अपने साथ एक डायरी हमेशा रखता था, जिसमें दिन भर में कोई एक नयी चीज जो उसके साथ हुई होती, वह उसके बारे में लिखता। जितनी देर वह रोड पर होता उतनी देर दुनिया का कोई पास्ट कोई फ्यूचर नहीं होता, वह बस, वहीं होता रोड पर। उसको अपने फ्यूचर की कोई चिंता थी नहीं और अपने पास्ट को तो वह बहुत पीछे छोड़ आया था। सुदीप 10 अक्टूबर को दिल्ली पहुँच रहा था।

10 अक्टूबर 2018, दिल्ली

10 अक्टूबर को चित्रा की नयी किताब का कवर लॉन्च ऑक्सफोर्ड बुक स्टोर दिल्ली में था। चित्रा ने सुदीप को वहीं बुला लिया था लेकिन सुदीप एक शर्त पर आया कि वह किसी को नहीं बताएगी। सुदीप की दाढ़ी बहुत बढ़ी हुई थी। जींस बिलकुल घिस चुकी थी। चित्रा को एक बड़े पब्लिशर ने 2 करोड़ की एडवांस रॉयल्टी पर छापने की घोषणा की थी। चित्रा को फाइनली वो सब कुछ मिल रहा था जो उसने चाहा था। कवर के लॉन्च के दिन चित्रा का पति भी आया हुआ था। सुदीप सबसे पीछे बैठकर सब कुछ देख रहा था। बुक स्टोर में दो ही किताबें बिक रही थीं। एक तो चित्रा की और दूसरी सुरभि पराशर नाम की एक लेखिका की। ऑक्सफोर्ड के मैनेजर ने बताया भी कि मैम आपकी किताब का रेकॉर्ड यह बुक तोड़ सकती है। सबसे बड़ी बात है कि इस किताब को बच्चे बहुत लेकर जा रहे हैं। बिलकुल इंडिया का अपना हैरी पॉटर जैसा कुछ लिखा है। चित्रा ने पूछा भी कि कौन है, यह क्या करती हैं? चित्रा ने एक किताब वहाँ स्टोर से उठा भी ली। सुदीप दूर से ही किताब को देख रहा था। किताब के कवर पर सुरभि पराशर के

बारे में कोई भी जानकारी नहीं था। न ही ईमेल एड्रैस या वेबसाइट कुछ भी नहीं।

प्रोग्राम के बाद किताब पर ऑटोग्राफ करते-करते चित्रा को काफी देर हो गई। सुरभि पराशर की किताब शेल्फ से कम होते जाती देख चित्रा को थोड़ी उलझन भी हो रही थी। रात में चित्रा के लिए इंडिया इंटरनैशनल सेंटर (IIC) में उसके पब्लिशर ने पार्टी रखी थी जिसमें शहर के बड़े-बड़े लोग आने वाले थे। यह प्लान चित्रा को पता ही नहीं था। सुदीप का IIC जाने का बिलकुल भी मन नहीं था। चित्रा ने थोड़ा इनसिस्ट किया लेकिन जब देखा कि सुदीप का बिलकुल भी मन नहीं है तो उसने ज्यादा जबरदस्ती नहीं की।

चित्रा ने सुदीप को अपने घर पर रुकने के लिए कहा और घर की चाभी दे दी। चित्रा किसी तरह से पार्टी से जल्द-से-जल्द फ्री होकर 11.30 अपने घर पहुँची। सुदीप चित्रा की टेबल पर बैठा अकेले पी रहा था। उसने टेबल पर पड़ी हुई चित्रा की अगली किताब की मैनुस्क्रिप्ट पर लाल पेन से 10 जगह निशान लगा दिए थे।

कमरे में घुसते ही चित्रा ने सुदीप को जोर से गले लगा लिया और दस बार सॉरी बोला। सुदीप ने भी उतनी ही जोर से चित्रा को गले लगाया और पूछा, “अब खुश हो अपनी जिंदगी से? नाम-वाम। पेज 3 हो गई हो?”

चित्रा ने जवाब नहीं दिया बस सुदीप को गले लगाए रही। वह खुश थी। उन दोनों की हथेलियाँ खुश थीं। चित्रा का घर खुश था। चित्रा के होंठ खुश थे, वे सुदीप से बात करके अपने आप को थकाना नहीं चाहते थे।

सुबह उठने पर सुदीप ने बताया कि उसने चित्रा की नयी किताब पढ़ ली है और निशान लगा दिया है। वह उतने हिस्से दुबारा देख ले एक बार। चित्रा ने पूछा, “कैसी लगी किताब?”

सुदीप ने जवाब दिया कि उसको सबसे अच्छी पहले वाली किताब लगी थी। अगर वो 10 थी तो ये केवल 4 है।

चित्रा थोड़ा डिसएपाइंट हुई। इतने में उसको कुछ याद आया। उसने अपने बैग से सुरभि पराशर की किताब निकाली और सुदीप को बताया कि यह किताब बहुत चल रही है। मौका लगे तो इसको पढ़कर बताना कि क्यों इतने लोग पढ़ रहे हैं। किताब देते हुए चित्रा ने बोला भी कि 500 पन्ने की किताब कैसे पढ़ रहे हैं लोग! वह तो जान-बूझकर पतली किताब लिखती है। लोगों के पास इतना टाइम कहाँ है!

सुदीप ने नयी किताब पढ़ने वाली बात टाल दी। इसके बाद उसने बताया कि वह पिछले एक साल में कितना घूमा है और उसने क्या-क्या किया है। चित्रा को सुदीप के आवारा भटकने वाली लाइफ इतनी सही लगी कि तय हुआ कि सुदीप और चित्रा अगले 10 अक्टूबर को एक रोड ट्रिप साथ करेंगे।

सुदीप कई दिनों से लगातार ड्राइव करके दिल्ली पहुँचा था। कार की सर्विस भी ड्यू हो गई थी। इसलिए सुदीप ने थोड़े दिन दिल्ली में ही रुकने का प्लान किया। इतने सालों की मुलाकात में सुदीप पहली बार चित्रा के लिए लद्दाख से छोटे-छोटे रंग-बिरंगे झंडे लेकर आया था। चित्रा ने

तुरंत ही उसको अपनी पढ़ने-लिखने वाली टेबल पर लगा दिया। चित्रा रात में लिखने बैठती तो सुदीप उसके लिए कॉफी बना देता। सुदीप अपने लैपटॉप में रास्ते भर में खींची हुई फोटो को एक साथ लगाता। सुदीप के मोबाइल पर दिन भर में मुश्किल से ही कोई कॉल आता। उधर चित्रा के पास किसी-न-किसी लिट-फेस्ट में जाने के लिए लगातार कॉल आते।

दो दिन तक घर से न निकलने के बाद सुदीप और चित्रा कनाट प्लेस खाने-पीने के लिए निकले। वहाँ पर वे आराम से घूम रहे थे कि इतने में चित्रा को कोई रिपोर्टर पहचान गया। हालाँकि, सुदीप अपना लुक इतना बदल चुका था कि उसका पहचान में आना लगभग असंभव था। सुदीप का उस रिपोर्टर से हल्का-सा झगड़ा हुआ। लेकिन इसका कोई फायदा नहीं था। दो दिन बाद अंग्रेजी न्यूज पेपर की हेड लाइन थी, "Chitra Pathak is dating an unknown man with beard."

हिंदी न्यूज पेपर की हैडलाइन थी, "चित्रा पाठक एक अनजान शख्स के साथ घूमते हुए पाई गईं।"

सुदीप ने जब यह हैडलाइन पढ़ी तो बहुत देर तक हँसता रहा। दोनों को ही इन सब चीजों से फर्क नहीं पड़ता था। उन्होंने साल भर की अधूरी बातों का कोटा पूरा किया। सुदीप यहाँ से नॉर्थ ईस्ट की तरफ रोड ट्रिप पर निकलने वाला था। एक बार के लिए चित्रा ने सोचा कि वह साथ चले लेकिन किताब की डैडलाइन की वजह से वह निकल नहीं पाई।

सुदीप ने चलने से पहले पहले चित्रा से कहा, "वैसे तो ऐसा होगा नहीं लेकिन अगर कभी शादी का सीन बना तो वो चित्रा से ही शादी करेगा।"

चित्रा ने मजाक में जवाब दिया, "अब मैं नहीं करने वाली तुमसे शादी, एक साल पहले बोलते तो कर लेती।"

जब से वे मिले थे ऐसा पहली बार हुआ था कि वे इतना लंबा एक-दूसरे के साथ रुके थे लेकिन इतना लंबा रुकने के बाद भी सुदीप को दिल्ली से जाते हुए यही लग रहा था कि वह एक ही दिन रुका।

चित्रा चाहती तो बहुत थी कि सुदीप को कुछ दिन रोक ले। सुदीप भी कुछ दिन रुकना चाहता था। चित्रा ने कभी पूछा ही नहीं। सुदीप ने कभी सोचा ही नहीं कि चित्रा के साथ ज़्यादा दिन भी गुजारे जा सकते हैं। चित्रा कहीं न कहीं सुदीप पर आकर ठहर गई थी।

"कुछ अच्छा बोलो" यह चित्रा ने सुबह कॉफी पीते हुए तब कहा था जब सुदीप बहुत देर तक बिना कुछ बोले अखबार में मुँह गड़ाए हुए था।

सुदीप पर इस बार का कोई असर नहीं हुआ था। चित्रा ने पेपर खींच लिया और बोली, "कुछ अच्छा बोलोगे या बस बोर करते रहोगे?"

"मैं तुम्हारी नॉवेल का किरदार थोड़े हूँ यार कि हमेशा कुछ न कुछ बोलते ही रहूँगा।" सुदीप ने अखबार वापिस खीचते हुए कहा।

"कुछ तो बोलो यार, प्लीज"!

“तो सुनो, कुछ रोमांटिक ट्राई करता हूँ।”

“करो।”

“तुम्हारे साथ दिल्ली खूबसूरत लगती है। दिल्ली ऐसे लगती है जैसे रात में फ्लाइट लेते हुए टिमटिमाता हुआ एक छोटा आसमान नीचे दिखता है। आसमान हमें उन सारी ख़्वाहिशों को देखने की आँखें देता है जो जमीन पर बेकाम की बातों में उलझी रहती हैं।”

“बस अब आगे कुछ मत बोलना।”

चित्रा सुदीप की ओर देखने लगी। वह इस मोमेंट को फ्रीज करने की नाकाम कोशिश कर रही थी। उस वक्त दोनों चुप थे लेकिन दिल्ली शहर, सुदीप का हाथ, चित्रा की उँगलियाँ, सब कुछ शोर कर रहे थे। यह खुशी और उदासी के बीच में एक बहुत छोटी-सी खाली जगह थी।

चित्रा सोशल मीडिया की अपनी हर तस्वीर में जितनी खुश दिखती थी, अगर उसका पाँच परसेंट भी सही में खुश होती तो सुदीप कभी उसकी जिंदगी में इतना लंबा टिका ही नहीं होता।

इसके बाद सुदीप ने चित्रा से कुछ नहीं बोला लेकिन चित्रा के जाने के बाद अपनी डायरी में नोट कर लिया कि अगले साल वह चित्रा को लिखकर सरप्राइज देगा।

उसने डायरी में लिखा:

हमें हमेशा आसमान होने का सोचना चाहिए। आसमान के उस तरफ इसीलिए कभी नहीं दिखता क्योंकि कोई यह चाहता ही नहीं कि हम अपना आसमान खोज पाएँ। मैं तुमसे सब बोल देता हूँ, तुम मुझसे सब बता देती हो, यह बात मुझे कुछ खास नहीं लगती। हम सब अपनी जिंदगी में ऐसे दो-चार लोगों से टकराते ही हैं। इतनी बातें तुम्हें बोलने का मन नहीं करता। तुम्हें पता ही है कहीं किसी पहाड़ पर किसी कमरे की खिड़की के पास वाली छोटी-सी टेबल हमारे पैर-पर-पैर रखकर जी भर सुस्ताने का इंतजार कर रही है। आखिरी बात— प्यार तुम्हें होगा नहीं क्योंकि तुम मेरे जैसी हो और यही मेरा डर है।

कुछ साल कभी-कभी एक मिनट के जैसे तेजी से फिसलते जाते हैं, यह वही साल था।

एक साल बाद

10 अक्टूबर 2019

2019 की शुरुआत में सुरभि पराशर की दूसरी किताब आई और चित्रा की भी दूसरी किताब आई। दोनों किताबों ने धूम मचा दी। इस बीच चित्रा को इंग्लिश के सबसे बड़े पेपर ने 15 दिन में एक आर्टिकल लिखने का ऑफर दिया। वह तुरंत तैयार हो गई। उसके आर्टिकल बहुत ही खतरनाक, बहुत ही कंट्रोवर्सियल होते थे।

उधर बिना किसी पीआर बिना किसी मार्केटिंग के सुरभि पराशर की किताबें बिकती ही जा रही थीं। बच्चों ने जैसे हैरी पॉटर को छोड़कर सुरभि पराशर को पढ़ना शुरू कर दिया था। सुरभि का कभी कोई इंटरव्यू नहीं आया था।

चित्रा की किताब अगर 30 लाख बिकती थी तो सुरभि की 20 लाख लेकिन यह भी बहुत अधिक था, यह जानते हुए कि सुरभि पराशर कभी किसी इवेंट में नहीं जाती। कभी कोई मार्केटिंग नहीं करती।

चित्रा ने पिछले साल 10 अक्टूबर को ही अपनी किताब अनाउंस की थी और वो किताब बहुत चली थी। वह 10 अक्टूबर को अपने लिए लकी मानती थी। चित्रा के पब्लिशर ने यह जानकारी दी थी कि उसकी किताबें लखनऊ, बनारस, इलाहाबाद में बहुत लोग पढ़ते हैं। इसलिए इन शहरों का एक टूर प्लान किया गया है।

उसने इस बार किताब के कवर को पहले लखनऊ से लॉन्च करने का सोचा। फिर उसको खयाल आया कि पिछली साल वह सुदीप को सही से टाइम नहीं दे पाई थी। उसको अक्सर सुदीप की कमी खलती थी। चित्रा से आधी दुनिया बात करना चाहती थी लेकिन किसी से भी बात करके उसको सुकून नहीं मिलता था। अपने फैंस से वह ज्यादा बात ही नहीं कर पाती। उसको लगता था जब सब लोग उसको जान जाएँगे तो लाइफ में मजा आना शुरू हो जाएगा लेकिन हुआ उसका उल्टा। वह एक अजीब-सी बेचैनी में थी।

उसने डिसाइड किया कि इस साल 10 अक्टूबर वह सुदीप के लिए बचाकर रखेगी। उसने किताब के कवर का लॉन्च 9 तारीख को बनारस के BHU (बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी) में प्लान किया।

चित्रा ने सुदीप से पूछा तो पता चला कि उसका भी मन है बनारस आने का। तय समय के हिसाब से सुदीप वहाँ पहुँच गया। 10 की सुबह उठकर दोनों अस्सी घाट पर गए। पता नहीं कहाँ से सुदीप को वही बाबा दिख गए।

वह उसके पास आए और चाय पिलाने के लिए बोला। सुदीप ने बाबा को चाय पिलाई। बाबा एक कुल्हड़ चाय पीने के बाद बोले एक कुल्हड़ और पिएँगे। सुदीप ने चाय वाले को एक कुल्हड़ और चाय पिलाने का इशारा किया।

“कुछ बेचैनी कम हुई तेरी?” बाबा ने पूछा।

सुदीप थोड़ा-सा चौंका और कुछ सोचकर बोला, “सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा।”

बाबा ने अपने झोले से राख निकालकर सुदीप के माथे पर लगा दी। चित्रा ने मना किया। सुदीप कुछ नहीं बोला। सुदीप ने पैसे देने के लिए जेब में हाथ डाला तो बाबा ने मना कर दिया।

बाबा ने नाव वाले को इशारा करके बोला कि साहब को मणिकर्णिका घाट घूमा दो। चित्रा अब बिलकुल परेशान हो चुकी थी कि बाबा यह सब क्यों बोल रहा है। इससे पहले चित्रा बाबा को जाने के लिए कहते बाबा अपने-आप उठकर चले गए। सुदीप को अब मणिकर्णिका घाट जाना था। चित्रा को नहीं जाना था। सुदीप के जिद करने पर वे नाव से वहाँ गए।

चित्रा को डर लग रहा था। उसने सुदीप को पकड़ रखा था। कई सारे विदेशी जलती हुई लाशों की तस्वीर खींच रहे थे। उनको नाव पर बैठा हुआ गाइड अपनी टूटी फूटी इंग्लिश मे समझा रहा था।

“In india this is not end of life, it’s part of life.”

बनारस में इतना ब्रह्मज्ञान सभी को था। लाशों के पीछे चाय की दुकान थी जिस पर लिखा था—

“खाली न बैठें और गाली न दें।”

वहीं दुकान पर खाली बैठे कुछ बूढ़े मोदी को, तो कुछ राहुल गाँधी को, तो कुछ योगी आदित्यनाथ को गाली दे रहे थे। उनको चाय का घूँट लेते हुए कोई फर्क नहीं पड़ रहा था कि सामने लाशें जल रही हैं। चाय की दुकान पर कुछ थके हुए लोग बैठे थे जो अपने किसी करीबी की लाश जलते हुए देख रहे थे। कुछ एक अघोरी भी वहीं आराम से घूम रहे थे जैसे लाशें नहीं खाली लकड़ियाँ जल रहीं हो।

एक परिवार के दो लोग एक साथ एक एक्सीडेंट में मरे थे। उनके रिश्तेदार लकड़ी पर दो लाशों का डिस्काउंट माँग रहे थे। लकड़ी वाला एक भी पैसा कम करने को तैयार नहीं था। एक सात साल का लड़का अपने बाप की लाश जला रहा था। वहीं पड़ोस में एक 65 साल का आदमी अपने 35 साल के लड़के की लाश जला रहा था।

ये बातें जितनी उदास थीं, मणिकर्णिका घाट पर उतनी उदास लगती नहीं थीं। अंतिम संस्कार तक की प्रक्रिया इतनी थकाने वाली होती है कि ज्यादातर लोगों के आँसू भी थककर सूख जाते हैं। एक के बाद एक लाश लाई जा रही थी। सामने की दीवार पर लिखा था—

माया मरी न मन मरा, मर मर गए शरीर— कबीर दास।

यह सब देखकर सुदीप के अंदर का कुछ हिस्सा पिघल रहा था। उसने जोर से चित्रा का हाथ पकड़ लिया। चित्रा बार-बार नाव वाले को वहाँ से जाने के लिए बोल रही थी लेकिन सुदीप ने उसको रोक दिया। कुछ देर तक पूरा घाट अपनी आँखों में उतारने के बाद सुदीप ने चित्रा से कहा, “मुझे अभी पापा से मिलना है।”

वहाँ से निकलते ही सुदीप और चित्रा लखनऊ के लिए निकल लिए। उनको लखनऊ

पहुँचने में शाम के करीब 7 बज गए। पूरे रस्ते उनकी आपस में बहुत कम बात हुई। वे आपस में इतनी बातें कर चुके थे कि उनको एक-दूसरे की खामोशी खलती नहीं थी।

पापा ने सुदीप की पसंद के हिसाब से खाना बनवा दिया था। सुदीप ने पापा और चित्रा को सामने बैठाया और टेबल पर सुरभि पराशर की किताब रखते हुए बोला, "आप दोनों से मैं कुछ छिपाना नहीं चाहता। ये मैंने लिखी है।"

चित्रा कुछ रिएक्ट करती इससे पहले ही पापा ने कहा, "मुझे लगा ही था। ये तू ही है।"

चित्रा ने चौंकते हुए पूछा, "क्यों लगा था आपको?"

सुदीप के पापा ने सुदीप की माँ की फोटो की तरफ देखते हुए कहा, "क्योंकि सुदीप की माँ का नाम सुरभि पराशर है।"

सुदीप अपने पापा से गले लगकर बच्चों जैसे रो रहा था और चित्रा उन दोनों को देखकर।

सुदीप ने पापा के गले लगे हुए ही कहा, "माँ के जाने के बाद, मैं आपसे नफरत करने लगा था। मुझे माफ कर दीजिए। मैं हमेशा आपसे भागता रहा। अपने घर से भागता रहा। अब इस बात के बोझ के साथ जी नहीं पा रहा था।"

पता नहीं सुदीप को किसने बदला था। उसके हजारों किलोमीटर के सफर ने, बाबा ने, मणिकर्णिका घाट ने या समय ने या इन सबने मिलकर कुछ भी कहना मुश्किल था।

उस रात पापा और सुदीप साथ एक कमरे में सोए। रात में पापा को बार-बार खाँसकर नींद से उठता देख सुदीप को पहली बार एहसास हुआ कि एक उम्र के बाद बिस्तर पर अकेले सोना इस दुनिया का सबसे बड़ा काम है। हर बिस्तर पर इतनी जगह होती है कि उसमें समंदर भर बेचैनी सूख जाए। सुदीप को सालों बाद पापा के साथ सोकर अपना खोया हुआ घर मिल गया था।

अगले दिन सुबह छत पर उसने बताया कि उसके पास अब भी कुछ 50 करोड़ रुपये हैं। वह सारा पैसा सुरभि पराशर फाउंडेशन के नाम कर रहा है। उसने चित्रा और अपने पापा दोनों से यह वादा लिया कि इस बात का जिक्र कभी किसी से भी न किया जाए। सुदीप ने सुरभि फाउंडेशन के बारे में सब कुछ सोच रखा था, जिसमें ऐसे बच्चों को स्कॉलरशिप दी जानी थी जो किसी भी वजह से अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर पाए थे। सुदीप ने जो किताब सुरभि पराशर के नाम से लिखी थी उसकी रॉयल्टी के पैसे भी सुरभि फाउंडेशन में ही जमा होने थे।

पापा को चित्रा के साथ अपना घर पूरा लगता था। असल में घर में माँ के न रहने से और तो जो कुछ होता हो लेकिन सारी बातचीत रुक जाती है। चित्रा इस घर का अधूरा हिस्सा हो गई थी। लड़कियाँ एक समय के बाद घर की माँ बन जाती हैं फिर पता नहीं कब घर की नींव का हिस्सा हो जाती हैं।

पापा ने दोनों से शादी के लिए पूछा तो चित्रा और सुदीप दोनों ने बताया कि कि बस अगले 10 अक्टूबर को हम शादी कर लेंगे। 4-5 दिन रुकने के बाद चित्रा वहाँ से दिल्ली चली गई। इस वादे के साथ कि महीने में एक बार वह जरूर लखनऊ आया करेगी। सुदीप भी नॉर्थ ईस्ट रोड

ट्रिप पर जाना चाहता था। वह सुरभि पराशर फाउंडेशन का काम पूरा करके जाने का प्लान कर रहा था। पेपर वर्क करने में उसको करीब-करीब नवंबर निकल गया। उसने 15 दिसंबर को गुवाहाटी के लिए निकलना फाइनल किया। इस बीच चित्रा दो बार लखनऊ आई। वह जितने दिन के लिए आती उतने दिन पापा बहुत खुश रहते।

15 दिसंबर को वह गुवाहाटी जाने के लिए निकला। उसको गोरखपुर होते हुए जाना था। लेकिन उसका मन इलाहाबाद होते हुए जाने का था क्योंकि उसके पिताजी इलाहाबाद के पढ़े थे और उसको वैसे भी इलाहाबाद में सगंम जाना ही था। वह गंगा-जमुना से ज्यादा सरस्वती नदी में इंटरेस्टेड था। ऐसा कहते हैं कि संगम की तीसरी नदी सरस्वती सबको नहीं दिखती। असल में सरस्वती नदी सबके भीतर होती है लेकिन गंगा-जमुना के चक्कर में उस नदी तक कम लोग ही पहुँच पाते हैं। सगंम में गंगा और जमुना का रंग तो अलग-अलग दिखता है लेकिन सरस्वती का रंग वही होता है जो हमारे मन में होता है।

सुदीप बहुत देर संगम में बैठकर अपने मन की सरस्वती को ढूँढ़ता रहा। सुदीप की अगली मंजिल गोरखपुर थी। लेकिन सगंम में ज्यादा देर रुकने की वजह से गोरखपुर पहुँचने में रात हो गई थी। दिसम्बर के मौसम में अच्छा-खासा कोहरा था। इसलिए आदत के मुताबिक वह अँधेरा होने से थोड़ा-सा पहले गोरखपुर के रास्ते बस्ती शहर से थोड़ा-सा आगे एक गाँव में घुस गया। उसने पगडंडी में घुसते हुए ध्यान नहीं दिया वह कई किलोमीटर अंदर आ चुका था। कोहरे की वजह से चलना मुश्किल होता जा रहा था। जिस गाँव में वह रुका, वह बहुत पिछड़ा था। वहाँ बिजली थी भी तो आ नहीं रही थी।

इस गाँव में लालटेन जलाकर पंचायत चल रही थी। उसने शुरू में पंचायत पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। गाँव के सभी लोग पंचायत में थे। उसने कभी पंचायत होते देखी भी नहीं थी। इसलिए एक कुएँ के पास अपनी कार खड़ी करके वह पंचायत देखने पहुँच गया।

पंचायत में अच्छा-खासा शोर-शराबा, गाली-गलौज चल रही थी। माहौल में अच्छी-खासी गर्मी थी। उसको वहाँ रुकना ठीक नहीं लगा लेकिन वहाँ कोने में करीब बीस साल की एक लड़की को रोता देखकर वह रुक गया। उस लड़की के साथ उसके माता-पिता भी नीचे बैठे हुए थे जो बार-बार पंचों के पैर छूकर कुछ विनती कर रहे थे।

अपने कपड़ों से वह कहीं से भी गाँव वाला लगता नहीं था। वह पीछे जाकर बैठ गया। गाँव वाले भोजपुरी में बात कर रहे थे। उसने एक लड़के से समझना चाहा कि आखिर हुआ क्या है? यह लड़की इतना रो क्यों रही है?

लड़के ने बताया कि ठाकुर साहब के लड़के ने इस लड़की के साथ जबरदस्ती की है। लड़की छोटी जात की है। लड़की अब पेट से है। पंचायत ने फैसला लिया है कि ठाकुर साहब इस लड़की को 11 हजार रुपये दें और पूरे गाँव को खाना खिला दें तो बरी हो जाएँगे।

लड़की वाले इसलिए रो रहे हैं कि उनकी बिन ब्याही माँ बनी लड़की से अब कोई शादी नहीं करेगा। लड़की के परिवार वाले पैसे बढ़वाने के लिए गिड़गिड़ा रहे हैं।

सुदीप ने यह सुना तो उसके पैर से नीचे से जमीन सरक गई। उसको अपने अकाउंट में पड़े हुए पैसों से इतनी नफरत कभी नहीं हुई थी। वह अपने-आप को कंट्रोल नहीं कर पाया। उसने सामने जाकर बोल दिया कि वह पत्रकार है। उसको लगा था कि वह इस परिवार को पुलिस के पास ले जाएगा।

सुदीप के अपने-आप को पत्रकार बताते ही पूरी पंचायत में खलबली मच गई। सुदीप को अंदाजा नहीं था कि पंचायत जब खतरनाक होती है तो कितनी खतरनाक होती है। पंचों के इशारे पर दो-तीन लड़के उसको पकड़ने के लिए भागे। कुछ ही मिनटों में दो-तीन लड़के एक बड़ी भीड़ में बदल गए।

सुदीप किसी तरह से भागकर अपनी कार तक पहुँचा। उसने अपनी कार भगाई। कोहरा अंधेरे में बुरी तरीके से मिल चुका था। इधर कुछ लोग मोटरसाइकिल से उसका पीछा करने लगे। एक-दो पत्थर उसकी कार का शीशा तोड़ चुके थे।

सुदीप जितनी तेज कार भगा सकता था, भगा रहा था। हाईवे से आती हुई हॉर्न की आवाज से उसको अंदाजा लगा कि हाईवे अब ज्यादा दूर नहीं है। एक-दो पत्थर उसके बिलकुल पास से होकर गुजर चुके थे।

सुदीप जिस वक्त पगडंडी से बाहर निकला ठीक उसी समय एक ट्रक ने उसको टक्कर मार दी। ट्रक वाले की गलती नहीं थी। कोहरे में किसी को भी धोखा हो सकता था। गाँव वाले वापिस लौट गए, जैसे कभी कुछ हुआ ही नहीं था। गाँव में ठाकुर साहब ने गाँव भर को खिलाने की तैयारी शुरू कर दी थी।

ट्रक वाला डर के मारे भाग गया। कार वहीं कोने में बहुत देर तक पड़ी रही। रात के करीब 10 बजे पुलिस को गश्त में एक्सीडेंट के बारे में पता चला। सुदीप के पापा को लखनऊ में सूचना दी गई। पापा ने तुरंत ही चित्रा को फोन करके बताया। वे बहुत ज्यादा घबराए हुए थे। सुदीप के पापा का एक स्टूडेंट ही गोरखपुर का डीएम था। उसने बिना एक भी मिनट गँवाए सुदीप का इलाज शुरू करवा दिया।

टक्कर इतनी खतरनाक थी कि कार पूरी तरह से पिचक चुकी थी। सुदीप के पापा और चित्रा दोनों शाम तक हॉस्पिटल पहुँच चुके थे। पापा का रोना थम ही नहीं रहा था। डॉक्टर कुछ भी नहीं बता रहे थे।

16 दिसंबर की सुबह सुदीप इस दुनिया से आजाद हो गया।

जब कोई मरता है तो वह अकेले नहीं मरता अपने साथ पूरी दुनिया लेकर मरता है। चित्रा और पापा के लिए पूरी दुनिया खत्म हो चुकी थी। सुदीप की लाश को बनारस लाया गया। बनारस आदमी कभी-न-कभी पहुँच ही जाता है। सुदीप की लाश के पास बहुत लोग थे लेकिन पता नहीं कहाँ से वह बाबा सुदीप की लाश के चलने के दरम्यान पूरा वक्त वहीं पर था। सुदीप की मौत गुमनाम मौत थी। वह शायद चाहता भी यही था। गुमनाम मरना हमारे समय की सबसे बड़ी लग्जरी है। किसी को कभी पता नहीं चला कि गाँव में उस दिन क्या हुआ था। जरूरी नहीं

कि भीड़ घेरकर ही मारे। भीड़ कई बार चुपचाप भी मार देती है।

जनवरी में सुदीप का वकील मुंबई से लखनऊ आया। उसने रुपये का हिसाब-किताब दिया। सुदीप की इच्छा सुदीप के पापा सुन ही नहीं पाए। सुदीप के पापा अनाथ हो चुके थे। सुदीप की विल में उसके सारे पासवर्ड थे। चित्रा ने वहीं लखनऊ में रहने का फैसला किया। सुदीप ने अपनी विल में यह भी लिखा था कि अगर उसको कुछ हो जाए तो उसकी किताब के सारे राइट्स चित्रा के पास चले जाएँगे।

चित्रा ने लिखना छोड़ दिया। पापा को जब भी उसकी याद आती तो वह सुदीप के कमरे की एक-एक चीज निकालकर उसको दुबारा वहीं रख देते। ऐसे सफाई करते हुए उनको एक फाइल में सुदीप यानी की सुरभि पराशर की तीसरी किताब के कुछ पन्ने मिले।

चित्रा ने जब पब्लिशर से बात की तो पता चला कि सुदीप ने आधी किताब ईमेल कर दी थी और बची हुई किताब वो जून में देने वाला था। किताब की लॉन्च डेट सुदीप ने 10 अक्टूबर 2020 रखने के लिए ईमेल किया था।

चित्रा ने जब उन पन्नों को मिलाया तो पता जला कि ये उसी तीसरी किताब का हिस्सा हैं। चित्रा ने पापा को इस बात के लिए समझा भी लिया कि सुदीप की अधूरी किताब ही छपने भेज दी जाए। पापा भी इसके लिए तैयार थे। चित्रा का मन था कि सुदीप की आखिरी किताब में उसके बारे में सब कुछ लिखा जाए।

चित्रा ने लिखना छोड़ दिया था। वह अब लखनऊ में ही सुदीप के पापा के साथ रहने लगी थी। पापा जब चित्रा को देखते तो उनको सुदीप की और याद आती। उन्होंने एक दिन चित्रा से कहा, “बेटा तुम यहाँ से जा सकती हो। मेरे चक्कर में तुम अपनी लाइफ वेस्ट मत करो।”

चित्रा को सुनकर थोड़ा बुरा भी लगा। उसने पापा को समझाया भी कि उसको कोई दिक्कत नहीं है और वह कहीं नहीं जाएगी। इस पर पापा ने यह शर्त रखी कि अगर तुम नहीं जाओगी तो तुमको वैसे ही रहना होगा जैसेकि सुदीप हमारे साथ हो। यह बोलकर पापा की और यह सुनकर चित्रा की आँखें गीली हो गईं। चित्रा ने कहा, “पापा, नहीं हो पाएगा मुझसे।”

पापा नहीं माने। वह बिलकुल जिद पर अड़ गए कि वह लिखना न छोड़े। सुदीप के पापा ने चित्रा को समझया कि सुदीप की माँ के न रहने पर वह सबसे ज्यादा उनसे लड़ना मिस करते हैं। पापा ने पुराने सारे कैसेट रखे हुए थे जो सुदीप की माँ को पसंद थे।

चित्रा ने पापा की बात मानकर अपनी जिंदगी को आसान करना शुरू किया। उसने लिखना शुरू किया और सुदीप की बची हुई किताब पूरी कर ली। साल 2019 से चित्रा को लाखों शिकायतें थीं। लेकिन 10 अक्टूबर को वह सुदीप के साथ थी, उस एक दिन की शिकायत नहीं थी।

एक साल बाद

10 अक्टूबर 2020, प्रेस कॉन्फ्रेंस, दिल्ली

प्रेस कॉन्फ्रेंस में चित्रा पाठक के इस खुलासे से कि उसने सुदीप पराशर की किताब लिखी है सब लोग सकते में आ गए। चित्रा ने अपने बैग से सुदीप यानी कि सुरभि पराशर की तीसरी किताब सबको दिखाई। यह भी बताया कि किताब अब से एक हफ्ते बाद मार्केट में आ जाएगी। इस किताब पर सुरभि पराशर का नाम तो होगा ही साथ में सुदीप यादव भी लिखा होगा। सुदीप की पुरानी किताबों के अगले प्रिंट पर सुरभि पराशर के साथ सुदीप का नाम आ जाएगा।

चित्रा रुकी नहीं। उसने आगे यह बताया कि चूँकि सुदीप कुछ भी छोटा नहीं करता था। इसलिए सुरभि फाउंडेशन हर साल 5 नए लेखकों को स्कॉलरशिप देगी। जिसका हर साल नए लेखक को 10 लाख रुपये मिलेंगे।

लोगों के मन में अब भी हजारों सवाल थे। कोई चित्रा और सुदीप के रिश्ते के बारे में पूछ रहा था तो कोई सुदीप के बारे में।

सैकड़ों सवालों को वैसे ही छोड़कर चित्रा प्रेस कॉन्फ्रेंस से निकलकर सीधे एयरपोर्ट चली गई। चित्रा का पीछा एयरपोर्ट तक कई रिपोर्टरों ने किया। वहाँ से उसने बनारस की फ्लाइट ली।

10 अक्टूबर 2020
शाम 5 बजे, अस्सी घाट बनारस

चित्रा बनारस की घाट पर जाकर अकेले बैठ गई। सूरज डूबने को है। बनारस को सोने में अभी वक्त है। नाव अकेली है। चित्रा अकेली है। बनारस अकेला है। बनारस की हर एक गली अकेली है। बनारस का हर एक घाट अकेला है। चित्रा को वही नाव वाला दिखा जो दस साल पहले मिला था और पिछले साल सुदीप के साथ भी मिला था। पूरा घाट बिलकुल सुनसान देखकर चित्रा भी चौंकी कि वह सपना देख रही है या सच। वह उस नाव वाले को पास बुलाकर नाव में बैठी।

नाव वाले ने पूछा, “पिछली बार आपके साथ वो साहब आए थे न जिन्होंने बाबा को रुपये दे दिए। वो नहीं आए?”

चित्रा ने इसका कोई जवाब नहीं दिया।

नाव चलना शुरू ही हुई थी कि इतने में वही बाबा आकर नाव में बैठ गए, जिसको सुदीप ने पैसे दिए थे। नाव वाले ने बाबा को भगाने की कोशिश भी की लेकिन चित्रा ने ऐसा करने से मना कर दिया।

बाबा ने चित्रा को देखकर कुछ नहीं कहा। वह बस आकर बैठ गए। चित्रा नाव से आगे

बढ़ती जा रही थी और अपने पीछे वह सारे रास्ते छोड़ती जा रही थी, जहाँ-जहाँ वह भटकी थी। नाव पर बैठा मल्लाह कुछ बात करने की कोशिश कर रहा है लेकिन चित्रा को कुछ सुनाई नहीं पड़ रहा था।

बाबा कुछ बोले जा रहे थे। जब उन्होंने देखा कि चित्रा उनकी बात पर ध्यान नहीं दे रही तो वह चित्रा को करीब-करीब झकझोरते हुए बोले, "महादेव भोलेनाथ को अर्धनारीश्वर बोलते हैं, जानती हो?"

चित्रा चुप रही लेकिन उसने बाबा की आँख में देखा। उसको बाबा की आँख देखकर लगा कि ये बाबा की नहीं सुदीप की आँखें हैं। चित्रा को कुछ समझ नहीं आ रहा था। वह उन आँखों में देखती रही। बाबा ने बोलना शुरू किया।

"हर आदमी में एक औरत और हर औरत में एक आदमी होता है। हर आदमी अपने अंदर की अधूरी औरत को जिंदगी भर बाहर ढूँढ़ता रहता है लेकिन वो औरत बड़ी मुश्किल से मिलती है। वैसे ही हर औरत अपने अंदर का अधूरा आदमी ढूँढ़ती रहती है लेकिन वो अधूरा आदमी बड़ी मुश्किल से मिलता है। और कई बार वो अधूरा मिलता ही नहीं। लेकिन अगर एक बार अधूरा हिस्सा मिल जाए तो आदमी मरकर भी नहीं खोता। तू ध्यान से देख वो कहीं नहीं गया तेरे अंदर है। आधी तू आधा वो।"

प्रस्तावना-2

किताब के इस मोड़ पर दुबारा प्रस्तावना लाने के लिए मैं माफी चाहता हूँ और मैं सभी पढ़ने वालों से बार-बार आगे-पीछे ले जाने के लिए माफी भी माँगता हूँ, लेकिन मैं क्या करूँ? जैसे किसी खाली छुट्टी के दिन बैठकर हमें अपनी खुद की कहानी सीधी-सीधी नजर नहीं आती वैसे ही मुझे यह कहानी मिली। जैसे-जैसे जो हिस्सा याद आ रहा है वैसे ही सुना रहा हूँ। जैसे जिंदगी के जिए हुए हिस्सों में मिलवाट नहीं की जा सकती, वैसे ही मैं कहानी में मिलावट नहीं करना चाहता। हो सकता है कि मेरे ऐसा करने से कहानी कमजोर होती हो लेकिन मुझे परवाह नहीं क्योंकि परवाह करके न कहानियाँ लिखी जा सकती हैं और न ही कहानियों को जिया सकता है। मैं कहानियाँ लिखने से ज्यादा उनको जीने में विश्वास करता हूँ। इसलिए अपने घटिया लिखने का दोष मैं अपने पूरे होशो-हवास में अपनी जिंदगी को देता हूँ। मलाल बस यही है कि मैं जिंदगी को बस उतना ही पकड़ पाया हूँ जितना कि एक मुट्ठी बंद करके कोई हवा पकड़ पाता है।

कहानी का अंत पकड़ने के लिए कहानी को वहाँ से पकड़ना पड़ता है जहाँ से कहानी शुरू हुई थी। सच पूछिए तो यह कहानी हुई ही न होती अगर चित्रा और सुदीप अगले दिन सुबह मिले नहीं होते। रात में मिलकर किसी को भूल जाना सुदीप के लिए नया नहीं था और चित्रा एक

कहानी लिखने के बाद यह भुला देती थी कि कहानी के किरदार से वह सच में मिल चुकी है। इसलिए इस कहानी का सिरा सही से पकड़ने के लिए 10 साल पहले चलना पड़ेगा। ठीक उस दिन जिस दिन चित्रा और सुदीप पहली बार नाव में बैठे थे।

10 अक्टूबर 2010, अस्सी घाट बनारस

“मैं चाहती हूँ कि मुझे हर कोई पहचाने। मेरे अपने कमाए हुए खूब पैसे हों। मेरी किताबें लाखों में बिकें। हर जगह मुझे बोलने के लिए बुलाया जाए। न्यूज पेपर में मेरी फोटो आए। न्यूज रूम में मुझे बुलाया जाए। इन शॉर्ट मुझे कोई अवॉइड नहीं कर पाए।” चित्रा ने अपने फ्यूचर प्लान बताते हुए कहा।

“तो चित्रा मैडम रिच एंड फेमस पेज-3 सेलेब्रिटी होना चाहती हैं। इसमें रोने की क्या बात है?” सुदीप ने चित्रा को बात सुनकर मजाक उड़ने वाले अंदाज में जवाब दिया।

“मुझे लगता है कि ये सब कुछ नहीं हो पाएगा। मैं पिछले तीन साल से एक किताब पूरी नहीं कर पाई।”

“ये सब कुछ हो गया तब ज्यादा परेशानी होगी। लेकिन वो तुम्हें अभी समझ नहीं आएगा।”

सुदीप ने कहा, “जाओ बच्चा वरदान देते हैं तुम्हें, तुम एक दिन हिंदुस्तान की सबसे बड़ी लेखिका बनोगी। बड़ी राइटर हो जाओगी तो भूल तो नहीं जाओगी न?”

“वेल, बाद में मैं तुम्हें पहचानूँगी या नहीं। अभी से इस बारे में कुछ कह नहीं सकती।”

“देखना, एक दिन तुम्हें सब मिल जाएगा। पैसा नाम सब कुछ। उस दिन तुम मेरी जगह को अपने-आप को रखकर दुनिया देख पाओगी। लाइफ की ट्रैजिडी ये नहीं है कि ये नहीं मिला वो नहीं मिला। यहाँ मिलता सबको सब कुछ है बस टाइम से नहीं मिलता।”

10 अक्टूबर 2020
शाम 5 बजे, अस्सी घाट बनारस

चित्रा को वो सारी बातें याद आ रहीं थी। उसको यह नहीं लग रहा था कि सुदीप नहीं है। वह समझ ही नहीं पा रही थी सच क्या है और सपना क्या है। कुछ दिन गड्डमड्ड हो जाते हैं। चित्रा के लिए यह वही दिन था। सुदीप उसको सामने नाव में बैठा हुआ दिख रहा था।

चित्रा को मलाल यह नहीं है कि सुदीप नहीं है। वह जिंदा भी था तो कौन-सा वे मिलते थे। लेकिन केवल यह तसल्ली कि वह दूसरा है अभी इस दुनिया में, क्या इतना ही काफी नहीं होता अपने-आप को समझाने के लिए। एक आदमी के न होने से पूरी दुनिया कैसी खाली हो सकती है। ऐसी बातें चित्रा ने अपनी किताबों में न जाने कितनी बार लिखी होगी, लेकिन ऐसा होता हुए देखना इतना आसान नहीं था जितना कि लिखना।

चित्रा को अपनी कहानियों का अंत लिखते-लिखते इतना तो पता ही चल गया था कि अकले हो जाना ही इस दुनिया की आखिरी सच्चाई है। भले आप भीड़ में मरें या अपने घर के बिस्तर पर, हर आदमी मरते वक्त अकेला ही होता है। इस दुनिया के बाद किसी दूसरी दुनिया की उम्मीद शायद हम सबकी आखिरी उम्मीद होती हो। ऐसी दुनिया जोकि हम बना सकते थे। ऐसी दुनिया जो हमें जिंदगी भर सपनों में दिखती थी। इसलिए शायद हम अपने सपने भूल जाते हैं क्योंकि अगर सपने याद रहें तो हमारे लिए यह दुनिया झेलना असंभव हो जाए।

इसके बाद पूरे रास्ते बाबा ने कोई बात नहीं की। नदी पार होने के बाद बाबा ने वैसे ही रेत उठकर हवा में उड़ा दी। चित्रा ने आगे कभी कोई अगली किताब लिखी या नहीं लिखी इसका फैसला मैं आप पर छोड़ता हूँ। सुदीप होता तो वह यही चाहता कि वह किताबें लिखे और किताब पर स्टाइल में साइन करे 'With love luck & light, Chitra'। सुदीप के पास जाने से पहले इतना मौका था ही नहीं कि वह कोई वादा ले पाए कि चित्रा कभी लिखना नहीं छोड़ेगी। लेकिन उन दोनों के बीच ऐसा कुछ था ही कहाँ जिसमें कोई वादा हो, प्यार हो, शिकवा हो या शिकायत हो।

हर वह लड़की जो चित्रा हो सकती थी वह किताब नहीं लिखती। हर वह लड़का जो सुदीप हो सकता था वह गुमनामी में जीना और मरना नहीं चाहता। दुनिया वैसी उदासी नहीं चाहती। जिंदगी अकेलापन नहीं चाहती। कोई वैसा कुछ नहीं चाहता जैसा होता है।

चित्रा और सुदीप जैसे हम शापित लोग हैं। हमारा नाम, पता, पहचान, शक्ल, जिंदगी सब कुछ शाप है।

मैं भी कहानी ऐसे खत्म नहीं करना चाहता लेकिन मेरे हाथ से ये दोनों बहुत पहले ही छूट गए थे। मैंने सुदीप और चित्रा की कहानी क्यों लिखी, इसका कोई जवाब नहीं है सिवाय इसके कि सुदीप और चित्रा के बीच ऐसा रिश्ता था जिसका नाम प्यार या दोस्ती रखा जा सकता हो। मैं इतना अच्छा नहीं लिखता कि इस रिश्ते का कोई नाम गढ़ सकूँ। या मैं कोई किताब या फिल्म का नाम बता सकूँ कि चित्रा और सुदीप उस कहानी के किरदार जैसे थे। हम सब के अंदर का एक हिस्सा चित्रा और सुदीप जैसा है ही, जो किसी के जैसा नहीं है। जो किसी के जैसे जीना नहीं चाहते थे।

सुदीप को मैंने मारा नहीं, उसको मरना ही था। चित्रा को मैंने वो सब कुछ दिया जो वह चाहती थी सिर्फ इसलिए ताकि आपको बता पाऊँ कि सब कुछ मिल जाने से कुछ भी नहीं

मिलता। हम जिस कहानी का हिस्सा हैं उसे शायद कोई लेखक कभी मिले ही नहीं। यही शायद इस दुनिया की सबसे बड़ी ट्रैजिडी है कि हमारी कहानी सुनाने वाला कोई होगा ही नहीं। कोई कभी जान ही नहीं पाएगा कि हमारे मन में आखिर था क्या। हम थे कौन ये सवाल हमारे साथ ही चला जाएगा। कुछ लोग बोल देंगे कि बड़े अच्छे आदमी थे या बड़ी अच्छी औरत थी, बस। बस सबकी कहानी इतनी ही है।

मैं इतनी बातें क्यों लिख रहा हूँ। हम इतना उदास क्यों हैं। जिंदगी ऐसी क्यों है। सब कुछ इतना खराब क्यों हैं। दुनिया के बाद क्या है। इतना भटकने का हासिल क्या है। इन सवालों के साथ ही मुझे अब रुकना पड़ेगा क्योंकि चित्रा अकेली है। वह थोड़ी देर चुप रहना चाहती है। मैं थोड़ी देर चित्रा के साथ चुप हो जाना चाहता हूँ। जितनी देर वह चुप है, उतनी देर सुदीप वहीं उसके पास है। ऐसे भी दुनिया में इतना शोर है कि किसी को कहानी सुना पाना अपना हाल बताने जैसा है। पूछता हर कोई है, सुनना कोई नहीं चाहता। सुदीप के पास चित्रा थी, चित्रा के पास सुदीप।

कुछ रिश्ते खुशबू जैसे होते हैं। बाँधते ही बासी हो जाते हैं। चित्रा के लिए सुदीप बासी न हो जाए, इसलिए उनको बार-बार मिलना और बिछड़ना पड़ा। मैं जान-बूझकर यह कहानी अधूरी छोड़ रहा हूँ ताकि आप अपने हिस्से की वो कहानी पूरी कर पाएँ जो कभी किसी कागज पर नहीं छपेगी।

कुछ कहानियाँ लेखक पूरी नहीं करना चाहता क्योंकि वैसी कहानियाँ पूरी होते ही दिल-दिमाग-उँगलियों से हट जाती हैं। जब तक कहानी अधूरी रहती है तब तक लेखक और पाठक की उँगलियाँ उन्हें बार-बार छूने के लिए बेचैन होती रहती हैं।

क्या आप भी लेखक बनने के ख्वाब देख रहे हैं?

तो आपका काम हम आसान कर देते हैं। matrubharti.com भारत के श्रेष्ठ डिजिटल प्लेटफोर्म में से एक है जो भारतीय भाषाओं में साहित्य लिखने और पढ़ने वालों के लिए कुंभ मेले जैसा है। यहाँ आप वेबसाइट और मोबाइल ऐप के माध्यम से जुड़कर अपनी रचनाएँ प्रकशित कर सकते हैं और साथ ही अनेक लेखकों की रचनाओं को एक ही स्थान पर पढ़ सकते हैं। भारतीय लेखकों और पाठकों को एक स्थान से जोड़कर matrubharti.com अब एक बहुत बड़ा समुदाय बन चुका है, जहाँ भारतीय मूल्यों और संस्कृति की बात कहानी व कविता स्वरूप में प्रकाशित होती है। अगर आप हिंदी में कहानियाँ व उपन्यास लिख रहे हैं और एक विशाल पाठक वर्ग तक थोड़े समय में पहुँचना चाहते हैं तो matrubharti.com आपके लिए श्रेष्ठ स्थान है। ज्यादा जानकारी आपको मातृभारती की वेबसाइट पर मिलेगी या फिर आप info@matrubharti.com पर ईमेल भी कर सकते हैं।

हमें आपकी ज़रूरत है!

हिंद युग्म ने बीते वर्षों में नवलेखकों को यथोचित अवसर देने का प्रयास किया है और भविष्य में भी प्रयासरत रहेगा।

हम समझते हैं कि प्राप्त पांडुलिपियों के अलावा भी ऐसे लेखक हैं जो संकोच या समयाभाववश पांडुलिपि नहीं भेजते फलस्वरूप प्रकाशक और पाठक अच्छे लेखन से महरूम रह जाते हैं।

हिंद युग्म ऐसे ही लेखकों से दस वाक्यों में उनकी कहानी आमंत्रित करता है। नीचे बॉक्स में अपनी कहानी लिखें अथवा सिर्फ़ यह लिखें कि आपकी कहानी में विशेष क्या है जिसे प्रकाशित होना ही चाहिए, और sampadak@hindyugm.com पर इस पृष्ठ की तस्वीर खींचकर भेज दें। चयनित आवेदकों से हिंद युग्म स्वयं संपर्क करेगा।

* यह आवेदन कोविड है। इसका एक बार ही प्रयोग किया जा सकता है।